प्रभात

अंदर के पन्नों में ....

- नए वन कानून पर 5
- लोहण्डीगुड़ा की जनता के संघर्ष पर 7
- तिब्बत की जनता के आन्दोलन पर 11
- गड़चिरोली जनता पर सरकारी दमन 12
- माटवाड़ा 'राहत' शिविर का सच 14
- शहीदों की जीवनियां 18
- जन अदालतों की खबरें 38
- पीएलजीए की लड़ाइयों की खबरें 42

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का तिमाही मुख-पत्र

वर्ष-21 अंक-1&2 जनवरी-जून 2008 सहयोग राशि-10 रुपए

नयागढ़ आपरेशन ने जोड़ा इतिहास में नया पन्ना!

चलायमान युद्ध की ओर पीएलजीए के बढ़ते कदम!!

नयागढ़ से जब्त कुछ हथियारों का जखीरा

भाकपा (माओवादी) की केन्द्रीय कमेटी सदस्या कॉमरेड अनुराधा (जानकी दीदी) की शहादत जिन्दाबाद!

नयागढ़ आपरेशन - एक नई मिसाल!

15 फरवरी 2008 का दिन भारतीय क्रांति के इतिहास में लाल अक्षरों में लिखा जाएगा। कोरापुट, गिरीडीह की कड़ी में अब एक और नाम जुड़ गया, वह है 'नयागढ़'। नयागढ़ भारतीय क्रांति के इतिहास में एक नया नाम ही नहीं, भारत में माओवादी जनयुद्ध के विकासक्रम में जुड़ा एक नया आयाम भी है। और कई नए अनुभवों का स्रोत भी। उस दिन, रात के करीब सवा दस बज चुके थे जब जन मुक्ति गुरिल्ला सेना के कुल 175 लाल योद्धाओं ने हमारे संघर्ष इलाके से काफी दूर जाकर ओडिशा के नयागढ़ जिले में एक साथ छह लक्ष्यों पर हमला बोल दिया। इनमें नयागढ़ शहर के बीचोंबीच स्थित पुलिस ट्रेनिंग स्कूल (जिसमें करीब 400 पुलिस वाले रहते हैं) और जिला शस्त्रागार (जिसमें करीब 100 पुलिस वालों के रहने का अनुमान था) - ये दोनों इस 'नयागढ़ आपरेशन' के मुख्य निशाने थे। बाकी कुछ थानों और चौकियों को इसलिए निशाना बनाया गया था ताकि वापसी के दौरान पीएलजीए बलों को रास्ते में कोई बाधा न पहुंचने पाए। इसके अलावा दुश्मन के आने के कई सम्भावित रास्तों पर ऐम्बुश भी लगा दिए गए। जिला मुख्यालय नयागढ़ ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से महज 84 किलोमीटर दूर है। यह दुश्मन के गढ़ में जाकर दी गई चुनौती थी।

'आपरेशन रोप-वे'

इस आपरेशन के कई राजनीतिक व फौजी लक्ष्य थे : इनमें मुख्य था, पार्टी की एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस द्वारा निर्देशित केन्द्रीय कार्यभार को पूरा करने की दिशा में पीएलजीए की शस्त्रास्त्र सम्पत्ति को बढ़ाना। साथ ही साथ, ओडिशा, बंगाल, आदि जगहों में विशेष आर्थिक क्षेत्रों के शिकार हो रहे अदिवासी और गैर-आदिवासी किसानों को हथियारबन्द कर प्रतिरोध-संघर्ष को तेज करने में सहायता पहुंचाने का लक्ष्य भी था।

पीएलजीए के लाल योद्धाओं ने निर्धारित सभी ठिकानों पर न सिर्फ एक साथ हमला बोला, बल्कि 2 से 20 मिनटों के अंदर ही सभी जगहों पर अपना कब्जा भी जमाया। जिन पुलिस वालों ने प्रतिरोध करने की कोशिश की उन्हें मार डाला गया। कुल 15 को मौत के घाट उतार दिया गया जिनमें भाजपा का एक गुण्डा भी शामिल है। 10 घायल हुए। निहत्थे और हथियार डालने वालों को हानि नहीं पहुंचाई गई। 'आपरेशन रोप-वे' के नाम से चलाए

ऐतिहासिक नयागढ़ आपरेशन की सफलता में चार चांद लगाने वाले कॉमरेड्स वीरांगना रामबती और वीर सैनिक इकबाल को लाल-लाल सलाम!

रामबती का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन के तोयनार (मोरमेलपारा) के एक मध्यम वर्गीय आदिवासी परिवार में हुआ था। उनके पिता गांव में सरपंच थे। शुरू में यह गांव क्रांतिकारी गतिविधियों से दूर था। बाद में एक संगठक को नियुक्त करने के बाद रामबती पार्टी के संपर्क में आ गईं। वह 2003 में पीएलजीए में भर्ती हुई। एक साल तक मिरतुल एलओएस में काम किया। 2004 में पश्चिम बस्तर पार्टी ने उन्हें पलटन-6 में तबादले का प्रस्ताव रखा तो कॉ. रामबती खुशी से तैयार हो गईं। जबसे वह पीएलजीए में सदस्य बन गई तबसे इन पांच सालों में उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा, न घर वालों से ही मिला।

नयागढ़ शहीद कॉ. रामबती

2005 में फासीवादी सलवा जुडूम के शुरू होने के बाद सैकड़ों परिवारों की तरह कॉमरेड रामबती के परिवार में भी बिखराव आया। उसका सगा भाई रमेश सलवा जुडूम में शामिल होकर वहां की जनता का बहुत बड़ा दुश्मन बन गया। एक शब्द में कहा जाए तो तोयनार और उसके आसपास के गांवों में रमेश आतंक व अत्याचार का पर्याय बन गया। पार्टी को उसे मारने का फैसला लेना पड़ा। यह रामबती के लिए कठिन परीक्षा से कम नहीं थी। लेकिन, 'खून के रिश्ते से भी बड़ा है वर्गीय रिश्ता' इस कम्युनिस्ट उसूल पर मजबूती से कायम रहकर कॉमरेड रामबती ने पार्टी के फैसले का बेहिचक समर्थन किया। सलवा जुडूम का पलटा जवाब देने के लिए पार्टी द्वारा अपनाए गए टीसीओसी में कॉमरेड रामबती ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

प्रधान बलों की सदस्या होने के नाते 2006 से कॉमरेड रामबती को ओडिशा राज्य में ही रहना पड़ा जहां से आखिर वह हमेशा के लिए हमसे विदाई ले गईं। मोटू और कलिमेला इलाकों में वह जनता की चहेती बन गईं। लड़ाकूपन, अनुशासनप्रियता और नेतृत्वकारी गुणों से लैस कॉमरेड रामबती को पार्टी ने पलटन पार्टी सदस्या के रूप में पदोन्नत किया।

18 दिसम्बर 2007 में गुड़ारी के पास आंध्र के ग्रेहाउण्ड्स ने नयागढ़ आपरेशन के लिए जुटे गुरिल्लों के कैम्प पर हमला किया था। उसमें कॉमरेड कमला शहीद हुई थीं। तब कॉमरेड रामबती ने गजब का हौसला दिखाते हुए 20 गज की दूरी से दौड़ लगाकर शहीद कमला के शव के पास पहुंचीं और उनकी एसएलआर उठा लाई थीं। कॉमरेड रामबती न सिर्फ 15 फरवरी 2008 के ऐतिहासिक नयागढ़ आपरेशन में शामिल थीं, बल्कि 16 फरवरी की शौर्यपूर्ण गोसामा लड़ाई में भी वह शेरनी की तरह लड़ी थीं। इस लड़ाई को कामयाबी दिलाने के लिए उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। एक और कॉमरेड इकबाल के साथ कॉमरेड रामबती ने लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त किया। (कॉमरेड इकबाल की जीवनी हमें नहीं मिल पाई है। - सम्पादक)। हम यह बात कभी नहीं भूलेंगे कि ऐतिहासिक नयागढ़ आपरेशन की बदौलत आज हमारे कंधें पर आ चुकी हर रायफल की चमक में नयागढ़ वीर शहीदों के खून की लालिमा भी चढ़ी हुई है जो हमें हमेशा ऐसी कई लड़ाइयों के लिए प्रेरित करती रहेगी। ✯

गए इस नयागढ़ आपरेशन के जरिए पीएलजीए ने कुल 1200 हथियार और 1 लाख 75 हजार गोलियां छीन लीं। जब्त हथियारों में ज्यादातर अत्याधुनिक हैं।

अनुमान से कहीं ज्यादा हथियार होने के कारण साथ लाई गाड़ियां कम पड़ीं तो पुलिस की गाड़ियों पर कब्जा कर उनमें भी हथियार भरकर लाए गए। हथियारों को ट्रकों और गाड़ियों में लादकर चंद घण्टों बाद वहां से सुरक्षित लौट गए।

कुछ अनिवार्य कारणों से तय समय पर हमला न कर पाने से और रास्ते में आई कुछ तकनीकी दिक्कतों के कारण तयशुदा जगह पर लौट आने तक सुबह हो चुकी थी। इससे दुश्मन को पीएलजीए बलों की वापसी की जगह (गोसामा जंगल) का पता चल गया। पीएलजीए के योद्धा भी इस स्थिति का सामना करने के लिए तैयार हो गए। कुछ कॉमरेड हथियारों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचाने का काम कर रहे थे, तो कुछ टुकड़ियां दुश्मन का मुकाबला करने के लिए मुस्तैदी से तैनात हो गईं।

गोसामा लड़ाई

16 तारीख की सुबह 9 बजे तक दुश्मन आ ही गया। लेकिन पीएलजीए की ऐम्बुश पार्टी के अचानक हमले से घबराकर कुछ ही मिनटों में वह दुम दबाकर भाग गया। चूंकि हथियारों और गोलियों की मात्रा बहुत ज्यादा थी, इसलिए उस जगह को तुरन्त खाली भी नहीं किया जा सकता था। और पीएलजीए की टुकड़ियां वहीं डट गईं ताकि दुश्मन दोबारा आने पर जवाबी हमला कर उसे कड़ा सबक सिखाया जा सके। शाम के 4 बजे ओडिशा ग्रेहाउण्ड्स दस्ते के साथ-साथ करीब 120 की संख्या में दुश्मन ने फिर एक बार पीएलजीए के ठिकाने पर धावा बोलने की कोशिश की। लेकिन इस बार दुश्मन से छीने गए अत्याधुनिक हथियारों से लैस पीएलजीए के लाल सैनिकों ने अपने बहादुर कमाण्डर कॉमरेड रणदेव (जिनकी शहादत तीन महीने बाद एओबी में एक दूसरी लड़ाई में हुई) के नेतृत्व में ऐसा पलटा जवाब दिया जो आने वाले कई सालों तक पीएलजीए के कतारों में 'गोसामा जैसी लड़ाई' के रूप में याद किया जाता रहेगा।

वे दुश्मन की अत्यधिक संख्या को देखकर हिले-डुले नहीं थे। भीषण गोलाबारी और हजारों गोलियों की बौछार करते हुए जब शत्रु बल आगे बढ़ रहे थे तब वे टस से मस नहीं हुए थे। घबराहट में दूर से ही गोली चलाने की गलती भी नहीं की। दुश्मन को अपने घेरे में आने तक धैर्य से इंतजार करते रहे, इसके बावजूद भी कि दुश्मन के बम और गोले पीएलजीए सैनिकों के इर्द-गिर्द फटते रहे, नजदीक आने के बाद ही पीएलजीए ने ऐसा ताबड़तोड़ प्रहार किया जिसके सामने ग्रेहाउण्ड्स (एसओजी) कमाण्डो बलों की 'बहादुरी' तार-तार हो गई। दुश्मन पर हासिल शानदार विजय को टिकाए रखने के लिए हमारे पीएलजीए सैनिकों और कमाण्डरों ने अपनी जान की बाजी लगा दी। इस अभूतपूर्व जवाबी कार्रवाई से जल्द ही दुश्मन के पैर उखड़ गए। बदहवास भागना शुरू किया। करीब 2 किलोमीटर तक उन्हें दौड़ा-दौड़ाकर भगा दिया गया। इस रोंगटे खड़े कर देने वाली और प्रेरणास्पद लड़ाई में दुश्मन के तीन ग्रेहाउण्ड्स मारे गए जिनमें से एक सहायक कमाण्डेंट भी था। दो घायल भी हुए। उनसे 2 एके-47 और एक इंसास रायफलें भी पीएलजीए ने छीन लीं। इस शौर्यपूर्ण लड़ाई में पलटन-6 की पलटन पार्टी कमेटी सदस्या कॉमरेड रामबती और एक पीएलजीए सैनिक कॉमरेड इकबाल शहीद हुए। दुश्मन को भगाने के बाद इन शहीदों का अंतिम संस्कार किया गया।

गोसामा लड़ाई का असर इतना ज्यादा और खौफनाक था कि दुश्मन अपने मरे हुए ग्रेहाउण्ड्स के शवों को लेने के लिए 24 घण्टों तक भी दोबारा कदम नहीं रख सका। अगले दिन 17 तारीख की शाम, बगल के गांवों से ग्रामीणों को भेजकर लाशें मंगवा लीं। ओडिशा सरकार समेत केन्द्रीय गृह मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय के होश उड़ गये। बौखलाये हुए ओडिशा के गृहमंत्री व केन्द्रीय गृहमंत्री शिवराज पाटिल ने चारों ओर अपने घोड़े दौड़ाने शुरू कर दिये। देश के रक्षा सचिव कुमावत की देखरेख में हजारों की संख्या में सीआरपीएफ, स्पेशल टास्कफोर्स, स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप के कमांडो, वायु सेना के कई हेलीकाप्टर, आंध्र के बदनाम हत्यारे ग्रेहाउण्ड्स बलों को उतार दिया।

मनोवैज्ञानिक युद्ध

नयागढ़ में हुए आकस्मिक हमलों और गोसामा जंगल में पीएलजीए का शानदार जवाबी हमला... इससे बौखलाए हुए दुश्मन ने मीडिया के जरिए बढ़ा-चढ़ाकर प्रचार किया कि गोसामा में हुई लड़ाई में 38 माओवादी मारे गए। खुद उनके अपने जवानों के शवों को बरामद करने से कतराने वाले लोगों ने दो ही दिनों में यह बयान दिया कि 'लूटे गए हथियारों का 80 प्रतिशत और गोलियों का 90 प्रतिशत' बरामद कर लिया। सभी पुलिस, कमाण्डो और अर्द्ध सैनिक बल कुल 1400 से ज्यादा संख्या में आने के बावजूद पीएलजीए से आमने-सामने लड़ने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे, फिर भी सरकार यह हास्यास्पद प्रचार जोरों पर चलाती रही कि गोसामा में माओवादी घेर लिए गए हैं और उनके बच निकलने का कोई रास्ता नहीं है। कुल मिलाकर इस घोर दुष्प्रचार और झूठी बयानबाजी का मकसद यह था कि क्रांतिकारी खेमे में भ्रम का वातावरण निर्मित किया जाए और अपने बलों के गिरे हुए मनोबल को उठाने की कोशिश की जाए। राजनीतिक रूप से देखा जाए तो नवीन पटनायक सरकार के इस्तीफे की मांग जोरों पर उठने लगी थी और विपक्ष ने विधानसभा में हंगामा खड़ा किया हुआ था, इसलिए भी उसे ऐसे झूठों का सहारा लेना ही पड़ा ताकि अपनी लाज बचाई जा सके।

'नयागढ़ मार्च'

लेकिन इस सबके बावजूद, पीएलजीए के लाल योद्धा अपनी इस ऐतिहासिक विजय के फलों को बचाते हुए लगातार कई हफ्तों तक कूच करते रहे। हर कॉमरेड ने अपनी क्षमता से बढ़कर काफी बोझ उठा लिया। क्रांतिकारी जोश और फौलादी संकल्प से ओत-प्रोत हमारे लाल सैनिक धूप-छांव, भूख-प्यास, रात-दिन - किसी भी चीज की परवाह किए बगैर महीनों तक अत्यन्त कष्टप्रद पैदल कूच करते रहे। बस एक ही लक्ष्य था दुश्मन से छीने हुए हथियारों को सुरक्षित ले जाकर पीएलजीए के बलों को हथियारबन्द करना। यह इतना लम्बा, थकाऊ और कई मुश्किलों व खतरों से भरा हुआ कूच था कि शायद यह इतिहास में 'नयागढ़ मार्च' के नाम से दर्ज हो जाए।

उपलब्धियां

अपेक्षा से बढ़कर काफी ज्यादा हथियार और कारतूस मिलने के कारण और उन्हें सुरक्षित जगहों पर डम्प करने से पहले ही दुश्मन से लड़ाई में उतरने पर मजबूर होने के कारण पीएलजीए को कुछ हथियार नष्ट करने पड़े ताकि वे दुश्मन के हाथ में भी न पड़ सकें। अपने साथ ले गए कुछ निम्न स्तर की बन्दूकों,

रायफलों और दुश्मन की त्रीनाटत्री रायफलों को आग लगा दी। सबसे बेहतरीन और नऐ नवेले हथियारों को (एक-एक कॉमरेड 2-3 हथियार भी ले आए) लेकर लौट आए। इस प्रकार 300 से ज्यादा हथियार हमारे हाथों में आ गए जिनमें लगभग सभी एके-47, एलएमजी, एसएलआर, इंसास जैसे आधुनिक हथियार हैं। 50 हजार से ज्यादा गोलियां हमारे हाथों में आ गईं। जबकि दुश्मन को गोसामा पहाड़ियों में कैम्प बिठकर एक महीने तक मशक्कत करने के बाद भी करीब 650 हथियार और सवा लाख कारतूस ही बरामद हो पाए।

इस हमले के राजनैतिक और फौजी नतीजों पर गौर किया जाए तो हम बहुत संक्षेप में यह कह सकते हैं -

पहला, इससे हमारी पीएलजीए की शस्त्र सम्पत्ति और उसकी मारक क्षमता में बढ़ोत्तरी करने में मदद मिली।

दूसरा, केन्द्र सरकार की अगुवाई में देश भर में शुरू किए गए हमले के खिलाफ में यह हमारा जवाबी हमला था। ओडिशा में वहां की राज्य सरकार द्वारा क्रांतिकारी आन्दोलन के खिलाफ तीखे किए गए हमले का भी यह माकूल जवाब था।

तीसरा, ओडिशा के तमाम संसाधनों को दलाल पूंजीपतियों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हाथों बेच रही राज्य सरकार के लिए इस हमले ने खतरे की घण्टियां बजा दीं।

चौथा, देश भर में, खासकर ओडिशा में दलाल पूंजीपतियों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा थोपी जा रही सेज और अन्य विस्थापन की नीतियों के खिलाफ लड़ रही उत्पीड़ित जनता का, खासकर आदिवासियों का इस हमले से हौसला बढ़ा।

इस आपरेशन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शामिल पीएलजीए के राजनीतिक कमिस्सारों, कमांडरों और लाल सैनिकों का; इस आपरेशन की कामयाबी में अहम भूमिका निभाने वाले ड्राइवरों और विभिन्न किस्म के तकनीशियनों का; और इस पूरे आपरेशन के दौरान हर मोड़ में सक्रिय सहयोग देने वाली ओडिशा और आंध्र की संघर्षशील जनता का हमारी 'प्रभात' इंकलाबी जोश के साथ लाल अभिनंदन करती है। इस आपरेशन के लिए शुरू हुए सफर के दौरान 18 दिसम्बर 2007 को शहीद हुई कॉमरेड कमला को; इस आपरेशन के दौरान गोसामा लड़ाई में शहीद हुए कॉमरेड्स रामबती और इकबाल को; और इस सफल आपरेशन से लौटते समय शबरी नदी में नाव पलटकर डूबने से शहीद हुए कॉमरेड अर्जुन को 'प्रभात' इस मौके पर विनम्र श्रद्धांजलि पेश करती है। ✯

(... पृष्ठ 6 का शेष)

मुताबिक देश में 1 करोड़ 17 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में वन्यप्राणी संरक्षण केन्द्र फैले हुए हैं। इस सिलसिले में आदिवासियों और वन विभाग के अधिकारियों के बीच अक्सर संघर्ष हो रहे हैं। इस कानून में ऐसा कोई मार्गदर्शक नियम नहीं है जिससे कि ऐसे संघर्षों को रोककर आदिवासियों के हितों का संरक्षण किया जाए।

इस कानून का असली उद्देश्य को समझना है तो हमें केन्द्र सरकार की नई खनिज नीति पर भी गौर करना होगा जो हाल ही में, इस कानन के बनने के बाद घोषित की गई। इस नीति के तहत आने वाले छह सालों में (2004-2014) उत्खनन के क्षेत्र में 5 लाख करोड़ रुपए के पूंजीनिवेश को आकर्षित करने और 10 लाख नौकरियां देने का लक्ष्य घोषित किया गया। सच्चाई यह है कि 1951-90 के बीच उत्खनन की परियोजनाओं के चलते देश भर में 25 लाख लोग विस्थापित हो चुके हैं। साफ जाहिर है यह नई खनिज नीति बड़े पूंजीपतियों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए लाल कालीन बिछाने के लिए और आदिवासियों को विस्थपन व विनाश के कगार पर धकेलने के लिए ही बनी है।

गौरतलब है कि 2005 में यह विधेयक संसद में पेश किया गया था और उसी साल बस्तर में टाटा और एस्सार कम्पनियों के मुनाफे के लिए छत्तीसगढ़ सरकार ने केन्द्र की मदद से सलवा जुडूम शुरू कर 50 हजार आदिवासियों को 'राहत' शिविरों में घसीटा। इससे ज्यादा संख्या पड़ोस के आंध्र चले गई। एक तरफ सरकार इन आदिवासियों को अपने गांवों और घरों से बाहर निकाल रही है और दूसरी तरफ अदिवासियों को वन भूमि पर अधिकार देने के दावे कर रही है?! कितना विरोधाभास है! आंध प्रदेश के नल्लामला जंगलों से सरकार ने चेंचू आदिवासियों को बाहर निकाल दिया ताकि वहां निक्षिप्त हीरे के भण्डारों को एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी के हवाले कर दिया जा सके। छत्तीसगढ़ के ही उदाहरण देखा जाए तो उदंती और सीतानदी अभयारण्यों में रहने वाले आदिवासी विस्थापन का खतरा झेल रहे हैं जिनके लिए 10 लाख रुपए मुआवजे का एक मुश्त पैकेज भी घोषित किया गया। ऐसे तमाम आदिवासियों को इस नए वन कानून से क्या राहत मिल पाएगी? क्या इस कानून से आदिवासियों की जमीनें बड़ी व विदेशी कम्पनियों को सौंप देने की योजनाओं पर रोक लग सकेगी? जिन्दल, मित्तल, निको, टाटा, एस्सार आदि को व्यापक इलाके 'पट्टे' पर देने वाली सरकार क्या आदिवासियों को वाजिब हक देने के लिए ईमानदारी से आगे आएगी? जवाब है - नहीं!

आखिर में, संक्षेप में कहा जाए तो इस नए वन कानून से आदिवासियों और गैर-आदिवासियों की भूमि समस्या का हल नहीं हो सकता। इस कानून के जरिए आदिवासी इलाकों के आदिवासी और गैर-आदिवासी मुखियाओं और भूमिपतियों को वर्ग के रूप में स्थाई तौर पर स्थापित किया जाएगा। इन्हें अनाप-शनाप जमीन पर अधिकार दिया जाएगा जिन्हें लुटेरे वर्ग अपने सामाजिक आधार के रूप में इस्तेमाल करेंगे। अंग्रेजों के आने के पहले हमारे देश में जमीन पर राजा या उसके किसी भी सामंत को संपूर्ण अधिकार नहीं थे। उस पर स्थाई और पुश्तैनी रूप से किसानों का ही अधिकार रहता था। लेकिन अंग्रेजों द्वारा स्थाई बंदोबस्त नीति लागू किए जाने के बाद ग्रामीण समाजों का ताना-बाना ही छिन्न-भिन्न हुआ था। सारे भूमि विवाद अदालतों में जा फंसे। यहीं से 1857 विद्रोह के बीज पड़े थे। आज पट्टा देने के नाम से इस कानून को (अबूझ)माड़ जैसे इलाकों में जहां परम्परागत रूप से झूम (पेंदा) खेती की जाती है, लागू करने से वहां का समाज छिन्न-भिन्न हो जाएगा। जहां आज जमीन को लेकर जनता में आपसी विवाद या झगड़े नहीं हैं या न के बराबर हैं, वहां पर इनके पनपने की जमीन तैयार हो जाएगी। फलस्वरूप ग्रामीणों में फूट पड़ेंगे। कोर्ट-कचहरियों का चक्कर लगाना शुरू होगा। इस प्रकार नए वन कानून के जरिए आदिवासी समाज को अर्द्ध उपनिवेशी और अर्द्ध सामंती व्यवस्था में मिला देने के सिलसिले में कई अनर्थ हो जाएंगे। इसलिए, 'झूम (पेंदा) खेती आदिवासियों का जन्मसिद्ध अधिकार है' और 'जंगल पर अधिकार आदिवासियों और गरीब गैर-आदिवासियों का हो' के नारों को बुलन्द करते हुए ही हमें इस नए कानून में मौजूद जन-अनुकूल पहलुओं के अमल के लिए संघर्ष करना चाहिए। ✯

जंगल पर अधिकार आदिवासियों और गरीब गैर-आदिवासियों का ही है! नए वन कानून में मौजूद जन-अनुकूल पहलुओं के अमल के लिए संघर्ष करो!!

आदिवासियों (अनुसूचित जातियों) और परम्परागत वन निवासियों का अधिकार कानून-2006 के अमल के लिए 2 जनवरी 2008 को केन्द्र सरकार ने कुछ नियम-कायदों की घोषणा की। इससे देश भर में आदिवासी अवाम में यह आशा जाग उठी कि उन्हें इससे अपनी जमीनों के पट्टे मिल जाएंगे। एक तरफ इस कानून को आदिवासियों के लिए वरदान कहते हुए यूपीए के घटक पक्ष इसे बनाने का श्रेय खुद को देने लगे हैं तो दूसरी तरफ संशोधनवादी पार्टियां और एनजीओ (गैर-सरकारी संगठन) यह प्रचार करने लगे हैं कि इस कानून को बनाने के लिए उन्होंने ही दबाव डाला था। सभी पक्षों में श्रेया लेने की होड़-सी मची हुई है। कई आदिवासी संगठन, संशोधनवादी पार्टियां और विभिन्न मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियां इस कानून पर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट कर इसके अमल के लिए अपने-अपने तरीकों में आन्दोलन छेड़ने को तैयार हो रही हैं। केन्द्र-राज्य सरकारें भारी शोरगुल मचा रही हैं कि वे जल्द ही पट्टों का वितरण कर आदिवासियों के साथ ऐतिहासिक रूप से हुई नाइंसाफी को मिटाने जा रही हैं। आगामी विधानसभा और लोकसभा चुनावों के मद्देनजर बयानबाजी अब और ज्यादा तेज हो चुकी है।

इन परिस्थितियों में हमें यह देखना चाहिए कि आदिवासियों और परम्परागत वन निवासियों का अधिकार कानून (अब से इसे 'नया वन कनून' कहेंगे) किस पृष्ठभूमि में तैयार हुआ है। इस कानून के असली लक्ष्य और उद्देश्य क्या हैं? इस कानून की खामियां क्या हैं? और हमें यह तय करना चाहिए कि इस कानून के अमल पर हमारा दृष्टिकोण क्या होना चाहिए।

लम्बे समय से भूमि सुधारों और आदिवासियों को वन भूमि के पट्टे देने की मांग से देश में कई संघर्ष चल रहे हैं। नक्सलबाड़ी और श्रीकाकुलम के सशस्त्र संघर्षों ने आदिवासियों की भूमि समस्या को देश के राजनीतिक पटल पर मजबूती से ला दिया। इन संघर्षों के परिणामस्वरूप ही आंध्र में 1/70 कानून बनाया गया। अन्य राज्यों में भी आदिवासियों की जमीनों की सुरक्षा के लिए 1970 के दशक में ऐसे ही कुछ कानून बनाए गए। जन संघर्षों और सशस्त्र संघर्ष के फलस्वरूप केन्द्र व राज्यों की सरकारें कुछ जन-उपयोगी कानून बनाने पर भले ही मजबूर हो रही हैं, लेकिन दूसरी तरफ बड़े जमींदारों, दलाल पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों के हितों को पूरा करने के लिए इन्हीं कानूनों की धज्जियां भी उड़ा रही हैं। 1991 से शसक वगों द्वारा विश्व बैंक निर्देशित/प्रायोजित नई आर्थिक नीतियों का अमल शुरू करने के बाद से वे आदिवासियों और गैर-आदिवासी किसानों के अधिकारों का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन कर उनकी जमीनों और अन्य संसाधनों को साम्राज्यवादियों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और बड़े पूंजीपतियों के हवाले करते आ रहे हैं। फलस्वरूप अपनी जमीनें और आजीविका के साधनों से वंचित हो रहे आदिवासी विभिन्न रूपों में जुझरू संघर्ष कर रहे हैं। 2005 से बन रहे सेज (विशेष आर्थिक क्षेत्र) आदिवासी और अन्य किसानों के लिए मौत का पैगाम ले आए हैं। इससे इन सेजों के खिलाफ कलिंगनगर, सिंगूर और नंदीग्राम में जुझारू संघर्ष हुए हैं। दूसरी तरफ 21 सितम्बर 2004 को भाकपा (माओवादी) के गठन के बाद देश भर में, खासकर आदिवासी इलाकों में जनयुद्ध तेज होने लगा है। इससे लुटेरे वर्गों की राजसत्ता ध्वस्त होते हुए जनता की राजसत्ता विभिन्न स्तरों में निर्मित होती जा रही है। माओवादी पार्टी भूमि समस्या को, जो आदिवासियों की बुनियादी तमन्ना है, हल कर रही हैं। इसके फलस्वरूप ही आदिवासी माओवादी पार्टी के पीछे दृढ़तापूर्वक खड़े होकर लड़ रहे हैं।

इस मौके पर यह देखना भी जरूरी है कि किन राजनीतिक व आर्थिक कारणों और अनिवार्यताओं के चलते केन्द्र सरकार इस नए वन कानून को इस रूप में बनाने पर मजबूर हो गई। आज पूर्वोत्तर इलाके और कश्मीर को छोड़कर देश के अत्यधिक रणनीतिक इलाकों में माओवादी पार्टी के नेतृत्व में वर्ग संघर्ष और जनयुद्ध चल रहे हैं। इन इलाकों में भूमि समस्या को, जोकि व्यापक शोषित जनता की बुनियादी समस्या है, हल करने के लिए माओवादी पार्टी सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी आन्दोलन को चला रही है। कई सालों से जारी इस आन्दोलन पर केन्द्र-राज्यों की सरकारों द्वारा जारी दमन-हत्याकाण्ड की मुहिमें लगातार विफल होती जा रही हैं। जब तक भूमि समस्या का हल नहीं होगा तब तक चाहे कितना भारी दमन अभियान चलाकर भी माओवादी आन्दोलन को कुचला नहीं जा सकता, इस सच्चाई को केन्द्र-राज्य सरकारों ने चिन्हित किया। देश के प्रमुख समाजशास्त्रियों, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं और आदिवासियों के अधिकारों के लिए लड़ने वाले नेताओं ने यह कहते हुए केन्द्र-राज्यों की सरकारों पर दबाव डाला कि नक्सलवादी आन्दोलन की जड़ में जो आर्थिक-सामाजिक समस्याएं हैं उनका हल किए बिना दमन चलाना बेकार है। ये सब उदारपंथी पूंजीवादी दृष्टिकोण से समस्या के समाधान के पक्षधर हैं। यानी उनकी कोशिश यही रहती है कि लुटेरे वर्गों के अर्थिक-राजनीतिक हितों को कोई खास चोट पहुंचाए बगैर ही ऐसे सुधारों को लागू किया जाए जिनसे जनता को राहत मिल सके। इन तमाम पहलुओं के मद्देनजर, नक्सलवादी आन्दोलन के विस्तार और मजबूती का कारण बन रही भूमि समस्या को, जोकि आदिवासियों और गरीब गैर-आदिवासियों की बुनियादी समस्या है, हल करने के लिए केन्द्र-राज्य सरकारों ने अपने तरीके से कोशिश की। इस नए वन कानून को अब इस तरीके से सामने लाने की प्रमुख राजनीतिक वजह उनकी इस जरूरत में है कि आदिवासियों और गैर-आदिवासियों में एक तबके को जमीन के पट्टे देकर व्यापक आदिवासियों और गैर-आदिवासियों को हथियारबन्द संघर्ष के रास्ते से हटा दिया जाए।

1991 से, खासतौर पर 2000 से भूमण्डलीकरण की नीतियों से साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और दलाल पूंजीपतियों की कार्पोरेट संस्थाओं को मुनाफा मिल सके, इसके लिए देश की सारी आर्थिक नीतियों को उदार बनाते जा रहे हैं। आजादी के आन्दोलन के फलस्वरूप और बाद में देश में हुए राजनीतिक आन्दोलनों की बदौलत 1947 से 1991 तक बनाई गई तमाम आर्थिक, औद्योगिक और सामाजिक नीतियों में जो कुछ भी

दलाल पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों के हितों की खिलाफ रही हों, उन सभी को 1991 से रद्द या शिथिल करते आ रहे हैं। इसके साथ-साथ ढांचागत बदलाव भी कर रहे हैं ताकि साम्रज्यवादियों और दलाल पूंजीपतियों के अर्थिक हितों को पूरा किया जा सके। इसके तहत नया वन कानून और नई राष्ट्रीय खनिज नीति को लाया गया है। दरअसल भूमण्डलीकरण की नीतियों के फलस्वरूप दुनिया भर में और हमारे देश में भी कच्चेमाल की मांग बढ़ गई है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां और दलाल पूंजीपति देश के उन तमाम इलाकों में, जहां कच्चेमाल उपलब्ध हैं, घुसपैठ कर रहे हैं। इनमें हमारे संघर्ष के इलाके ही ज्यादातर हैं।

इस घुसपैठ का 'मानवीय चेहरा' यह नया वन कानून है जबकि सलवा जुडूम और जबरिया विस्थापन उसकी असली तस्वीर हैं!!

1991 के बाद से, खासकर 2000 के बाद से टाटा, एस्सार, जिन्दल आदि दलाल पूंजीपतियों की कम्पनियां और आर्सेल्लार, मित्तल, पोस्को जैसी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां केन्द्र और राज्य सरकारों पर काफी दबाव डाल रही हैं कि उन्हें वन आंचलों में मौजूद लोहा और बाक्साइट खदानों को सस्ते में पट्टे पर दिया जाए और इस्पात व अल्यूमिनियम के संयंत्रों को खोलने की अनुमति दे दी जाए। लाखों करोड़ों रुपयों के एमओयू भी कर चुकी हैं। आने वाले दिनों में और भी होने हैं। इसके चलते झारखण्ड, ओडिशा, आन्ध्र और छत्तीसगढ़ प्रदेशों में आदिवासी अपनी जमीनों को इस 'माइनिंग माफिया' से बचाने के लिए जुझारू और हथियारबन्द संघर्ष कर रहे हैं। इस तरह संघर्ष में उतरे आदिवासियों और गैर-आदिवासी किसानों के समर्थन में भाकपा (माओवादी) खड़ी है जिसे लोगों का विश्वास हासिल हुआ है। जंगल पर अधिकार के लिए जारी संघर्ष की अग्रिम मोर्चे में खड़ी पीएलजीए में यही लोग व्यापक संख्या में भर्ती हो रहे हैं।

इस पृष्ठभूमि में कार्पोरेट कम्पनियों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हितों के खिलाफ खड़ी भाकपा (माओवादी) का उन्मूलन करना केन्द्र और राज्य सरकारों के लिए जरूरी हो गया। इसके अंतर्गत ही केन्द्र सरकार ने यह नया वन कानून तैयार किया ताकि आदिवासियों और गैर-आदिवासी किसानों को इस भ्रम में रखा जा सके कि भाकपा (माओवादी) द्वारा सामने लाई गई जमीन की समस्या को वह खुद ही हल करने जा रही है।

देश भर में कई सालों से वन भूमि पर अधिकार के लिए आन्दोलन जारी हैं। इसी पृष्ठभूमि में 2004 में यूपीए सरकार ने अपने साझे न्यूनतम कार्यक्रम में यह कहा था कि वन भूमि पर आदिवासियों को अधिकार दिया जाएगा। मई 2005 में वन अधिकार विधेयक-2005 लाया जिसे 15 दिसम्बर 2006 को संसद ने पारित किया। कानून बनने के बाद भी इसके अमल की प्रक्रिया में जानबूझकर देरी की। साल भर की इस देरी का कारण यह है कि केन्द्र सरकार इस कानून के अमल को लेकर ईमानदार नहीं है। दलाल पूंजीपतियों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और पर्यावरण के नाम से इन दोनों की सेवा करने वाले ढोंगी पर्यावरणवादियों के दबाव के चलते केन्द्र सरकार ने इसके अमल को एक साल तक टाल रखा था। विभिन्न जनवादी व क्रांतिकारी संगठनों के दबाव के साथ-साथ देश के कई हिस्सों में हमारी पार्टी के नेतृत्व में जारी सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी अन्दोलन के प्रभाव से 2 जनवरी 2008 को सरकार ने इस कानून के अमल का आदेश जारी किया। इसके तहत वन भूमि पर 13 दिसम्बर 2005 तक काबिज अदिवासियों को तथा इस तारीख तक तीन पीढ़ियों से (यानी दिसम्बर 1930 से) काबिज गैर-आदिवासियों को मालिकाना हक देना होगा। इसके अनुसार देश की करीब 14 लाख हेक्टेयर जमीनों को पट्टे देने होंगे।

इस नए वन कानून में कई खामियां हैं। इसके प्रारूप में कई विसंगतियां हैं। भाषा और अनुवाद भी त्रुटिपूर्ण है जिससे बहुत कुछ अस्पष्ट है। यह इत्तेफाक नहीं, बल्कि इसके पीछे सरकार को स्पष्ट मंशाएं और लक्ष्य हैं।

इस कानून के हिसाब से ग्रामसभा की भूमिका अहम होगी जो यह तय करेगी कि किस वन भूमि पर किसका अधिकार बनता है। ग्रामसभा के ऊपर सब-डिवीजन स्तर और जिला स्तर की भू-अधिकार कमेटियां होंगी। इस पूरी प्रक्रिया की राज्य स्तर की कमेटी समीक्षा करेगी। इस नए कानून के अनुच्छेद 3(1) में ग्रामसभा को 'पंचायत ग्रामसभा' के रूप में परिभाषित करना भी एक गंभीर खामी है। आदिवासी इलाकों में एक ग्राम पंचायत में कई गांव होते हैं जिसका दायरा 10 से 20 किलोमीटर तक होता है। दरअसल पंचायत राज कानून जिसे 1991 में संविधान के 73वें संशोधन के जरिए बनाया गया था, को अनुसूचित इलाकों में लागू करने के इरादे से 1996 में बनाए गए 'पीसा' कानून [PESA & Provision of the Panchayats (Extension to the Scheduled Areas)] में यह कहा गया है कि ग्रामसभा के लिए एक आवास इकाई (गांव) को आधार बनाया जाए। हालांकि आदिवासियों को अधिकार देने के नाम से लाए गए इस नए वन कानून में ग्रामसभा को कुछ अधिकार तो दिए गए हैं, फिर भी चूंकि कानून के अमल के लिए बनाए गए नियम-कायदों में ग्रामसभा को पूरी ग्राम पंचायत की सभा के रूप से परिभाषित किया गया इसलिए ग्रामसभा लोकतांत्रिक तरीके से काम नहीं कर पाएगी।

भले ही सरकार इस कानून को लाकर खूब डींगें मार रही हो, ग्रामसभा को सम्पूर्ण अधिकार नहीं देना इसकी सबसे बड़ी खामी है। इसके मुताबिक वन भूमि पर दावेदारी के बाबत् ग्रामसभा द्वारा किए गए प्रस्ताव पर अंतिम फैसला जिला स्तर की भू-अधिकार कमेटी का होगा। वैसे नगरनार, लोहण्डीगुड़ा, धुरली आदि जगहों में ग्रामसभा के 'अधिकारों' की पोल कई बार खुल चुकी है। एक तरफ वन अधिकार देने की बात तो की गई पर आदिवासियों को वन्यप्राणियों के शिकार का अधिकार नहीं दिया गया। हालांकि 49 लघु वनोपजों के संग्रहण पर अधिकार तो दिया गया पर घरेलू उपयोग के लिए लकड़ियां काटने का हक नहीं।

इस कानून की एक धारा में यह कहा गया है कि अनुसूचित जातियों के लोगों को जनजाति प्रमाणपत्र समर्पित करना होगा। लेकिन यह स्प्ष्ट नहीं किया गया कि गैर-आदिवासियों को उनके वन निवासी होने का प्रमाण कैसे पेश करना होगा। वन इलाकों में गैर-आदिवासी ठेकेदारों और व्यापारियों को वन भूमि पर हक न मिल सके, इसके लिए एक प्रावधान जोड़ने की बात पर विशेषज्ञों द्वारा रखे गए सुझाव को सरकार ने ठुकरा भी दिया।

इस कानून में वन्यप्राणियों के संरक्षण के लिए निर्देशित मार्गदर्शक नियमों की आड़ में पर्यावरण और वन मंत्रालय के अधिकारी अभयारण्यों में जी रहे आदिवासियों के अधिकारों को ठुकरा दें, यह खतरा भी बना हुआ है। 2000 साल के आंकड़ों के

(शेष पृष्ठ 4 में...)

ykgMhxMk dh turk viu gh ^fodkl* dk fojks/ D;ks dj jgh g\

& jktjke eMkoh

(‘प्रभात’ के पाठकों को लोहंडीगुड़ा में प्रस्तावित टाटा स्टील प्लांट के विरोध में चल रहे जन संघर्षों के बारे में जानकारी पिछले अंकों में हम देते रहे। जैसे कि आपको मालूम ही है कि ये संघर्ष अब और भी तेज होता जा रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में हम एक दैनिक समाचार पत्र ‘छत्तीसगढ़’ में छपे लेख को हू ब हू छाप रहे हैं जिसमें इस संघर्ष का जीवंत चित्रण है। ध्यान रहे कि लेख में छपे विचार लेखक के निजी विचार हैं। – संपादक मंडल)

लोहंडीगुड़ा क्षेत्र के लोग विगत 2-3 साल से वहां प्रस्तावित टाटा इस्पात संयंत्र के लिए किये जा रहे भू-अधिग्रहण का विरोध करते आ रहे हैं। सरकार के द्वारा जोर-शोर से जिस विकास का प्रचार किया जा रहा है उसे वे अपना विनाश मान रहे हैं। जमीन ही उनकी जान है, इसलिए ‘जान देंगे जमीन नहीं देंगे’ आज उनका नारा बन गया है। भारतीय जनता पार्टी के सांसद बलीराम कश्यप एवं छत्तीसगढ़ विधानसभा में विपक्ष के नेता महेन्द्र कर्मा साथ-साथ क्षेत्र का दौरा करके लोगों को ‘समझाने’ (धमकाने) का प्रयास कर रहे हैं कि वे अपनी जमीन टाटा संयंत्र के लिए दे दें ताकि क्षेत्र का विकास भिलाई, दल्ली राजहरा जैसा हो सके। इस दौरे में कर्मा-कश्यप जुगलबंदी का भरपूर साथ दे रहे हैं ‘विस्फोटक कलेक्टर’ (जिसका विस्फोट किसानों को देखते ही होता है, खासकर जो जमीन नहीं देना चाहते) गणेश शंकर मिश्रा एवं एसपी जीपी सिंह। लेकिन टाटा के लिए जमीन का जुगाड़ करने के उनके अभियान को अभी तक सफलता नहीं मिली है। लोहंडीगुड़ा क्षेत्र के कुछ लोग जो भाजपा एवं कांग्रेस के बड़े नेताओं के चेले-चपाटी हैं, टाटा के पक्ष में जरूर हैं लेकिन आम जनता के साथ-साथ अधिकांश पंच-सरपंच, शासकीय कर्मचारी, शिक्षक संयंत्र की स्थापना के सख्त खिलाफ हैं। सरकार ने अपनी नई औद्योगिक नीति की घोषणा की जिसमें देशी-विदेशी पूंजिपतियों को छत्तीसगढ़ में पूंजी निवेश के लिए आमंत्रित किया गया था। नये भारी उद्योग लगाने वाले पूंजीपतियों को आवश्यक तमाम ढांचागत सुविधायें उपलब्ध कराने का वायदा किया गया था इतना ही नहीं उन्हें बिजली बिल, विक्रय कर, उत्पाद शुल्क आदि में भारी छूट देने की घोषणा भी की गई थी। साथ में मजदूर विरोध ी एवं पूंजीपतियों के अनुकूल नई श्रम नीति की घोषणा की गई थी। नतीजा साफ है सैकड़ों एमओयू (मेमरोंडम ऑफ अंडरस्टेडिंग) सामाने आये। लौह अयस्क, बाक्साइट, कोरण्डम, चूना पत्थर, ग्रेनाईट आदि अनेक खनिज संसाधनों से भरपूर बस्तर में खदानों को लीज पर लेने व इस्पात संयंत्र लगाने के लिए नेको, टाटा, एस्सार और जिंदल जैसे बड़े पूंजीपतियों के साथ समझौते हो गये हैं। टाटा के इस्पात संयंत्र के लिए लोहंडीगुड़ा क्षेत्र को उपयुक्त माना गया। जगदलपुर से चित्रकोट मार्ग के इर्द-गिर्द में बसी 10 ग्राम पंचायतों की 10,000 एकड़ जमीन को इस्पात संयंत्र के लिए अधिग्रहित करने का कार्य पिछले डेढ़ सालों से जारी है। टाकरागुड़ा, सिरिसगुड़ा, धुरागांव, बेलर, दाबापाल, बड़े परोदा, बड़ांजी, कुम्हली आदि गांवों की अधिकांश जनता टाटा को जमीन देने से इन्कार कर रही है। ग्रामीणों को मनाने के लिए सबसे पहले बेलर में सभा आयोजित की गई थी जिसमें महेन्द्र कर्मा, बलीराम कश्यप के अलावा क्षेत्र के विधायक लच्छू राम कश्यप आदि उपस्थित थे। ग्रामीणों ने एक स्वर में जमीन देने से मना कर दिया था। ग्रामीणों के सामने उनकी हां में हां मिलाने वाले सभी नेता बाद में टाटा के पक्ष में बात करने लगे। राज्य सरकार ग्रामीणों की भावनाओं, उनकी इच्छा-अनिच्छाओं को नजरअंदाज करके टाटा के लिए हर हाल में जमीन अधिग्रहित करना चाहती है। संवैध -ानिक प्रावधानों के अनुसार आदिवासियों की जमीन अधिग्रहित करने के लिए ग्रामसभा की अनुमति अनिवार्य है लेकिन ग्राम सभाओं का आयोजन ही एक फरेब बन गया है। धुरागांव में आयोजित ग्रामसभा इसका बढ़िया उदाहरण है।

एसडीएम (उपमंडल विकास अधिकारी) एवं तहसीलदार के द्वारा आयोजित इस ग्रामसभा में बड़े पैमाने पर दलाल नेताओं के चेले-चपाटियों को लाया गया था। गांव वालों को सभा स्थल से 10 मीटर पीछे खदेड़कर बैठाया गया था। अधिकारियों के सामने चेले-चपाटियों को बैठाया गया। ग्रामसभा में टाटा को जमीन देने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित कराया गया। चेले-चपाटियों के अंगूठों के निशान भी गांव वाले बताकर लगवाये गये और फोटो खिंचवाकर मीडिया में प्रचारित किया गया। लेकिन ग्रामीणों का दावा है कि ग्रामसभा के रजिस्टर में एक भी ग्रामीण के अंगूठे का निशान नहीं है। इसकी शिकायत भी उच्चाधिकारियों से की गई लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। इसी तरह के झूठे तरीकों से ग्रामसभायें आयोजित की गईं और प्रस्ताव पारित किये गये। सरकार ने आदिवासी किसानों की जमीन के लिए जो दर तय की है वो भी बेहद कम है। दरअसल सरकार आदिवासियों की कीमती उपजाऊ जमीनों को कौड़ियों के भाव अधिग्रहित करना चाहती है। एक फसली जमीन के लिए एक लाख रूपये प्रति एकड़ की दर से मुआवजा राशि तय की गई है एवं दो फसली जमीन के लिए डेढ़ लाख रूपये प्रति एकड़ तय किये हैं। पेड़ों की पहचान एवं गिनती अलग से नहीं करायी गयी। गन्ना का उत्पादन करने वाले किसानों को यहां की उपजाऊ धरती सालाना प्रति एकड़ 75 हजार रूपये की आय प्रदान करती है। दूसरी ओर सर्वोच्च न्यायालय ने अपने एक फैसले में व्यवस्था दी है कि विस्थापित होने वाले किसानों को उनकी जमीन के बदले जमीन, मकान के बदले मकान एवं पेड़ के बदले पेड़ उपलब्ध करवाये जायें। शासन-प्रशासन के सामने आदिवासी किसानों ने अपने 13 सुत्रीय मांगपत्र रखा है जिसमें प्रति एकड़ के हिसाब से 10 लाख रुपये और जमीन के बदले जमीन और मकान के बदले मकान, पेड़ के बदले पेड़, सिंचाई के साधन, सभी पढ़े लिखों को नौकरी, घर में बैठे लोगों को मजदूरी के बराबर भत्ता आदि मांगें शामिल हैं। सुनने से कुछ लोगों को ये मांगें अटपटी लग सकती हैं लेकिन वे जायज हैं। क्योंकि उनकी

आजीविका उनकी जीवन शैली, संस्कृति, सब कुछ छिन्न-भिन्न हो रहा है सब कुछ ध्वस्त होने वाला है। किन-किन चीजों की कीमत आंकी जा सकती है? यदि किसान अपने बाप-दादाओं के द्वारा उनकी जमीनों पर बहाये गये खून-पसीने की कीमत अदा करने की मांग करें तो इसे पूरा करना दुनिया के किसी भी पूंजीपति के बस की बात नहीं है।

ग्रामीणों की जमीन के जबरिया अधिग्रहण के लिए अधिकारीगण एवं टाटा सर्मथकों के द्वारा जो तरीके अपनाये जा रहे हैं एक दम घटिया किस्म के हैं। 116 एवं 107 धाराओं के तहत 105 किसानों को उस समय गिरफ्तार कर लिया गया जब वे राज्यपाल को ज्ञापन सौंपने रायपुर जा रहे थे। गिरफ्तार लोगों को जगदलपुर जेल में रखा गया एवं उन्हें धमकी दी गई कि जब तक टाटा को जमीन नहीं दी जायेगी तब तक उन्हें जेल से रिहा नहीं किया जायेगा। कुछ लोग मजबूरन डर के मारे मुआवजा राशि के चेक लेकर छूट गये। अधिकांश लोगों को तीन-तीन महीने की जेल काटनी पड़ी। 10 पंचायतों के शासकीय कर्मचारी एवं शिक्षकों पर चेक लेने के लिए दबाव डाला जा रहा है। इंकार करने वालों को दूर तबादले या निलंबन करने की धमकी दी जा रही है। धुरागांव के किसान सोमारू मंडावी ने अधिकारियों के दबाव में चेक तो ले लिया लेकिन घर जाकर उसने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। कई किसानों को अंधेरे में रखकर या किसी न किसी बहाने, कलेक्टर कार्यालय में ले जाकर चेक थमाये जा रहे हैं। दूसरी ओर युवा कल्याण समिति के नाम से प्रभावित गांवों के युवा बेरोजगारों की समिति का पंजीयन करवाकर उन्हें हर महीने 1000 रु. प्रति व्यक्ति के हिसाब से टाटा की ओर से सहायता राशि देने के नाम पर लालच दिखाया जा रहा है। पिछले तीन महीनों से यह जारी है। संयंत्र का निर्माण पूरा होने तक इसे जारी रखने की बात हो रही है। संयंत्र के निर्माण के बाद इस समिति को छोटे-मोटे ठेके देने का आश्वासन भी टाटा की ओर से दिया जा रहा है। टाटा विरोधी किसानों इसे आंदोलन में फूट डालने की शासकीय साजिश बता रहे हैं। इसका विरोध करते हुए किसानों ने पिछले दिनों सहायता राशि आंवटन कार्यक्रम स्थल पर नारेबाजी की तो पुलिस ने लाठी चार्ज किया।

जगदलपुर को केन्द्र मानकर टाटा समर्थकों ने 'बस्तर विकास मंच' बनाया। सीपीआई के सांसद गुरूदास दासगुप्ता को बस्तर में घुसने से इसी संगठन ने रोका था। बाद में दासगुप्ता ने दिल्ली जाकर भाजपा नेता एलके अडवाणी से इसकी शिकायत करने की बात की। अडवाणी से दास गुप्ता को जो उम्मीद थी उसका परिणाम हालांकि अभी तक नहीं सामने आया। ऐसा माना जा रहा है कि बस्तर विकास मंच भाजपा-कांग्रेस के बड़े नेताओं के इशारे पर ही बना है। ऐसे ही संगठन के द्वारा पहले ब्रह्मदेव शर्मा के कपड़े फाड़ कर जूतों की माला पहनाकर उन्हें जगदलपुर की सड़कों पर घुमाया गया था। सत्ता पक्ष व विपक्ष के बड़े नेताओं तथा उनके चेलों के द्वारा हालांकि टाटा सयंत्र के समर्थन में एड़ी चोटी एक कर जोर लगाया जा रहा है। लेकिन प्रभावित गांवों के किसान टस से मस नहीं हो रहे। और अपने आंदोलन का विस्तार कर रहे हैं। अब अंदोलनरत जनता 13 सुत्रीय मांग-पत्र से हटकर टाटा संयंत्र की स्थापना के खिलाफ ही अंदोलन तेज कर रहे हैं। पिछले 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने जगदलपुर जाते समय टिप्पर के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से टाटा विरोधी संगठन की तीन महिलाओं श्रीमती आयते, श्रीमती कुमारी, श्रीमती जोगी (सभी सिरिसगुड़ा गांव की) का निधन हो गया। सिरिसगुड़ा में इन महिलाओं का स्मारक बनाया गया। किसानों को इस दुर्घटना के पीछे टाटा समर्थकों के हाथ होने का संदेह है। आंदोलन के हर मोड़ पर आगे रहने वाली किसान महिलाओं को आतंकित करने के लिए की गयी साजिश के रूप में इसे देखा जा रहा है। दुर्घटना के बाद चालक फरार था लेकिन लोहंडीगुड़ा के थानेदार ने चालक की लापरवाही को दुर्घटना का कारण बताया। हालांकि तब तक जांच शुरू भी नहीं हुई थी।

लोहंडीगुड़ा क्षेत्र के आदिवासी किसान अपनी जमीनों को बचाने के लिए जान की बाजी तक लगाने को तैयार दिखाई दे रहे हैं। वे सरकार से गुहार लगा रहे हैं कि उन्हें उनकी हालत पर छोड़ दे और सरकार उनके 'विकास' की चिंता ना करे।

बोधघाट की चर्चा किये बिना लोहंडीगुड़ा क्षेत्र के लोगों के 'विकास' की कहानी अधूरी ही रह जायेगी। दशकों पुरानी बहु उद्देश्यीय बोधघाट परियोजना को हाल ही में पर्यावरण मंत्रालय ने पुन: मंजूरी दे दी है। 60 के दशक की शुरूआत में इसे 250 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से मंजूर किया गया था। 50 करोड़ रुपये की रकम खर्च भी की गई थी। सातधारा के पास इंद्रावती नदी पर पुल बनाया गया और कुछ क्वार्टर्स व कार्यलाय बनाये गये। इन्द्रावती नदी पर गांव के पास प्रस्तावित इस बांध से लोहंडीगुड़ा, मर्दापाल एवं कुदुर इलाके के 42 गांव डूब जायेंगे। बांध में उसकी पूरी क्षमता के अनुसार पानी भर जाने से चित्रकूट जलप्रपात सिर्फ 6 फीट का रह जायेगा। लोहंडीगुड़ा जनपद के कुल 40 पंचायतों में से 14 पंचायतों के गांव जिसमें घाटी के नीचे के 8 एवं इंद्रावती के दूसरी छोर पर स्थित 6 पंचायत शामिल हैं, पूरी तरह विस्थापित होंगे।

80 के दशक के आखिर में प्रभावित गांवों के आदिवासी किसानों ने बांध विरोधी आंदोलन तेज किया था। जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण मंत्रालय को इस परियोजना की मंजूरी रद्द करनी पड़ी थी। इसके चलते बांध निर्माण कार्य लंबित रहा। बोध घाट बांध विरोधी संघर्ष के स्थानीय नेताओं में से एक राम सिंह कश्यप की सन् 1991 में पुलिस की पिटाई से मौत हुई थी। रामसिंह को नक्सलियों का समर्थक कहकर उनके अपने घर में ही पीट-पीट कर अधमरा करके पुलिस वाले चले गये थे। हर्राकोडेर गांव के तत्कालीन सरपंच जैसे बड़े पूंजीपतियों के दलाल उनके संयंत्र खुलवाने वाले हैं। इसलिए उन्हें बिजली एवं पानी उपलब्ध करवाने की नीयत से सरकार इस परियोजना को फिर चालू कर रही है। जिसका बजट अब पहले से बढ़ा कर 3600 करोड़ रूपये कर दिया गया है। पर्यावरण मंत्रालय से जंगल की हरियाली को खत्म करने की हरी झंडी मिलने के बाद अब बारी है जमीन अधिग्रहण और गांवों को तबाह करने की। इस परिपेक्ष्य में बोधघाट बांध विरोधी संघर्ष फिर पैदा हो रहा है। टाटा विरोधी संघर्ष और बांध विरोधी संघर्ष मिलकर जनता का सयुंक्त मोर्चा मजबूत एवं जुझारू संघर्ष का अगर निर्माण करता है तो सरकार को इन परियोजनाओं से निश्चित ही पीछे हटने पर मजबूर होना पड़ेगा। ✭

(दैनिक समाचार पत्र 'छत्तीसगढ़' से साभार)

ikdfrd l1lk/uk ij turk dk vf/dkj gk

माइनिंग माफिया टाटा-एस्सार को बस्तर से मार भगाओ !
संशोधनवादी भाकपा की समझौतावादी नीति की पोल खोलो !!
समझौताविहीन संघर्ष के रास्ते पर आगे बढ़ो !!!

बस्तर के सर्वांगीण विकास के नाम पर यहां मौजूद संसाधनों जैसे लौह अयस्क, इमारती लकड़ी, चूना पत्थर, टीना, कोरंडम, नदियों का जल आदि के दोहन करने की साजिश लुटेरे सामंती, दलाल पूंजीवादियों की केन्द्र व राज्य सरकारें कर रही हैं। विकास के नाम पर बड़े-बड़े बांधों का निर्माण, खदानों की खुदाई, इस्पात संयंत्र, कारखाने, पाईप लाइन बिछाना, बिजली घर, रेल लाईन व सड़कों का निर्माण, विशेष आर्थिक क्षेत्र (सेज) आदि योजनाओं से अभी तक लाखों आदिवासियों को व अन्य गरीब जनता को घर-गांव से उजाड़ दिया गया है। दरअसल हमारी पार्टी के नेतृत्व में चल रहे क्रांतिकारी किसान आंदोलन को कुचलने के लिए बड़े पैमाने पर सुधार एवं दमन नीति शोषणकारी शासन द्वारा अपनाई जा रही है। सुधार योजनाओं के अंतर्गत विकास के नाम पर सरकार सड़क, टेलीफोन नेटवर्क, संचार व्यवस्था के विस्तार पर जोर दे रही है। साम्राज्यवादियों द्वारा निर्देशित नीतियों को लागू करते हुये निजीकरण को बढ़ावा देते हुये टाटा, एस्सार जैसे दलाल पूंजीपतियों की कंपनियों को बैलाडिला खदान के डिपाजिट नंबर 1-2 को सस्ते दामों पर लीज पर दे रही है। दूसरी ओर सैकड़ों करोड़ों रुपये खर्च कर दल्ली राजहरा-जगदलपुर रेल लाइन का निर्माण कार्य भी शुरु कर दिया है। इन सारी परियोजनाओं से बस्तर का सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक नुकसान होगा। बैलाडिला खदान की खुदाई से जल प्रदूषण से शंखनी नदी तो पूरी तरह अपना अस्तित्व ही खो रही है। लाल नदी बनकर रह गई है। जिससे मनुष्य तो क्या पशुओं के लिए भी पानी पीना बीमारियों को बुलावा है। राष्ट्रीय खनिज विकास निमग (एनएमडीसी) जो दलाल शासकों का हितकारी है, ने आदिवासियों के विकास का कोई भी काम नहीं किया है। हर वर्ष 35 मिलियन टन लौह अयस्क बैलाडिला से दोहन कर 2450 करोड़ से भी ज्यादा लूट रहा है। परन्तु इन्हें 40 वर्ष बाद क्षेत्र के आदिवासी याद आ रहे हैं, केवल मुनाफे का 3 प्रतिशत देकर क्षेत्र के विकास की बात कर रहा है। यह लीपापोती के अलावा कुछ नहीं है। बड़े अफसर, मंत्री, नेता ही इस खदान से ज्यादा फायदा उठा रहे हैं। बड़े व्यापारी पापाचान, अमरिक सिंह जैसे ठेकेदार बेतहाशा लूट कर रहे हैं। क्षेत्र में चल रहे क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलने के लिए एनएमडीसी बीजापुर-गंगालूर सड़क के निर्माण लिए साढ़े सात करोड़ रुपये और अरनपुर-जगरगुंडा सड़क निर्माण के लिए ढाई करोड़ रुपये दे रहा हैं। एस्सार व टाटा कंपनियां सलवा जुडूम के नेताओं को विशेषकर महेन्द्र कर्मा, केदार कश्यप, बलीराम कश्यप को करोड़ों रुपये दे रही हैं। ये नेता आदिवासियों के नरसहांर के लिए, उन पर हुये अत्याचार और उनके विस्थापन के लिए जिम्मेदार हैं।

अतः बस्तर के आदिवासी किसानों, नौजवानों, छात्रों, मजदूरों, शिक्षकों को सोचना चाहिए कि बस्तर के विकास के हामी कौन हैं? विकास के नाम पर आदिवासियों के सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक जीवन को तबाह कौन कर रहे हैं? चाहे एनएमडीसी हो, एस्सार हो, टाटा जैसे दलाल पूंजीपति हों, इनके द्वारा प्रस्तावित उद्योग नगरनार, धुरली, लोहंडीगुड़ा से बस्तरियों का होगा विनाश और सेठ-साहुकारों, व्यापारी, नेताओं, अफसरों का होगा विकास। यह हम पिछले साठ साल के इतिहास में देख सकते हैं।

भाकपा नेता गुरूदास दासगुप्ता ने अपने बस्तर प्रवास के दौरान यही कहा कि टाटा, एस्सार के वो विरोधी नहीं हैं, केवल उपजाऊ जमीन पर ऐसे उद्योग ना लगाये जायें इस पर उनका विरोध है। इस तरह साफ हो जाता है वह मजदूरों की पार्टी है या पूंजीपतियों की हीतैषी। इस तरह से देखा जाये तो भाकपा भी मौलिक रूप से विदेशी साम्राज्यवादियों व उनके दलाल यहां के टाटा, एस्सार, जिंदल, रिलायंस जैसे पूंजीपति घरानों को भारत की मेहनतकश जनता का दुश्मन नहीं मानती। इसके अलावा वह कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार को बाहर से समर्थन दे रही है। केन्द्र सरकार द्वारा भूमंडलीकरण-उदारीकरण-निजीकरण की नीतियों को लागू करने में भाकपा-माकपा भी अपने दिखावे के साथ बराबर की हिस्सेदार है। पश्चिम बंगाल की वामपंथी सरकार द्वारा इंडोनेशिया के सलीम ग्रुप को विशेष आर्थिक क्षेत्र के नाम से खेती जमीन सोंपे जाने का नंदीग्राम के किसान जायज विरोध कर रहे थे। वामपंथी सरकार ने बेगुनाह किसानों को गोलियों से भूना था। ज्ञात रहे कि सलीम ग्रुप वही कंपनी है जिसने इंडोनेशिया में 1960 के दशक में कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं के सामूहिक कत्ल में सक्रिय भूमिका निभाई थी। उसी हत्यारी कंपनी के लिए बंगाल की वामपंथी सरकार लाल कालीन बिछा रही है।

हम नीतिगत तौर पर टाटा, एस्सार, जिंदल, रिलायंस जैसे बड़े उद्योगों को भारत की मेहनतकश जनता का दुश्मन मानते हैं। ये पूंजीपति बिना शक विदेशी साम्राज्यवादियों के दलाल हैं। वैश्वीकरण की नीति इनके फायदे के लिए बनाई गई है। भारत में इसका प्रणेता तो मनमोहन सिंह ही है। इस निजीकरण नीति के चलते आज हजारों छोटे-बड़े उद्योग बंद हो गये हैं। 50 लाख से ज्यादा मजदूर नौकरियां खो कर बेकार हो गये हैं। देश में बेरोजगारी, भूखमरी, बेकारी बढ़ती ही जा रही है। महंगाई तो आकाश को छू रही है। किसान प्रतिदिन आत्महत्या कर रहे हैं। हथकरघा उद्योग चौपट होकर कारीगर आत्महत्या कर रहे हैं। मंहगी शिक्षा से छात्र स्कूल-कालेज छोड़ने पर मजबूर हैं। ये सारी नीतियां केन्द्र सरकार-राज्य शासन चाहे भाजपा का हो वामपंथियों का या कांग्रेस का सभी एक सुर में सुर मिलाकर लागू कर रहे हैं, विरोध तो केवल दिखावटी है। यही उनकी चुनावी रणनीति है, इसके अलावा कुछ भी नहीं। इसलिए हम टाटा, एस्सार द्वारा

प्रस्तावित तथाकथित विकास योजनाओं का विरोध सख्ती से कर रहे हैं। यह जनविरोधी बड़े पूंजीपति, बस्तर के खनिज तथा उपजाऊ जमीन को हड़पने की रणनीति के अंतर्गत निशुल्क स्वास्थ्य शिविर, सामुदायिक भवन निर्माण, दुकानों का समुदाय, सड़क निर्माण आदि योजनाओं के माध्यम से गांव में घुसने का प्रयास कर रहे हैं। इनका मुख्य लक्ष्य जनता को गुमराह कर बस्तर की खनिज संपदा को लूटना है। बस्तर के दलाल नेता महेंद्र कर्मा, बलिराम कश्यप बस्तर के दलाल व्यापारीगण जनता को डरा ध मका कर व पुलिस दमन का सहारा लेकर विकास के नाम पर यहां उद्योग स्थापित कर दलाल पूंजीपतियों के हित में बस्तर के जन-जीवन को तबाह कर रहे हैं।

दरअसल बस्तर की 90 प्रतिशत से ज्यादा जनता खेती पर निर्भर है। सिंचाई के नाम पर दंतेवाड़ा में 2 प्रतिशत ही सिंचित जमीन है। बाकि जमीन वर्षा पर निर्भर है। सरकार का स्वास्थ्य, शिक्षा पर भी कोई ध्यान नहीं है। किन्तु दमनकारी पुलिस विभाग पर 550 करोड़, राष्ट्रीय राजमार्ग पर 405 करोड़, संचार नेटवर्क पर अरबों रुपये खर्च कर रही है। ये सभी योजनायें बस्तर की जनता की बुनियादी समस्याओं, शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, रोजगार आदि का हल करने वाली नहीं है।

केवल खेती व वनोपज पर आधारित छोटे-मंझोले उद्योग स्थापित कर, सिंचाई से फसल का उत्पादन बढ़ाते हुये ही बस्तर की जनता के जीवन स्तर में सुधार लाया जा सकता है। विकास का रास्ता इसी तरीके से आगे बढ़ता है। यह काम शोषणकारी, दलाल पूंजीवादी, सामंतवादी शासन नहीं कर सकता। केवल नव जनवादी क्रांति ही ऐसी अर्थव्यवस्था का निर्माण कर सकती है जिसमें मेहनतकश वर्गों का सही विकास हो सकेगा। नव जनवादी अर्थव्यवस्था ही रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा-स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाओं की गांरटी कर सकती है। और सरकार के तथाकथित विकास योजनाओं के उलट सही विकास कर सकती है। ऐसी अर्थव्यवस्था के निर्माण के लिए जरूरी है गांव-गांव में जनताना सरकार (क्रांतिकारी जन कमेटी) गठित हो, जो अपने इलाके के संसाधनों से होने वाली आय, टैक्स को अपने ही इलाके के विकास के लिए लगाये। अपनी खेती का विकास करें और उस पर आधारित छोटे-मझोले कारखाने लगायें। जाहिर सी बात है दलाल नौकरशाह व सामंतवादियों की यह साम्राज्यवाद ग्रस्त सरकार ऐसा नहीं होने देना चाहती। ऐसे जन विकास के मॉडल को अमल में लाने के लिए, अपनी क्रांतिकारी जन कमेटी (जनताना सरकार)को बचाने के लिए हमें जन सेना की जरूरत है।

शहीद भगत सिंह ने कहा था कि ''अगर कोई सरकार उसकी जनता को उसके बुनियादी अधिकारों से वंचित रखती है तो उस देश के नौजवानों का अधिकार ही नहीं बल्कि कर्तव्य भी बन जाता है कि ऐसी सरकार को जड़ से उखाड़ फेंके'' देश के नौजवानों, बस्तर की युवा पीढ़ी, छात्र, तमाम मेहनतकश जनता का आज कर्तव्य बन जाता है कि अपने चहुमुखी विकास के लिए बड़े पैमाने पर पीएलजीए में भर्ती होकर सरकार को उखाड़ फेंक कर अपनी जनताना सरकार का निर्माण करें - उसकी रक्षा करें। छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में विकसित करें और दण्डकारण्य को सामंतवादियों, साम्राज्यवादियों व दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों के शोषण से मुक्त कराकर मुक्तआंचल में विकसित करें। यही एक मात्र अपने इलाके, अपने देश का विकास करने का रास्ता है। सभी मेहनतकश जनता को इसी पर आगे बढ़ना होगा। ✯

cLrj e ykg v;Ld d u; HkMkj
lkekT;okfn;k o nykyk dh fx¼nf"V!

खनिज भंडारों से संपन्न हमारे बस्तर के गर्भ में लौह अयस्क के नये भंडारों का पता चला है जिस पर दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों ने अपनी गिद्धदृष्टि जमा दी है।

छत्तीसगढ़ राज्य विकास निगम को रायगढ़ जिले के गारे पेलमा सेक्टर-1 में आवंटित कोल ब्लाक में प्रारंभिक गणना के मुताबिक लगभग 4000 मेट्रिक टन कोयले का भंडार होने का खुलासा हुआ है। सर्वेक्षण में बस्तर में लगभग 2 करोड़ टन लौह अयस्क का भंडार मिला है। दंतेवाड़ा जिले के बैलाडीला क्षेत्र के ग्राम कामालूर, गोंदापाल, पेण्डावार, मासेदी में लगभग 50 लाख टन भंडार पाया गया, जिसमें लौह तत्त्व की मात्रा 60 से 66 फीसदी तक बताई गई है। इसी तरह कांकेर जिले के गांव तोरोकी, तुमापाल तथा हुरतराई में डेढ़ करोड़ टन का भंडार मिला है जिसमें लौह तत्व की मात्रा 60 से 68 प्रतिशत बताई गई है। सरगुजा जिले के मैनपाट क्षेत्र के गांव पथराई (पश्चिम क्षेत्र) में प्रारंभिक गणना के अनुसार 90 हजार मेट्रिक टन बाक्साइट के भंडार होने के अनुमान है।

कबीरधाम जिले के सोहागपुर (उड़का) क्षेत्र के ग्राम खपरी, बनिया, लालपुर और बीरनपुर आदि में सीमेंट श्रेणी के चूना पत्थर के प्राकृतिक भंडारों का पता चला है। जिले के ग्राम बोदलपानी, सोनवाही तथा बंदरपानी में मेटल ग्रेड बाक्साइट के 29 लाख 80 टन के नये भंडार की पहचान की गई है।

राजनांदगांव जिले में सर्वेक्षण के अनुसार ग्राम दौरान, लिमोना तथा खेरबार में चूना पत्थर, ग्राम बासावार में सेन्डास्टोन, क्वार्टजाइट तथा ग्राम मागरकुंड में लौह अयस्क के क्षेत्र चिन्हित किये गये हैं।

सरकार की यह सारी खोजें दलाल पूंजीपतियों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिये की गई हैं ताकि राज्य में ज्यादा से ज्यादा पूंजीनिवेश हो सके। सरकार की इस नीति का भांडाफोड़ करना होगा और अपनी खनिज संपदा को बचाने व अपने विकास के लिये खुद ही इसे इस्तेमाल करने के लिये जनता को कमर कसनी होगी। ✯

frCcr dh turk viu Hkfo"; dk iQlyk [kn djxh!

1959 के तथाकथित विद्रोह की बरसी पर तिब्बत, भारत समेत दुनिया भर में एक साथ प्रदर्शनों और तोड़फोड़ की कार्रवाइयों का सिलसिला चल पड़ा। ल्हासा में आन्दोलनकारियों ने चीनी दुकानों, चीनी नागरिकों और पुलिस पर हमले किए। उनके वाहनों मे आग लगा दी। इस आन्दोलन पर चीन की सरकार ने भारी दमनचक्र चलाया। हिंसा भड़कते ही सेना ने शहर को घेर लिया। तिब्बत में हाल के विद्रोह का चीन के सत्ताधारियों ने क्रूरतापूर्वक दमन किया। यह तिब्बती लोगों का पिछले दो दशकों में अब तक का सबसे बड़ा विद्रोह था जिसका दमन कर करीब 80 तिब्बतियों की चीनी सरकार ने हत्या की (चीन का आधिकारिक आंकड़ा सिर्फ 16 है)। बीजिंग में ओलिंपिक खेलों के लिए जमावड़ा होने लगा था कि तिब्बत में शुरू हुए प्रदर्शनों के साथ-साथ दुनिया भर में, खासकर भारत में प्रदर्शनों का दौर चल पड़ा।

चीन में सत्ता में जब तक कम्युनिस्ट थे, उन्होंने तिब्बत को पूरी स्वायत्तता दी और उसकी संस्कृति और जनता की कद्र की, गुलामी जैसे लामा शासन के खिलाफ जनवादी बदलाव लाने की कोशिश की। 1952 में चीन की जन सरकार ने तिब्बत के साथ 17-सूत्रीय समझौता किया जिसमें सामंती शासन को रद्द करना, तिब्बत को स्वायत्तता की गारंटी देना और साथ ही बौद्ध धर्म का सम्मान करना आदि शामिल था। 1959 में दलाई लामा के नेतृत्व वाले सामन्ती तत्वों ने, जिन्हें अमेरिका और भारत का समर्थन प्राप्त था, इस बदलाव की प्रक्रिया में बाधा डालने के लिए विद्रोह करवाए थे (ज्यादातर रंगीन क्रांतियों की तरह जिनका हाल के वर्षों में कई देशों में मंचन किया गया)। जब उसे दबा दिया गया तो दलाई लामा और उसके 80,000 अनुयायी भारत भाग आए और वहां पर उन्होंने अमेरिकी और भारत सरकारों से मिले ढेर सारे पैसों से 'निर्वासित सरकार' गठन किया।

लेकिन जबसे नव पूंजीपतियों ने चीन में सत्ता पर कब्जा जमाया उन्होंने तिब्बती जनता को चीनी बहुसंख्यक हान (चीन की बहुसंख्यक राष्ट्रीयता) जनता में मिलाने की कोशिश की। चीनी जनता को लहरों की तरह तिब्बत में बसाया गया ताकि तिब्बतियों को अपनी ही सरजमीं पर अल्पसंख्यक बनाया जा सके। इसके तहत 1985 में 60,000 मजदूरों को तथा 1991 में 3 लाख चीनी लोगों को तिब्बत में बसाया गया। खिंघाई जैसे राज्य में जहां 25 लाख चीनी बसे हैं, वहां महज 8 लाख तिब्बती रह गए। चीन से तिब्बत का शासन करने वाला झांग खिंग उइघुर राष्ट्रीयता को कुचलने के लिए बदनाम है। वह पहले क्सिंजियांग उत्पादन और निर्माण कार्प्स नामक अर्द्ध सैनिक संगठन का मुखिया हुआ करता था जो अपनी स्वायत्तता के लिए आन्दोलन करने वाली जनजातीय उइघर जनता पर बीजिंग का शिकंजा कसने का काम करता था।

तिब्बती जनता के आत्मनिर्णय के अधिकार का पूरा समर्थन करने के साथ-साथ हमें तिब्बत के मामलों में अमेरिका की प्रत्यक्ष या सामन्ती दलाई लामा जैसे अपनी कठपुतलियों के जरिए दखलंदाजी का पुरजोर खण्डन करना चाहिए। पहले के कम्युनिस्ट शासन के दौरान अमेरिका ने इस कठपुतली का इस्तेमाल कर 1959 में सभी सामन्ती तत्वों को 'विद्रोह' के लिए भड़काया था। चीनियों द्वारा लाए गए समाजवादी बदलावों का प्रतिरोध करते हुए ये सामन्ती तत्त्व देश छोड़कर चले गए और भारतीय शासकों के समर्थन से तथा अमेरिका के भारी-भरकम पैसों से सामन्ती दलाई लामा की अगुवाई में अप्रवास में तथाकथित सरकार का गठन किया। कम्युनिस्ट शासन का नाश करने के लिए इन सामन्ती तत्त्वों का इस्तेमाल किया गया।

1970 के आखिर में जब चीन पूंजीवादी देश में बदल रहा था तो अमेरिका और दलाई लामा ने अपनी लफ्फाजी में थोड़ा बदलाव किया। लेकिन फिर एक बार इसमें जोर लगाया गया क्योंकि सिकुड़ते बाजारों के लिए साम्राज्यवादी ताकतों के बीच स्पर्धा बढ़ने लगी है। जबकि चीन दुनिया भर के बाजारों पर हावी होता जा रहा है, बुरे आर्थिक संकट में फंसा हुआ अमेरिका इस बढ़ोत्तरी पर अंकुश लगाने के लिए आक्रमक ढंग से आगे बढ़ रहा है। इसलिए, पिछले एक साल से अमेरिका इस सामन्ती कठपुतली, दलाई लामा को सक्रियता से बढ़ावा दे रहा है, जबकि पश्चिमी देश इसकी मदद कर रहे हैं। सबसे पहले जर्मनी की चान्सलर और बाद में खुद अमेरिका का राष्ट्रपति और हालिवुड के सितारे इसके ढोल बजाने लगे हैं। अब इस तिब्बती संकट के बीचोबीच अमेरिका की प्रतिनिधि सभा के स्पीकर (अमेरिका में राष्ट्रपति और उप राष्ट्रपति के बाद सबसे ताकतवर शख्स) 21 मार्च को उड़कर भारत आया और दलाई लामा से उसके धर्मसाला स्थित मुख्यालय में मिला। इस बैठक के बाद प्रधानमंत्री से बैठकें कीं ताकि तिब्बत पर अमेरिकी एजेंडे को आगे बढ़ाया जा सके। ब्रितानी प्रधानमंत्री ने भी घोषणा की कि वह मई में दलाई लामा से मिल रहे हैं। ये विरोध प्रदर्शन बीजिंग ओलिम्पिक्स की पूर्व संध्या पर सामने आए जिसे कि चीनी पूंजीपति एक बड़े व्यापार के रूप में ले रहे थे। अमेरिका के हालिवुड के सितारों ने ओलिम्पिक्स के बहिष्कार का भी आह्वान दिया।

भारत हमेशा तिब्बती साजिशों का प्रमुख केन्द्र रहा है। धर्मशाला विदेशी पैसों से चलने वाले सैकड़ों गैर-सरकारी संगठनों का अड्डा बना हुआ है। उन्होंने दलाई लामा को बढ़ावा दिया और विशाल तिब्बती समुदाय का तुष्टीकरण किया। हाल की अशांति के दौरान भी तिब्बत पर अखिल पक्षीय संसदीय फोरम ने, जिसमें संसदीय 'कम्युनिस्टों' को छोड़कर सभी पार्टियां शामिल थीं, चीनियों का खण्डन किया। भारतीय मीडिया चीन-विरोधी दृष्टिकोण को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहा है जबकि सरकार खुले तौर पर आक्रामक तेवर नहीं दिखा रही है क्योंकि आज चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापार सहयोगी बना हुआ है (अभी-अभी अमेरिका को पार कर दिया) और चीनी पूंजीपतियों के साथ शक्तिशाली लॉबियां व्यापार समझौतों में लिप्त हैं। दूसरी तरफ संसदीय कम्युनिस्ट तिब्बतियों के आत्मनिर्णय के अधिकार का विरोध कर रहे हैं ताकि नगा, कश्मीरी, मणिपुरी और असमी आन्दोलनों का विरोध किया जा सके।

भारत की जनता को चीनी सत्ताधारियों के बर्बर दमनचक्र का कड़े शब्दों में खण्डन कर तिब्बती जनता के आत्मनिर्णय के अधिकार का पूर्ण समर्थन करना चाहिए। इसके साथ-साथ, तिब्बत के मामलों में अमेरिकी और भारतीय सरकारों की दखलंदाजी का मजबूती से विरोध करना चाहिए। अमेरिका को दुनिया भर में और दक्षिण पूर्व एशिया में अपने भू-राजनैतिक दाव खेलने के लिए भारत की धरती का इस्तेमाल करने की इजाजत कतई नहीं देनी चाहिए। दलाई लामा और अमेरिका की तमाम कठपुतलियों को देश से मार भगा देना चाहिए और उन लोगों को मिल रही तमाम विशेष सुविधाएं तत्काल रोक देनी चाहिए। तिब्बती जनता को, दुनिया की किसी भी दूसरी राष्ट्रीयता की तरह अपने भविष्य का फैसला खुद करने का अधिकार है। ✯

xMfpjkyh turk ij ifyl&i'kklu vkj U;k;ky; dk yxkrkj c<rk neu

मानवाधिकार संस्थाओं ने बांधी अपनी आंखों पर पट्टी

भारत में अंग्रेजी राज्य के समय किस थाने की पुलिस जनता के प्रति कितनी क्रूर है? कौन सा पुलिस अधिकारी जनता की कितनी क्रूरता से पिटाई करता है? कितना ज्यादा उस पर अमानवीय अत्याचार करता है? यह उसकी सरकार के प्रति कर्तव्यनिष्ठा का परिचायक होता था। अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी भारतीय पुलिस की कर्तव्यनिष्ठा का परिचायक उसकी दरिंदगी अभी भी बनी हुई है, उसमें भी महाराष्ट्र पुलिस तो और भी आगे बढ़-चढ़ कर है। उसके जनविरोधी कार्य तब और भी निरंकुश हो गये हैं जब सरकार का, न्यायालय का उसे व उसके जन विरोधी कामों को पूरा समर्थन प्राप्त है। मानवाधिकार आयोग पुलिस प्रशासन के अमानवीय कामों की ओर से आंख बंद किये हुऐ है। पत्रकार और समाचार पत्र पुलिस की हां में हां मिलाये हुए हैं। ऐसी स्थिति में दमन के खिलाफ अपनी आवाज उठाने के अलावा, दमन के खिलाफ जुझारू प्रतिरोध के अलावा कोई रास्ता भी नहीं बचा है।

2005 से लेकर 2007 तक गड़चिरोली कमांडो बलों ने झूठी मुठभेड़ों का तांता लगा दिया। झूठी मुठभेड़ों में 30 से ज्यादा गरीब निर्दोष आदिवासी जनता को घरों में सोते हुऐ पकड़कर या फिर जंगल में घूमते हुऐ उठाकर हत्या कर दी गई। समाचार पत्रों में छपवा दिया कि पुलिस व नक्सलवादियों के बीच हुई मुठभेड़ में 5-7-3-2...नक्सलवादियों को पुलिस ने मार गिराया। रंगामधम पेठा के दो दूध बेचने वालों की ताड़गांव के जंगलों में ले जाकर गोली मार कर हत्या कर दी और नक्सलवादियों के मरने की खबर छपवा दी गई। जनता ने बहुत शोरगुल मचाया लेकिन आखिर में पूरा मामला ठंडे बस्ते में चला गया। ऐसा ही वांगेतोरी में सुब्बाल कोवासी व रैनू की पुलिस द्वारा की गई हत्या के बाद हुआ जबकि 20 हजार से ज्यादा जनता ने पखांजूर में बड़ा मोर्चा निकालकर इसका पर्दाफाश किया था। मानवाधिकार आयोग, मीडिया इन सब मामलों पर अपने कानों में रूई डाल कर बैठा रहा। जनता आतंक के साये में जी रही है। झूठी मुठभेड़ों को अंजाम देने वाले कमांडो दरोगा मुन्ना ठाकुर, देवाजी कोवाची, चिन्ना वेंटा और मोतीराम जनता के बीच आंतक का पर्याय बने हुए हैं। महाराष्ट्र पुलिस जनता पर विभिन्न तरीके से दमन ला रही है।

महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आंदोलन कुछ ही इलाकों तक सीमित होने के कारण से दुश्मन अपनी पूरी ताकत से यहां के क्रांतिकारी आंदोलन को मटियामेट करने के लिये एड़ी-चोटी एक किये हुऐ है। हमारे संघर्ष का एरिया छत्तीसगढ़ और आंध्र लगा होने के कारण महाराष्ट्र सरकार बड़ी आसानी से हमारे निर्मूलन के लिये संयुक्त कार्यनीति के तहत संयुक्त कूंबिंग अभियान बड़ी संख्या में बलों के साथ और कई मर्तबा चलाती रहती है। महाराष्ट्र सरकार ने शुरू से ही हमारी पार्टी को खत्म करने के लिये पुलिस कमांडो बलों का गठन शुरू कर दिया था जो अब सुसंगठित रूप ले चुका है। पहले सी.-60 बाद में उसे एसटीएफ के रूप में बदल दिया गया है। दुश्मन के इस बल को गुरिल्ला युद्ध, जंगल वारफेयर का बेहतर प्रशिक्षण और आधुनिक हथियारों से लैस किया गया है। नजदीक-नजदीक पुलिस कैंप, कैंपों की अभेद्य सुरक्षा व्यवस्था, हमलों के लिये अलग और कैंप थानों की सुरक्षा के लिये अलग-अलग बलों का गठन किया गया है। हमारे कार्यक्षेत्र में 70 से ज्यादा पुलिस थाने और पुलिस कैंप हैं। किसी भी थाने में या पुलिस कैंप में कंपनी की संख्या से कम बल नहीं हैं। गड़चिरोली, धानोरा, भाम्रागढ़, प्राणहिता के रूप में कमांड का गठन कर दुश्मन हमारे व जनता के ऊपर समन्वय से हमले करते हैं। स्थानीय युवक-युवतियों को अपने बलों में भर्ती किये हुऐ हैं। स्थानीय होने के कारण भूभाग (टेरेन) पर इनकी अच्छी पकड़ है। दुश्मन ने अपने मुखबिर तंत्र को मजबूत किया है। बड़े पैमाने पर स्थानीय मुखबिरों को तैयार किया है। सी.आई.डी विभाग अलग से काम कर रहा है। पड़ोसी राज्यों से सूचना आदान-प्रदान, खुफिया जानकारी और दूसरे राज्यों की सीमा के में घुस कर हमला करने की छूट दुश्मनों को काफी मददगार साबित हो रही है।

गड़चिरोली पुलिस हमारी पार्टी और आंदोलन के खिलाफ दुष्प्रचार को युद्धस्तर पर चला रही है। पर्चों, पोस्टरों, समाचार पत्रों, पुलिस मेलावों और ग्राम भेंट के जरिये पार्टी के खिलाफ उसका विषवमन लगातार जारी है। इस कार्य में उसने जन विरोधी व्यक्तियों और गैर सरकारी संगठनों का बखूबी इस्तेमाल किया है। तथाकथित सुधार कार्यक्रमों को वह तेजी से अमल में ला रही है। ऐसा कर वह जनता के एक हिस्से को अपनी ओर कर पाने में सफल भी हो रही है। महात्मा गांधी टंटा मुक्त गांव समिति योजना पर वह बड़े योजनाबद्ध रूप से काम कर रही है। इससे एक तरफ तो वह सरकारी योजनाओं का प्रचार कर रही है तो दूसरी तरफ इसके द्वारा गांव-गांव में अपने दलाल तैयार कर रही है। ग्राम सुरक्षा समिति को इसके मातहत रख कर वह जन विद्रोह को कुचलने का काम भी कर रही है।

क्रांतिकारी पार्टी को खत्म करने के लिये पुलिस बलों ने युद्ध स्तर की तैयारी कर ली है। बख्तरबंद गाड़ियों और हेलीकाप्टर की व्यवस्था कर ली है जिसका लक्ष्य हमलों की जगहों पर सुरक्षित पहुंचना और सुरक्षित निकल जाना है। केन्द्र व राज्य सरकार ने हमारी पार्टी का सफाया करने के लिये भारी वित्तीय प्रबंध किया हुआ है। संघर्षरत इलाके का कोई गांव नहीं बचा है जहां के लोग जेल न गये हों। कोई ऐसा घर नहीं बचा है जहां के लोग पिटाई न खाये हों। कोई ऐसी पंचायत नहीं है जहां के लोगों की झूठी मुठभेड़ में हत्या न की गई हो। उस पर भी और दमन बढ़ाने के लिये केन्द्र सरकार सुरक्षा बलों की दो बटालियनें भेज रही है। 'सब कुछ खत्म कर दो, सब कुछ बर्बाद कर दो' की नीति पर

पुलिस का जंगल राज कायम है।

अपने आपको लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहने वाला मीडिया या तो चुप है या उसका मुंह बंद कर दिया गया है। या तो पैसे से या फिर 'देख लेने' की धमकी देकर। मीडिया उतना ही समाचार प्रसारित कर रहा है जितना उनको थाने से या फिर एसपी के बंगले से दिया जाता है। खुद को स्वतंत्र कहने वाले मीडिया को जनता पर हो रहे अमानवीय दमन और अत्याचार कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा है और न ही सुनाई दे रहा है। निर्भीक पत्रकारिता यहां के पत्रकारों के लिये बीते जमाने की बात हो गई है।

अपने को निष्पक्ष कहने वाली न्यायपालिका पुलिस द्वारा जनता पर ढहाये जा रहे अत्याचारों का खुल कर समर्थन कर रही है। मर्कानार (भाम्रागढ़) के चिन्ना मटामी की पुलिस द्वारा गोली मार कर हत्या कर दिये जाने पर भी न्यायालय ने पुलिस को कोई सजा नहीं दी और उन्हें उल्टे साफ बरी कर दिया। जबकि गरीब आदिवासी जनता पर झूठे मुकदमे दर्ज करने पर न्यायपालिका द्वारा मात्र तीन घटनाओं में ही, केवल पुलिस के बयान और गवाही पर 17 आदिवासी गरीब जनता को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है। - 1. किशोर सेड्मेके- हिन्देवाड़ा, 2. चेतु वड्डे-इरपानार, 3. कुटा वड्डे-दरवा, 4. कोपा माहका-कुचेर, 5. चैती धुर्वा-मलमपुडुर गांव, 2004 में ही टिप्रागढ़ एरिया के -1. रामसाय टेकाम, 2. रनवीर मंडावी, 3. मंगलू सोरी-सभी तेरेगांव, 4. मनीराम आचला-मर्कानार, 5. जयसिंह गावड़े - बोटेझारी गांव के तथा इसके अलावा कसनसूर एरिया से 2008 में 7 आदिवासी किसानों - 1. सनकू पोटावी - पोटावी जेवेली, 2. बंडू - घोडसूर, 3. पांडू, 4. खेदू, 5. साधू - कारका ग्राम, 6. मादी - पिपली बुर्गी, 7. बुदु - रेकानार।

इन सबको न्यायपालिका ने खुद अपने द्वारा तय नियम-कायदों को ताक पर रख कर आजीवन कारावास की सजा सुनाई है जो न्याय के इतिहास में कलंक के सिवाय कुछ नहीं है।

एक तरफ जनता पर भारी दमन और जुल्म तो दूसरी तरफ निश्चित सूचना मिलने पर, छापामार दस्तों का सफाया करने के लिये भारी संख्या में आकर दस्तों पर हमला कर रहा है। पड़ोसी राज्यों के पुलिस बलों के समन्वय से वह हमले के स्थान को शत्रु देश के हमले के स्थान में बदल दे रहा है। जनवरी 2008 से फरवरी 2008 तक यानि केवल दो ही महीनों में गड़चिरोली में पुलिस कमांडो बलों ने कुल 9 हमले किये जो निम्न है-

1. 2 जनवरी पेरिमिली एरिया के कचलेर ग्राम में, 2. 17 जनवरी वांगतोरी तोड़गट्टा फायरिंग, 3. 1 फरवरी माड़ पखांजुर फायरींग, 4. 12 फरवरी कसनसूर फायरिंग 5. 19 फरवरी पोटेगांव एरिया में फायरींग 6. 22 फरवरी दोबूर जंगल में फयरिंग, 7. सिरोंचा एरिया में फयरिंग 8. 23 फरवरी रसपल्ली जिम्मालगट्टा एरिया में, 9. 26 फरवरी इरपाढ़ोढ़री टिप्रागढ़ एरिया में फायरींग। इन हमलों में हमने अपने 7 कॉमरेडों को खो दिया जिसमें कॉमरेड समीर, कॉमरेड चैतु, कॉमरेड जग्गु, कॉमरेड राधा, कॉमरेड कुम्मे, कॉमरेड रजिता और कॉमरेड लालू। जबकि दो पुलिस कुत्ते की मौत मारे गये।

हमारी पार्टी के नेतृत्व में गड़चिरोली की जनता साम्राज्यवादी, सामंती तथा दलाल पूंजीपतियों की लूट के खिलाफ पिछले 28 सालों से लड़ रही है। लड़ रही है अपनी अस्मिता बचाने के लिये। अपनी वन संपदा, खनिज संपदा को साम्राज्यवादियों और दलाल पूंजीपतियों से रक्षा करने के लिये महासंग्राम छेड़े हुऐ है। साम्राज्यवादियों के इशारों पर ही दलाल शासक वर्ग गड़चिरोली की जनता पर भूखे भेड़िये के समान टूट पड़ा है। मानवीयता का, जनवाद का नकाब ओढ़े मानवाधिकार आयोग, मीडिया और न्यायपालिका सभी साम्राज्यवादियों की लूट के पक्ष में दलाल सरकार की दमनात्मक कार्रवाइयों के बारे में चुप्पी साधे हुए हैं। गाहे-बगाहे साम्राज्यवादी लूट को विकास कहकर राग अलाप रहे हैं। केवल भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) ही आदिवासी जनता के पक्ष में खड़ी है। दीर्घकालीन युद्ध के रास्ते पर चलते हुए यहां की जनता शासक वर्गों द्वारा थोपे गए इस अन्यायपूर्ण युद्ध को निश्चित रूप से हरा देगी। एक समय अंग्रेजी साम्राज्यवादियों के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजाने वाले वीर बाबू राव सड़िमेक के वारिस अब माओवादी गुरिल्ला युद्ध के नियमों के साथ लड़कर इस दमनचक्र को चकनाचूर कर देंगे। जनता की ताकत के सामने आज तक दुनिया की कोई भी प्रतिक्रियावादी ताकत नहीं टिक पाई है। महाराष्ट्र सरकार झूठी मुठभेड़ों, यातनाओं, जेल की सजाओं, झूठे विकास कार्यों, थानों/कैंपो की पुख्ता किलेबंदी से दमन के चाहे लाख हथकण्डे अपनाए, भाकपा (माओवादी) के मार्गदर्शन में यहां की लाखों शोषित जनता का समर्थन प्राप्त जनता की फौज - पीएलजीए सही दावपेंचों को अपनाकर अनमोल कुरबानियों से इस चौतरफा हमले को जरूर परास्त करेगी। देश-प्रदेश की जनवादी ताकतें इस जायज लोक संग्रम का जरूर समर्थन करेंगी। ★

iQth eBHkM d f[kykiQ cn lQy

18 मार्च को पामेड़ के पास कंचाल-दारेली के जंगल में आन्ध्र ग्रेहाउण्ड्स के द्वारा अंजाम दी गई फर्जी मुठभेड़ में 18 साथियों की शाहदत हुई। इस कोवर्ट आपरेशन में 2 निर्दोष ग्रामीणों की भी निर्मम हत्या की गई। 30 वर्षीय माड़ा के पिता हंदा और 28 वर्षीय हड़मा के चाचा भूसाराम ने दांतेवाड़ा में पत्रकारों से बातया कि उन दोनों को गांव से पकड़ कर गोली मारी गई है।

इस फर्जी मुठभेड़ के विरोध में 31 मार्च को बंद सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी के सचिव कॉमरेड कोसा व उत्तर तेलंगाना स्पेशल जोनल कमेटी के सचिव कॉमरेड चंद्रन्ना के द्वारा संयुक्त प्रेस विज्ञप्ति जारी करके बंद को सफल बनाने का आह्वान किया गया था। समूचे दण्डकारण्य में बंद सफल रहा। फर्जी मुठभेड़ के विरोध में जगह-जगह पर्चे, पोस्टर चस्पा दिये गये। पेड़ काटकर सड़क जाम किया गया जिसे सभी डिविजनों में वाहनों के पहिये थमे रहे। जगदलपुर-विशाखा के बीच रेल यातायत ठप रहा। भिलाई इस्पात संयत्र के महामाया खदान में लौह अयस्क का परिवहन पूरी तरह बंद रहा। महामाया खदान के मजदूर भी काम पर नहीं गये। पार्टी के आह्वान पर क्रांतिकारी जनता, जन मिलिशिया एवं जन संगठनों ने सक्रियता दिखायी और बंद को सफल बनाया। ★

ekVokMk jkgr f'kfoj e ^jkgr* dk lp !
ifr;k dh gbl gR;k] cPp g c/d !!

यह घटना है बीजापुर के माटवाड़ा यातना शिविर की जिसे सरकार सलवा जुडूम 'राहत शिविर' बोलती है। कैंप में लगभग तीन साल से रह रहे तीन ग्रामीण आदिवासियों की लाशें नदी किनारे रेत में दबी मिलीं। पुलिस दावा कर रही है कि इनकी हत्या माओवादियों ने की है। लेकिन मृतकों के परिवार वालों ने इन दावों को झुठलाते हुये कहा कि इन तीनों की हत्या पुलिस और एसपीओ ने की है। इसके साथ ही उनके 4 बच्चों को भी कैंप में बंदी बनाकर रखा हुआ है।

ये तीनों लाशें मड्डा मड़कामी, देवा मड़कामी और हिड़मा मंडावी की हैं। देवा मड़कामी के भाई बामन मड़कामी और पत्नी उंगी ने बताया कि गत 18 मार्च की शाम चार बजे जांगला थाने के एएसआइ पटेल और एसपीओ कोसा और फोटू शिविर में आये थे। उन्होंने चार ग्रामीणों को पकड़ा और हमारे सामने ही उनकी बेदम पिटाई की बाद में चारों को पकड़ कर अपने साथ ले गये। देवा के साथ मड्डा मड़कामी और हिड़मा मंडावी की लाशें भी नदी के किनारे रेत में गड़ी हुई मिली हैं। इनके साथ पकड़ कर ले जाये गये सोमड़ू कुड़ियाम को पुलिस मरा समझकर छोड़ कर चली गई थी। सोमड़ू कुड़ियाम और मृतकों की विधवाओं ने वनवासी चेतना आश्रम कवंलनार में पहुंच कर पत्रकारों को अपनी आपबीती सुनाई तो यह सच्चाई सामने आई। मृतकों की पत्नी आयते और हिड़मा ने बताया कि उनके पति की हत्या माओवादियों ने नहीं, पुलिस अधिकारी पटेल और एसपीओ फोटू व कोसा ने निर्मम तरीके से पीट-पीट कर की है। बचने में सफल हुये कुड़ियाम ने बताया कि भैरमगढ़ के थानेदार पटेल और 2 एसपीओ कोसा व फोटू कैंप में पहुंचे। इसके बाद हिड़मा मंडावी और देवा मड़कामी, मड्डा मड़कामी को घर से निकाल कर 100 मीटर दूर जंगल की तरफ ले गये एवं बेदम पिटाई करने लगे। कुड़ियम का कहना है कि उसे पुलिस ने पीट-पीट कर अधमरा कर दिया। डंडों के प्रहार से हिड़मा, देवा व मड्डा बेहोश हो गये, बेहोशी के बाद भी पुलिस के जवान उन्हें पानी डाल-डाल कर पीटते रहे। कुड़ियाम ने बताया कि वह जंगल का फायदा उठा कर वहां से भागने में सफल हुआ। कुड़ियाम की पीठ पर लाठियों के प्रहार से चमड़ी निकल गई है व उसका दाहिना हाथ टूटा हुआ है। मृतक की पत्नी उंगी का दर्द भी कम नहीं है। पुलिस वालों द्वारा उसके पति को उसके सामने ही बंदूकों के कुंदो से पीटते हुये ले जाया गया। जब उसने विरोध किया तो उसे भी बंदूक के कुंदों से पीटा गया।

तीनों मृतकों की विधवायें अब कैंप छोड़कर वनवासी चेतना आश्रम कवंलनार में शरण लिए हुई हैं। उन्हें वहां भी एसपीओ द्वारा धमकियां मिल रही हैं। वनवासी चेतना आश्रम के हिंमशू कुमार ने बताया कि उन तीनों को रानीबोदली हमले के लिये सूचना देने के आरोप में मारा गया है लेकिन ये लोग तो तीन सालों से कैंप में ही रह रहे थे। (ज्ञात रहे कि 15 मार्च 2007 को रानीबोदली पुलिस कैंप पर पीएलजीए ने हमलकर 55 पुलिस वालों का सफाया कर दिया था।)

सलवा जुडूम की दरिंदगी की शिकार हुई तीनों विधवाओं ने बिलासपुर हाईकोर्ट में याचिका दायर की है। याचिका हाईकोर्ट ने मंजूर कर ली है। उन्होंने थानेदार, 2 एसपीओ और सीआरपीएफ पर उनके पतियों को मौत के घाट उतारने का आरोप लगाया है। आयते और उंगी ने दायर याचिका में इस भीभत्स हत्याकांड की जांच सीबीआई से करवाने मांग की है।

अपने पतियों के हत्यारों को सजा की मांग करने वाली महिलाएं

विज्जे और आयते ने पुलिस महानिदेशक विश्वरंजन को आवेदन-पत्र लिखकर गुहार लगाई है कि पहले तो उनके पतियों को पुलिस ने मार डाला और अब पुलिस व एसपीओ ने उनके बच्चे 7 वर्षीय हड़मो तथा 5 वर्षीय ढोकलू और आयते के बच्चे 5 वर्षीय सुखमती और 3 वर्षीय मासे को बंधक बनाया हुआ है। जब जांच के लिये एसपी अंकित गर्ग उनका बयान लेने के लिये आये तो उन्होने अपने बच्चों को रिहा करने की मांग की थी तो एसपी अंकित गर्ग ने धमकाते हुये कहा कि जब तक तुम वापिस कैंप में नहीं आओगी उनको नहीं छोड़ा जायेगा। अब तीनों विधवायें कैंप की तरफ मुंह भी नहीं करना चाहतीं। उन्हें डर है कि घटना उजागर करने के कारण पुलिस और एसपीओ उन्हें भी मार डालेंगे।

सलवा जुडूम 'राहत शिविरों' में जनता कितनी यातनायें झेल रही है, आयते, विज्जे, कुड़ियाम चीख-चीख कर बता रहे हैं। वो बताते हैं कि ऐसा कोई दिन नहीं है जो पुलिस-एसपीओ-सीआरपीएफ की मनमर्जी के अत्याचार के बिना गुजरता हो। यह बात आज किसी से छुपी नहीं है कि राहत शिविरों में जनता अपनी मर्जी से नहीं बल्कि बंधक बनाकर रखी जा रही है। ✯

(एक दैनिक समाचार पत्र में छपी खबर के आधार पर)

rhu lky ckn [kyh vk[k !

lyok tMe ij lokPp U;k;ky; dk ^lokfy;k fu'kku* !\

सलवा जुडूम पर दायर एक जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान सर्वोच्च न्यायालय ने छत्तीसगढ़ सरकार के खिलाफ कड़ी टिप्पणी की। जनहित याचिका में राज्य सरकार पर नक्सल विरोधी आंदोलन के लिये हथियार मुहैया कराने का आरोप लगाया गया था। जुडूम से जुड़े लोगों को हथियार दिये जाने संबंधी आरोपों पर राज्य सरकार को कड़ी फटकार लगाई गयी है।

सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायमूर्ति के.जी. बालाकृष्णन और न्यायमूर्ति आफताब आलम की बेंच ने छत्तीसगढ़ में नक्सलियों के खिलाफ चलाये जा रहे सलवा जुडूम अभियान पर अपनी टिप्पणी में कहा ''आप (राज्य सरकार) किसी (नागरिक) को हथियार देकर जान से मारने की अनुमति नहीं दे सकते।'' बेंच ने यह भी कहा कि किसी तटस्थ एजेंसी को इस बात की जांच और आंकलन करना चाहिये कि क्या लोग जुडूम शिविरों से अपनी मर्जी से जुड़ रहे हैं। गृहमंत्री राम विचार नेताम ने सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का पूरी तरह पालन किये जाने की बात पत्रकारों के सामने कही। दिल्ली में प्रोफसर नंदिनी सुंदर, इतिहासकार रामचंद्र गुहा, पूर्व सचिव ई.ए.एस. शर्मा एवं अन्य बुद्धिजीवियों ने यह याचिका दायर की थी।

हमारी पार्टी सलवा जुडूम 'राहत शिविरों' को शुरू से ही बंदी शिविर कहती आ रही है। दरअसल आदिवासियों को अपने जल-जंगल-जमीन से बेदखल करके सड़क किनारे, कैंपो-थानों के बगल में रणनीतिक बसाहाटों में धकेलने की साजिश ही सलवा जुडूम है। दण्डकारण्य के गांवों में आकार लेती जन राजनीतिक सत्ता को कुचलने एवं दण्डकारण्य के गांवों में जमीन एवं संसाधनों को दलाल पूंजीपतियों, साम्राज्यवादियों के हवाले करना ही इसका असली मकसद है। सलवा जुडूम के चालू होने के लंबे समय बाद (2 साल 10 महीनों) ही सर्वोच्च न्यायालय की आंख खुली है। और उस पर सवालिया निशान लगाया है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक अभी 23 शिविरों में 48 हजार लोगों को रखा गया है। यह सर्वविदित है कि इनमें से अधिकांश लोगों को (जन विरोधी एसपीओ को छोड़कर) उनके गांवों से जबरिया ले जाया गया है।

सर्वोच्च न्यायालय की सिफारिश पर गठित जांच दल ने सलवा जुडूम के प्रभावित इलाकों में मई-जून महीने मे दो दफे दौरे किए। इस जांच दल में ज्यादातर आइपीएस अधिकारी ही हैं और इन्होंने सैकड़ों पुलिस व अर्ध सैनिक बलों की सुरक्षा में 'राहत शिविरों' का चक्कर लगाने तक ही खुद को सीमित रखा। इस दल पर दो बार पीएलजीए के बलों द्वारा गोलीबारी करने का नाटक भी रचा गया जिसका पार्टी की स्पेशल जोनल कमेटी ने खण्डन भी किया। सरकार द्वारा संचालित 'राहत शिविरों' में जाकर एसपीओ और जुडूम के सरगनाओं से बात कर वापस जाने वाला यह दल क्या रिपोर्ट बनाकर पेश करेगा इसका अंदाजा लगाना आसान है। कुल मिलाकर यह सब ढकोसले के अलावा कुछ नहीं है। अगर कोई सलवा जुडूम की असलीयत जानना चाहता है तो माटवाड़ा, चेरपाल के 'राहत शिविरों' के ताजतरीन उदाहरण काफी हैं। सर्वोच्च न्यायालय की 'फटकार' महज खानापूर्ति है क्योंकि बस्तर से लेकर दिल्ली तक हर जनवाद पसंद इन्सान सलवा जुडूम का विरोध करने लगा है। सलवा जुडूम का अंत भी सर्वोच्च न्यायालय के दिखावटी फटकारों से नहीं, बल्कि जनता के जुझारू प्रतिरोधी संघर्षों से होगा- उसके समर्थन में देश के कोने-कोने में जनवादी शक्तियों द्वारा उठाई जा रही बुलन्द आवाजों से होगा।

निर्दोष लोगों को निशाना बनाता है सलवा जुडम : जान पैटनर

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन 'हूमन राइट्स वॉच' ने सलवा जुडूम को सरकारी, सैन्य, पुलिस के सहयोग से चल रहा अभियान बताया है और इसके तरीकों की निंदा की है।

15 जुलाई 2008 को सलवा जुडूम पर रिपोर्ट जारी करते हुये हूमन राइट्स वॉच की जान पैटनर ने बीबीसी को दिये इंटरव्यू में कहा कि "छत्तीसगढ़ में माओवादी प्रभावित इलाके में उनसे निपटने के लिए पुलिस, अर्ध सैनिक बलों द्वारा मानवाधिकारों का दुरपयोग हो रहा है। सलवा जुडूम का शांति अभियान पूरी तरह सरकारी सैन्य, पुलिस के सहयोग से चलने वाला अभियान है। कबीलाई मिलिशिया का यह अभियान अब नियंत्रण से बाहर हो गया है।''

उन्होंने एक सवाल का जवाब देते हुये कहा कि सलवा जुडूम वाले निदोष लोगों को निशाना बनाते हैं। पुलिस, सैन्य बलों को लोगों को मारते हुये, महिलाओं से बलात्कार करते हुये, हजारों लोगों को जबरन घरों से खदेड़ते

मुख्यमंत्री बना फोर्स कमांडर !!

नक्सलियों से मोर्चा लेने के लिये तैनात फोर्स की कमान अब मुख्यमंत्री रमन सिंह के हाथ में रहेगी। इसके लिये यूनीफाइड कमांड बनाई जायेगी। इसमें प्रदेश के आला अफसरों के साथ फोर्स के प्रतिनिधि भी शामिल होंगे। कमांड आपरेशनों की मॉनीटरिंग करने के अलावा सरकार और फोर्स के बीच समन्वय का काम करेगी।

नक्सलियों पर लगाम कसने के नाम पर केंद्र ने प्रदेश को अब तक 17 बटालियनें दी हैं। सभी अलग-अलग मोर्चे पर तैनात हैं। इन्हें गृह मंत्रालय के सीधे नियंत्रण से हटाकर अब कमान रमन को सौंप दी गई है। इसमें रमन सिंह के साथ डीजीपी विश्वरंजन, गहृमंत्री रामविचार नेताम, प्रमुख सचिव, गृह सचिव एवं फोर्स के अधिकारी शामिल रहेंगे।

हुये देखा गया है। इस कारण से अब तक 1 लाख लोगों को अपने घरों और अपनी रोजी-रोटी से हाथ धोना पड़ा है। 3 साल पहले शुरू हुआ यह अभियान अब नियंत्रण से बाहर हो गया है।

जनता को खाना नहीं – सलवा जुडूम नेताओं के लाखों के वारे-न्यारे!

खेत-खलिहान, घर-बार गांवो को राख के ढेर में तब्दील कर सलवा जुडूम के गुंडों ने आम जनता को यातना शिविरों में बंदी बना रखा है। सलवा जुडूम के नता एक तरफ करोड़ों रूपये के घोटाले कर रहे हैं तो दूसरी तरफ 'राहत शिविरों' में यातना भोग रही जनता को दो जून का खाना भी नसीब नहीं हो रहा है। जेगुरगोंडा 'रहात शिविर' की सच्चाई किसी से छुपी हुई नहीं है जहां 4000 से ज्यादा जनता कई-कई महीनों तक बिना नमक-मिर्च केवल दाल के ऊपर गुजारा कर रही है। अर्ध सैनिक बलों के आंतक के साये में ना राशन पहुंचता है ना ही कोई मजदूरी मिलती है।

जेगुरगोंडा में राशन पानी की सप्लाई लाइन जन मिलिशिया ने जनता के लिए नहीं काटी हुई हैं बल्कि जनता के नाम पर राशन-पानी डकारने वाले पुलिस, अर्ध सैनिक बलों, सलवा जुडूम गुंडों के लिए काटी हुई है। जनता के लिये राशन न पहुंचने के लिए सलवा जुडूम के नेता ही जिम्मेवार हैं जिन्होंने उसे उसके गांवो से बाहर निकाल कर अपनी ही सरजमीं पर शराणर्थी बनाया और करोड़ों रुपयों के घोटाले कर बड़ी-बड़ी कारें, ट्रैक्टर, मोटरसाईकल खरीद रहें हैं। सरकार की तरफ से शिविरों के लिए आने वाले पैसे से शहरों में अपने लिए मकान बना लिए हैं। सोयाम मूका जैसे सलवा जुडूम नेता जो सलवा जुडूम फासीवादी सैनिक-सांगठनिक अभियान शुरू होने से पहले साईकलों पर घूमते थे आज मोटरसाईकलों, कारों में घूम रहे हैं। महेंद्र कर्मा को टाटा, एस्सार जैसे दलाल पूंजीपतियों से करोड़ों की रकम मिल चुकी है।

'राहत शिविरों' के लिए सरकार से मंजूर हुये 4 करोड़ 76 लाख रूपये का शिविरों में रहने वाले लोगों को अता-पता भी नहीं है कि कहां से आये कहां चले गये। जेगुरगोंडा पंचायत के लिए 24 लाख, कुदेड़ पंचायत के लिए 54 लाख, तारलागूड़ेम के लिए 5 लाख, अरनपुर के लिए 5 लाख, डबरी बनाने के लिए 4 लाख, वन-जंगल के नाम पर 2.50 लाख, तालाब के लिए 2.50 लाख रुपये आय थे लेकिन इन कामों की बजाये सारा पैसा सलवा जुडूम के भ्रष्ट नेताओं की जेबों में चला गया। सलवा जुडूम के नेता सरकारी पैसे से घोटाले कर व दलाल पूंजीपतियों से मिलने वाले चंदे, दलाली से करोड़ों की पूंजी जमाकर ऐश कर रहे हैं।

पुलिस व एसपीओ ने मिल कर लूटे घर

दोरनापाल एरिया में 10 दिसंबर 2007 को चिंतागुफा थाने की पुलिस जब बदली होकर दूसरे थाने में जा रही थी तो गांव तेगेवाड़ा में जबर्दस्ती घुस गई और उत्पात मचाया। घरों में से लगभग 26 बकरे और 12 मुरगों को काट कर खा गये।

बिक्रमगांव पर जुडूमियों का हमला

जेगुरगोंडा एरिया के नागाराम एलओएस एरिया के बिक्रम गांव पर 28 दिसंबर 2007 को सीआरपीएफ, एसपीओ मिलकर हमला किया, जहां जो कुछ मिला नष्ट कर दिया और संपत्ति को लूट कर ले गये। जनता के द्वारा गुंडों से छुपाकर जंगल में रखे अनाज भी उनकी नजर मे चढ़ गया और 20 जगहों पर किये अनाज के डंप को लूट लिया, इसके साथ-साथ 10 बकरियां, 55 मुर्गे-मुर्गियां, 1 सुआर को भी पकड़ कर ले गये। एक घर में खून-पसीना एक कर कमाये गये 15,000 रुपयों को भी उन्होंने लूट लिया। सलवा जुडूम के कारण जनता गांव को छोड़कर जंगलों में शरण लेने पर मजबूर हो गई है। लेकिन जनता हिम्मत के साथ सलवा जुडूम का मुकाबला कर रही है।

कसलपाड़ गांव में पुलिस की लूट-पाट

4 फरवरी 2008 को दोरनापाल एरिया के गाव कसलपाड़ में चिंतागुफा की पुलिस के 90 जवान आकर 25 मुर्गो, उनके अंडो के साथ जनता की 10 बोतल शराब को घरों से लूट कर ले गये। एक महिला को पकड़ कर अपने साथ ले गये।

इस से पहले ऐसे ही होन्देर गांव में भेज्जी पुलिस ने किया। 27 जनवारी 2008 को एसपीओ के साथ मिलकर 3 बकरियें, 15 मुर्गों व 30 हजार रुपयों को लूट कर ले गये। एक घर से 15 लीटर गारे का तेल व कुछ सोना-चांदी लूट कर भेज्जी थाने में ले गये। ★

डिलमिली क्षेत्र के लोगो, हो जाओ होशियार! आ रहा है विस्थापन का दानव!!

राष्ट्रीय खनिज विकास निगम (एनएमडीसी) बस्तर के डिलमिली क्षेत्र में स्टील प्लांट लगाने की तैयारी में है। इस 4 मिलियिन टन वार्षिक उत्पादन क्षमता वाले संयंत्र में 15 से 20 करोड़ का निवेश होगा। जो कि जगदलपुर से गीदम मार्ग पर स्थापित होगा।

इस संयंत्र के लिये शुरूआत में 5 गांवों को उजाड़ा जायेगा, जिसके लिये 4,000 एकड़ जमीन का अधिग्रहण किया जाना है। धीरे-धीरे बारी पास वाले गांवों की भी आनी है। इसके लिये दावा किया जा रहा है कि 15,000 लोगों को रोजगार दिया जायेगा यह दावा भी पहले के दावों की तरह ही खोखला है। ऐसे ही दावे बैलाडीला, किरंदुल और दल्ली राजहरा में भी किए गए थे जिसके अमल के नाम पर क्या हुआ दिन के उजाले की तरह साफ है!

प्रति-क्रांतिकारी सलवा जुडूम अभियान में अब तक मारे गये लोगों की सूची

('प्रभात' के अप्रैल-सितंबर 2007 के अंक में हमने 419 लोगों की सूची दी थी, अक्टूबर-दिसंबर 2007 के अंक में हमें 13 लोगों की सूची प्राप्त हुई। तबसे इकट्ठे किये गये नामों की सूची क्रमांक 433 से दे रहे हैं। -सं.म.)

क्रमांक	नाम	उम्र	गांव	दिनांक
433.	पदम बुधराम	25	मेसूम	--
434.	मुच्चाकी भीम	34	तर्लेड़	8-3-07
435.	एमला सुक्का	-	पुलम	18-3-07
436.	2 जन दरभा	-	..	18-3-07
437.	मड़काम दुल्ला	28	गगनपल्ली	9-7-07
438.	एमला गगालर	25	..	13-3-07
439.	सोढ़ी रामल	26	गामानार्ड	--
440.	सोढ़ी दुल्ले	30	..	--
441.	माड़वी कोसा	35	..	9-3-07
442.	पंडरो दुल्ला	25	..	13-7-07
443.	लेक्काम दुल्ला	30	राचूम	13-1-07
444.	एमला बोदी	30	तुलमाल	28-10-07
445.	सोढ़ी मुवाल	30	..	--
446.	उवका उदाल	20	दुल्मा	19-8.07
447.	उर्मीक रेयाल	20	..	--
448.	वेचासी उदाल	21	..	--
449.	कुन्जम भीमा	24	पेदा गेलूर	19.6.07
450.	एमला सोनू	25	सुरपान गुड़ा	9.9.07
451.	पदम सन्नू	32	परलम	18.7.07
452.	बोगाम पाला	20	उकसाम	26.8.07
453.	सोढ़ी एकाल	35	तिलमड़गु	24.12.07
454.	मड़काम कड़मा	60	गोसोंडा	17.2.07
455.	कोवासी बंडी	30	बरेएर्व	2.2.07
456.	कोवासी विमला	21	प.व. कंचाला	18.3.08
457.	मड़ावी मासाल	35	कंचाला	18.3.08
458.	अलवम लच्छी	60	पाला गुर्वेम	18.3.08
459.	कड़ती रावेरा	[illegible]	पोलमपल्ली	5.11.07
460.	मोड़यम सन्नू	22	..	13.2.08
461.	वेट्टी मासा	20	..	--
462.	कुंजाम मासा	35	धरमपुर	25-10.07
463	पुनेम बेहूरा	28	तिमापुर (बीएम)	20.1.07
464	पोदियम	28	सेन्डुगुडा	20.1.07
465	माड़वी सन्नाल	-	..	..
466	मुचाकी चिन्नू		पोंता बेड़ा	..
467	पुनेम कड़मा	40	गोसोंडा	28.11.07
468	पुनेम कड़मा	30	पेंटा	5.1.07
469	एमला गुड़्डी	24	पुलाम (बेची)	5.3.07

कंचाल अमर शहीदों की सूची

18/3/08 को कंचाल में जिन वीर योद्धाओं ने ग्रेहाउण्ड्स बलों का बहादुरी से मुकाबला किया और अपने प्राणों का बलिदान दिया।

क्रमांक	नाम	उम्र	गांव	स्तर	डिविजन/यूनिट
1.	कामरेड सागर	43	पमेडमपेटा	डीवीसी एम	खम्माम
2.	कामरेड रघु	26	बुड़्डगुडेम	कमांडर	शबरी
3.	कामरेड भास्कर	28	कालमपल्ली	कमांडर	कुकनूर
4.	कामरेड सुरेश (सत्तू)	21	तुमेड़	डीवीसी एम गार्ड	खम्माम
5.	कामरेड चुरे (कोवासी पोन्ने)	24	रेड्डीमरगु	कमांडर	9वीं पीएल
6.	कामरेड मड़काम लाखा	21	रासगुडेम	सीएम	9वीं पीएल
7.	कामरेड कारम हुंगाल	23	पेड्डुम	पीएम	एसीएनएम
8.	कामरेड मड़काम बुधरी	24	गमापाड़	पीएम	9वीं पीएल
10.	कामरेड रामू	25	सेंगम	पीएम	9वीं पीएल
11.	कामरेड मुच्चाकी मुकाल	20	रेकमेरला	सीएम	9वीं पीएल
12.	कामरेड रत्ना सरी	24	पुणेमड़	सीएम	9वीं पीएल
13.	कामरेड मड़काम लिंगाल	24	कुमेलगुडेम	सीएम	9वीं पीएल
14.	कामरेड पुनेम जोगी	21	गुण्डाम	सीएम	9वीं पीएल
15.	कामरेड बेको विमला	21	जंगला	पीएम	पीपीसी एलओएस
16.	कामरेड जगाम	22	पुनेंगा		एलओएस कमांडर
17.	माड़वी मासल	35	कंचाल		साधारण जनता
18.	मुचल बामो	60	चलगुडेम		साधारण जनता

पाठको,

इस बार हम कुछ अनिवार्य कारणों से कंचाल शहीदों सहित केन्द्रीय कमेटी सदस्य कामरेड अनुराधा (जान्की दीदी) व कामरेड [illegible] की जीवनी नहीं छाप पा रहे हैं। हम अगले अंक में इस कमी को जरूर पूरा करेंगे।

–संपादक मंडल

dEiuh&1 d cgknj iyVu dek.Mj
dkejM ik;e vMeky (t;yky@ txnh'k) vej jg!

कॉमरेड अड़माल का जन्म दंतेवाड़ा जिले में 1980 में हुआ था। जब वह पैदा हुए ही थे उनके माता-पिता जमीन की तलाश में, दो जून की रोटी की तलाश में नेशनलपार्क इलाके के सुंचुगुट्टा गांव आ बसे थे। वहां के लोगों की मदद से जंगल काटकर जमीन निकाल ली। बचपन से ही अड़माल खेती के कामों में अपने माता-पिता का हाथ बंटाते थे। आसपास में स्कूल न होने के कारण उन्हें पढ़ाई नसीब नहीं हुई। जंगल पर आदिवासियों का हक किसने छीना? और क्यों आदिवासी अपने ही जंगल में बेगाने हो गए? आदि सवालों से बाल अड़माल बेचैन हो उठते थे। जवाब कहीं नहीं मिलता था। इस बीच सुंचुगुट्टा गांव में भाकपा (माओवादी) के छापामार दस्ते का आगमन हुआ। दस्ते ने उनकी सारी शंकाओं का समाधान किया। क्रांतिकारी गीतों और नाटकों के माध्यम से उन्हें शिक्षित किया। तब से अड़माल बाल संगठन का सदस्य बन गए। पार्टी के कामों को करने लग गए। जवान होने के बाद अड़माल के पास एक ही सपना था गुरिल्ला बनने का। जिस राजनीति पर उनका विश्वास बन गया उसे पूरा करने के लिए यही एक रास्ता है, यह सोचकर उन्होंने खुद को दण्डकारण्य के जनयुद्ध का हिस्सा बनाने का संकल्प लिया। ऐसे ही नौजवानों को तलाश रही वहां की एरिया पार्टी कमेटी ने कॉमरेड अड़माल के तमाम अच्छे-बुरे पहलुओं पर विचार कर 2001 के जनवरी में दस्ते में ले लिया। तब से उनका नाम जयलाल बना। कॉमरेड जयलाल का कुछ समय तक नेशनल पार्क एलओएस में काम करने के बाद उत्तर बस्तर में पलटन-5 में तबादला कर दिया गया। वह बिना किसी हिचकिचाहट के आगे बढ़े।

पलटन-5 में शामिल होने के बाद कुछ ही दिनों में कॉमरेड जयलाल ने पीपीसी का विश्वास जीत लिया। इस पलटन में उन्होंने 10 महीने काम किया। सभी कामों में यह कॉमरेड आगे रहते थे और दुश्मन के खिलाफ लड़ने की बारी आई तो भी वह आगे की लाइन में मुस्तैद रहते थे। अप्रैल में पार्टी नेतृत्व ने तय किया कि कॉमरेड जयलाल को पलटन-3 में भेजकर एलएमजी मैन के रूप में उभारा जाए। जनयुद्ध की जरूरतों को समझते हुए कॉमरेड जयलाल ने पार्टी के इस फैसले का भी मुस्कराते हुए स्वागत किया। तबसे जुलाई 2004 तक उन्होंने पलटन-3 में रहकर दुश्मन पर किए गए कई हमलों में बहादुरी के साथ भाग लिया। सैन्य प्रशिक्षण कैम्प में भाग लेकर प्रशिक्षित हुए। निहत्थी लड़ाई का प्रशिक्षण भी हासिल कर एक जुझारू लड़ाका बन गए।

2004 में एसजेडसी ने पीएलजीए के उन्नत फार्मेशनों में विकास के नजरिए से पहली बार कम्पनी का गठन करने का फैसला लिया। इसके लिए पूरे दण्डकारण्य से कुछ लड़ाकू काडरों को इकट्ठा करने का निर्णय किया। इसमें कॉमरेड जयलाल का चुनाव सेक्शन उप कमाण्डर के रूप में हुआ। कम्पनी में आने के बाद उन्होंने अपना नाम जगदीश बदला और कम्पनी में वह एलएमजी मैन बन गए।

कॉमरेड जगदीश के राजनीतिक और फौजी स्तर को देखते हुए कम्पनी पार्टी कमेटी ने उन्हें जुलाई 2005 में सेक्शन कमाण्डर के रूप में पदोन्नत किया। उन्होंने फौजी और राजनीतिक मामलों में ज्यादा से ज्यादा जानकारी हासिल करने और अपना ज्ञान बढ़ाने की हर दम कोशिश की। हमलों में तो कभी पीछे हटने का सवाल ही नहीं रहता था। उन पर पूरी कम्पनी में सभी कॉमरेडों का विश्वास बढ़ा। इसे देखते हुए उसे पलटन का उप कमाण्डर चुन लिया गया और बाद में सितम्बर 2007 में पलटन कमाण्डर के रूप में विकसित हुए। वह सबके लिए मान्य पलटन कमाण्डर बने।

राजनीतिक अध्ययन के मामले में

घर पर कुदाल, फावड़ों का प्रयोग करने वाले जनयुद्ध में शामिल होने के बाद गन के साथ-साथ पेन का भी इस्तेमाल करने लगे हैं। ऐसे लोगों में कॉमरेड जगदीश भी एक थे। जगदीश राजनीतिक विषयों को सीखने में आगे रहा करते थे। मास, मोपोस के कार्यक्रमों में उत्साह के साथ भाग लेने के अलावा पार्टी के पत्र-पत्रिकाओं को भी ध्यान से पढ़ते थे। जो विषय समझ नहीं पाते थे उन्हें समझने के लिए वह किसी न किसी साथी से जरूर पूछ लिया करते थे। जब तक उन्हें सही समाधान नहीं मिलता बारम्बार पूछ लेते थे। हाल में गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में बदलने के विषय पर कक्षा चलाई गई तो उसमें उन्हें माओ के इस कार्यनीतिक सूत्रीकरण को कि एक के खिलाफ दस को तैनात करो, जब वह समझ नहीं पाए तो उस पर काफी चर्चा कर उसका सारांश का गहराई से ग्रहण करने की भरसक कोशिश की। ऐसे कई विषयों को वह दूसरों से पूछकर जान लेते थे। जितना वह जानते थे उस पर वह कभी घमण्ड का प्रदर्शन बिल्कुल नहीं करते थे। कुल मिलाकर कहा जाए तो सीखने और सिखाने के मामले में उनका व्यवहार हमेशा एक विनम्र विद्यार्थी जैसा ही रहा।

सामूहिक कामकाज में

जगदीश ने सामूहिकता का हमेशा सम्मान किया। सम्मान का मतलब ही यह है कि उन्होंने सामूहिक कामकाज में हमेशा भाग लिया। चूल्हा जलाने के लिए लकड़ियां लाने से लेकर उत्पादन के कामों तक हर काम को वह लगन के साथ पूरा किया करते थे। जो काम उन्हें नहीं आता उसे पूरा करने की कोशिश करके देखते थे। कभी उससे पल्ला झाड़ लेने की कोशिश नहीं करते

थे। कॉमरेडों के साथ उनका व्यवहार आदरपूर्वक और प्रेमपूर्वक रहता था। जब कोई कॉमरेड कोई गलती करता तो उसे वह जरूर चिन्हित कराते थे, लेकिन उसके साथ कभी द्वेष की भावना से पेश नहीं आते थे।

खून के रिश्ते से बढ़कर वर्गीय रिश्ते को अहम माना!

सलवा जुडूम के शुरू होने के बाद गांव के गांव तबाह होते गए। जहां जो मिला उसे काटकर या गोलियों से मार डाला गया। बाकी बचे परिवारों को जबरन 'राहत' शिविरों में घसीटा गया। इस तरह विस्थापित होने वालों में सुंचुगुट्टा स्थित उनके खुद का परिवार भी शामिल था। इसे सुनकर जगदीश विचलित नहीं हुए, बल्कि इसे समूची जनता पर जारी पाशविक दमन का हिस्सा ही माना। उसे व्यक्तिगत रूप से न लेकर जनता की सामूहिक ताकत के ही जरिए जुडूम को परास्त करने की बात पर जोर दिया। जनता को दुश्मन के सामने घुटने कभी न टेकने की समझाइश देते थे। अपने परिवार वालों को भी चिट्ठी लिखकर यही बताया। अपनी बहन को भी क्रांतिकारी आन्दोलन में शामिल होने के लिए प्रोत्सहित किया।

हमलों में जगदीश

जगदीश ने कई ऐम्बुशों में भाग लिया – मासनार, बीनागुण्डा, मुरुमबूसी, कोपेला, देवपाड़, लेतामर्री, पालेपल्ली, लेंगाटोला, अवलवरिसे, पेद्दा कोरमा, पदेड़ा, गोवरबेड़ा, मूसकुडूम, कुरसानार, कुदूर, बंगलापाल सिविल एक्शन, जारावेड़ा आदि। गीदम, कोरापुट, डौला आदि रेडों में भी उनका योगदान रहा। दृढ़ संकल्प, पहलकदमी, तेजी, सूझबूझ जैसे गुरिल्ला युद्ध के आवश्यक नियमों का पालन करने वालों में कॉमरेड जगदीश एक थे। हर काम को वह मजबूत इरादों से पूरा करते थे। बंगलापाल (भैरमगढ़) में 10 से ज्यादा सलवा जुडूम के गुण्डे बाजार जाने वाले लोगों के सामान आदि छीनने, मारने-पीटने जैसी कई हरकतों से परेशान करते थे। उन गुण्डों को सही सबक सिखाने के लिए कॉमरेड जगदीश की अगुवाई में तीन सदस्यों की टीम ने किसानों जैसे कपड़े पहनकर एके-47 और ग्रेनेडों से गुण्डों के नजदीक तक जाकर अचानक हमला कर दिया जिसमें एक वहीं ढेर हुआ और एक बुरी तरह घायल हुआ। बाकी गुण्डों को भैरमगढ़ के थाने तक दौड़ाया।

कुदूर ऐम्बुश में वह दूसरी हमलावर टुकड़ी के कमाण्डर थे। दुश्मन पर जब वह फायरिंग कर रहे थे तो अचानक उनकी रायफल जवाब दे गई थी। इस बीच पास में मौजूद दुश्मन दो इंची मोर्टार से गोला दागने की कोशिश कर रहा था। कॉमरेड जगदीश ने तुरन्त ही सूझबूझ का परिचय देते हुए उस पर हथगोला फेंका। इससे हथगोले के साथ-साथ वो शेल भी फट गया जिसे दुश्मन दागने की तैयार कर रहा था। दो पुलिस वाले बुरी तरह घायल हुए। जगदीश तेजी से उन पर टूट पड़े और उनसे एक एके-47 रायफल और एक मोर्टार छीन लिए। 3 दिसम्बर 2007 को गड़चिरोली डिवीजन के जारावेड़ा गांव में कमाण्डो बलों पर ऐम्बुश करने के दौरान कॉमरेड जगदीश के सिर में दुश्मन की गोली लगी जब वह अपनी पलटन को साथ लेकर फायर एण्ड मूवमेंट के तरीके से आगे बढ़ रहे थे। मौके पर ही उन्होंने दम तोड़ दिया। पीएलजीए के वीर योद्धाओं ने उनके शव को उठा लाया और बाद में पूरे सम्मान के साथ जनता के समक्ष अन्तिम संस्कार किया। बाद में आयोजित शोक सभा में सभी ने आंसू बहाते हुए इस जांबाज गुरिल्ला कमाण्डर के आदर्शों को ऊंचा उठाने का संकल्प लिया। उस सभा को सम्बोधित करते हुए शहीद की जीवन संगिनी कॉमरेड ललिता ने बताया कि कैसे कॉमरेड जगदीश ने उन्हें लड़ाई के मैदान में प्रोत्साहन दिया। उन्होंने बताया कि उनके दो साल के वैवाहिक जीवन में फौज के मोर्चे में महिलाओं के बड़ी संख्या में आगे आने की जरूरत पर वह हमेशा जोर दिया करते थे। अन्त में सभी ने शपथ लिया कि कॉमरेड जगदीश के आदर्शों को कभी नहीं भूलेंगे। ★

(... पृष्ठ 27 का शेष)

मुठभेड़ों का सामना किया। मुरुमबूसी, कम्मरिगूडा से लेकर दोडराज, रोप्पि, जारावाडा तक सभी घटनाओं में शानदार बहादुरी का परिचय दिया। कासमपल्ली में हुई मुठभेड़ में उनके पास हथियार न होने के बाद भी दूसरे कामरेड की हथियार लेकर दृढ़ता से मैदान में डट गए थे।

कामरेड चैतू में दुश्मन के प्रति तीव्र घृणा थी। बीमार होने पर भी वो तुरंत दवाई लेकर लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। कभी-कभी ऐम्बुश में जाना होता और वो बीमार होता था, तो बताता नहीं था – 'कहीं मुझे ऐम्बुश में जाने से मना तो नहीं कर दें।' उन्होंने केवल आगे बढ़ना सीखा था पीछे हटने का तो उन्हें पता ही नहीं था। ऐसे जांबाज गुरिल्ला योद्धा थे कामरेड चैतू।

दस्ता सदस्य से डिवीजनल स्तर के नेता तक

2001 में साधारण दल सदस्य के रूप आये कामरेड सुदरु पलटन सदस्य बने। गड़चिरोली में ही उन्होंने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। 2004 में कामरेड को एरिया कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया। 2006 मई महीने में पलटन पार्टी कमेटी सचिव बने। एक दल सदस्य से अपना राजनीतिक-सैनिक-सांगठनिक विकास करते हुए, कभी पीछे ने हटते हुए एक डीवीजनल कमाण्ड के सदस्य तक विकसित हुए। 2006 मई में पीपीसी सचिव बनने के बाद उन्हें डीवीजन कमांड में शामिल कर लिया गया था। हमारी आत्मगत शक्ति व परिस्थिति का आंकलन करते हुए 2007 जनवरी में पश्चिम ब्यूरो की मीटिंग में कामरेड चैतू को दक्षिण गड़चिरोली डिवीजन कमेटी में लेने का प्रस्ताव हुआ था। उनकी शहादत गड़चिरोली डिवीजन पार्टी और जनता की लड़ाई के लिए बहुत बड़ी क्षति है।

कामरेड चैतू साथियों से प्यार करने वाला, कठोर परिश्रमी कामरेड थे। फिजूलखर्ची उनको जरा सी भी बर्दास्त नहीं थी। पार्टी के एक-एक पैसा का वो हिसाब रखते थे। समय के पाबंद थे। हमारी पार्टी ने एक जबर्दस्त लड़ाकू योद्धा को खो दिया है जो हमारी पार्टी और खासकर गड़चिरोली डिवीजन के लिए बड़ी क्षति है। आइए, कामरेड चैतू के सर्वहारा गुणों को आत्मसात करते हुए उनके सापनों को पूरा करने के लिए आगे बढ़े। ★

xkykiYYih (HkVVhxMe) ,Ec'k e 'kghn g; ohj ;k¼k dkejM1 ckeu] 1Dd vkj mxky dk yky&yky lyke!

दिसम्बर 2007 में एक सप्ताह के अंदर ही घटी तीन घटनाओं ने पूरे छत्तीसगढ़ को प्रभावित किया। 13 दिसम्बर को विश्रामपुरी पुलिस थाने पर हमला, 16 दिसम्बर को ऐतिहासिक दंतेवाड़ा जेल ब्रेक और 20 दिसम्बर को गोल्लापल्ली ऐम्बुश-इन तीनों ने शासक वर्गों को ऐसे समय हिलाकर रख दिया जबकि केन्द्र और राज्यों की सरकारें नक्सलवाद के उन्मूलन के लिए लगातार बैठकें कर रही थीं और नित नई साजिशें रच रही थीं। वहीं दूसरी तरफ इन तीनों कार्रवाइयों ने क्रांतिकारी जनता को जबरदस्त प्रेरणा दी। 20 दिसम्बर को गोल्लापल्ली (दक्षिण बस्तर) के पास भट्टीगूड़ेम के जंगलों में पीएलजीए ने हत्यारे पुलिस बलों पर हमला कर 12 पुलिस वालों का सफाया कर 12 हथियार छीन लिए। पुलिस वालों की कुल संख्या 30 से ज्यादा थी। कंपनी-3 और पलटन-8 के योद्धाओं ने इस सफल कार्रवाई को अंजाम दिया जबकि बचे हुये भाड़े के पुलिस बल दुम दबाकर भाग गये। इस हमले को सफल बनाने के दौरान पीएलीजए के तीन कामरेडों ने वीरगति को प्राप्त किया। वे दुश्मन के साथ आमने-सामने लड़ते हुये गोलियों का शिकार हो गये। 'प्रभात' कंपनी-3 के इन तीनों बहादुर कामरेडों - कामरेड बामन (सेक्शन कमांडर), कामरेड सुक्कू (सेक्शन डिप्युटी कमांडर) और कामरेड उंगाल (लाल सैनिक) को विनम्र श्रद्धांजली पेश करती है। आइए, इन तीनों बहादुर योद्धाओं की प्रेरणास्पद जीवनियों पर नजर डालें।

कामरेड बामन

24 वर्षीय कामरेड बामन का जन्म दंतेवाड़ा जिले के छिंदगढ़ विकासखंड के ग्राम कोंदाबाद (कुंदनपाल) , जो दरभा पर्वतमाला में बसा हुआ है, के एक गरीब मुरिया आदिवासी परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम ऊराल (सिकाल) और मां का नाम ऊरे हैं। उनकी दो बहनें और चार भाई हैं। 1910 में गुंडादुर के नेतृत्व में हुये ऐतिहासिक भूमकाल विद्रोह, जिसने अंग्रेजी साम्राज्यवादियों को धर्रा दिया था, में इस गांव का भी योगदान रहा। गांव के बुजुर्ग जब उस समय की वीरगाथाएं सुनाते थे, बच्चे रोमांचित हो जाते थे। उन बच्चों में से एक था बामन जो बाद में बहादुर गुरिल्ला कमांडर बामन के रूप में उभरा।

बचपन में ही बामन को उनके माता-पिता ने गोल्लापल्ली-किष्टारम इलाके के मैलासुर गांव में बड़े पिता जी के घर भेजा था। जमीन की कमी के चलते बामन का परिवर गरीबी से जूझ रहा था। बामन ने मैलासुर में कुछ समय बिताया। चूंकि बड़े पिता जी उनकी देखभाल ठीक से नहीं कर रहे थे इसलिए वह अपने एक चचेरे भाई माड़िवी गुड्डी, जो किष्टारम के पास चेन्नमपेट में बसे हुए थे, के पास चले गए। वहां रहकर खेती किसानी करते हुये अपने लिए भी थोड़ा जंगल काटकर जमीन तैयार कर ली।

इस दौरान वह स्थानीय डीएकेएमएस और किष्टारम गुरिल्ला दस्ते के संपर्क में आ गये। चूंकि बामन गरीब थे इसलिए सहज ही उन्होंने सोचा कि क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल होकर ही गरीबी को मिटाया जा सकता है। वह डीएकेएमएस में शामिल हो गये और जन मिलिशिया में सक्रिय काम करने लगे थे। 2002 के जुलाई माह में बामन ने अपनी जमीन छोड़ दी और पीएलजीए में भर्ती हो गये। पार्टी की डिवीजनल कमेटी ने उन्हें एलओएस में भेजा। वहां पर उन्होंने जनता को संगठित किया। बाद में उन्हें पामेड़ एलजीएस में सदस्य बनाया गया। जुलाई 2004 में पार्टी ने उन्हें पलटन-4 में भेजा। अक्टूबर 2005 में दण्डकारण्य में गठित कंपनी-2 में उनका चयन हुआ। उसके कुछ ही समय बाद कंपनी-3 का गठन हुआ जिसमें कामरेड बामन को सेक्शन उप कमांडर के रूप में शामिल किया गया। इस तरह कई बार लगातार इधर-उधर बदलने से भी कामरेड बामन ने कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई। जहां जो काम दिया गया उन्होंने हमेशा उसे निष्ठापूर्वक पूरा करने की कोशिश की।

सैन्य मोर्चे पर कामरेड बामन

मार्च 2003 से अपनी शहादत तक कामरेड बामन ने लड़ाकू बलों में ही काम किया। कामरेड बामन छोटे, बड़े और मध्यम किस्म के ऐम्बुश, रेडों में-कुल करीब 20 कार्रवाइयों में भाग लिया। साधारण गुरिल्ला सैनिक से लेकर सेक्शन उप कमांडर और सेक्शन कमांडर के रूप में नेतृत्व भी किया।

16 अप्रैल 2006 को मुरकीनार पुलिस चौकी पर पीएलजीए द्वारा अनोखे अंदाज में किए गए हमले में कामरेड बामन ने एक अहम भूमिका अदा की। इस हमले को दिन के उजाले में ही अंजाम देना था। इसके लिए वाहन की जरूरत थी। आवापल्ली से 8 बजे एक बस जगदलपुर के लिए निकलती है, जो मुरकीनार से होकर जाती है। लेकिन दिक्कत यह थी कि अक्सर उस बस में पुलिस वाले भी बैठकर जिला मुख्यालय बीजापुर जाया करते हैं। पुलिस वाले उस बस में बैठे हैं या नहीं यह देखने की जिम्मेदारी बामन को दी गई थी। उन्होंने बड़ी खुशी के साथ यह जिम्मेदारी ली और स्थानीय लोगों में शामिल होकर बस को देखा और सूचना रेडिंग पार्टी को दी। गुरिल्लों ने कामरेड बामन की सूचना पर बस को रोका और यात्रियों को उतार कर उन्हें समझा दिया कि वे क्यों इस बस को अपने कब्जे में ले रहे हैं। बस में सवार होकर पीएलजीए के लाल सैनिक मुरकीनार चौकी पहुंचे और उसके बाद जो हुआ वह अब इतिहास बन गया। 12 पुलिस वालों का सफाया कर कुल 49 हथियार पीएलजीए ने अपने कब्जे में लिए। इस कार्रवाई में कामरेड बामन अपनी भूमिका बखूबी निभाई।

उसके पहले 9 फरवरी 2006 को एनएमडीसी के बारूद गोदाम पर किये गये ऐतिहासिक हमले में भी कामरेड बामन ने भाग लिया था। उस हमले में पीएलजीए के विभिन्न बलों के एक हजार सैनिकों ने पहले सीआइएसएफ की चौकी पर हमला किया और बाद में गोदाम से 20 टन बारूद जब्त कर लिया। फिर 9 जुलाई 2007 को उरपलमेट्टा के पास हुई जबरदस्त कार्रवाई में कामरेड बामन ने अपने लड़ाकूपन का बढ़िया प्रदर्शन किया। इस कार्रवाई में पीएलजीए ने कुल 24 पुलिस वालों का सफाया कर उनसे 21 हथियार छीन लिए। 24 अगस्त 2007 को चिंतलनार और चिंतागुप्पा पुलिस थाने के बीच ताड़िमेट्ला के जंगलों में पीएलजीए द्वारा की गई शौर्यपूर्ण कार्रवाई में भी कामरेड बामन का योगदान रहा। इसमें जन मिलिशिया के साथियों को दौड़ाते आ रहे हत्यारे पुलिस पर जबर्दस्त प्रहार कर जालिम थानेदार हेमंत मंडावी को मार डाला गया था।

पामेड़ के पास तोंगूडेम में और गोल्लापल्ली में, जहां उनकी शहादत हुई, कामरेड बामन ने सेक्शन कमांडर की हैसियत से अपने सेक्शन का नेतृत्व किया। इन दोनों हमलों में कुल 3 पुलिस वालों का सफाया कर दिया गया। गोल्लापल्ली ऐम्बुश में जब वह बचे हुये पुलिस वालों का सफाया करने के लिए आगे बढ़ रहे थे, तब दुश्मन की गोली लगी थी। इससे मौके पर ही उनकी मृत्यु हुई। साथियों ने कामरेड बामन की लाश को उठा लिया और दुगुने जोश के साथ आगे बढ़ कर सभी पुलिस वालों का सफाया कर ऐम्बुश को सफल बनाया।

उपरोक्त कार्रवाइयों के अलावा कामरेड बामन ने कंपनी-2 और कंपनी-3 द्वारा गंगलूर और बासागुडेम के तथाकथित राहत शिविरों पर किये गये हमलों में भी उत्साह के साथ भाग लिया। फासीवादी सलवा जुडूम का अंत करने के इरादे से किये गये उक्त हमलों में जन विरोधी विशेष पुलिस अधिकारियों को बड़े पैमाने पर मार डाला गया। फौजी कार्रवाइयों में खासा अनुभव हासिल कर, क्रांतिकारी राजनीति को गहराई से समझते हुये आगे बढ़ रहे इस उभरते कमांडर की मौत से पीएलजीए को बड़ा नुकसान हुआ है।

क्रांतिकारी आंदोलन में कदम रखने के बाद कामरेड बामन ने साढ़े पांच साल अविराम काम किया। कभी भी उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा, न ही अपने माता-पिता को देखा। जनता को ही अपना माता-पिता समझकर हमेशा उनकी सेवा की। बेहद गरीबी में पले-बढ़े कामरेड बामन को घर पर पढ़ाई नसीब नहीं हुई थी। दस्ते में भर्ती होने के बाद ही कामरेड बामन ने पढ़ना-लिखना सीखा और फौजी पत्रिकायें पढ़ने लायक बने थे। हथियारों की छोटी-मोटी मरम्मत भी करना सीखा। हर परिवार से एक दो नहीं बल्कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में पीएलजीए में भर्ती होने से ही यह जनयुद्ध विकसित हो सकता है, इस बात को समझकर उन्होंने अपने छोटे भाई कोसाल को भी प्रोत्साहित कर क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल करवाया।

मजबूत क्रांतिकारी संकल्प, दुश्मन के प्रति असीम वर्गीय नफरत, युद्ध कार्रवाइयों में जुझारूपन आदि गुणों से लैस कामरेड बामन ने बहादुर गुरिल्ला, गुरिल्ला कमांडर और पलटन पार्टी कमेटी सदस्य के रूप में बढ़िया योगदान दिया। छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में बदलने के लक्ष्य से किये जा रहे हमलों में अग्रिम पंक्ति में रह कर लड़ने वाले कॉमरेड बामन पीएलजीए के कतारों को सदा प्रेरणा देते रहेंगे।

कामरेड ओयामी सुक्कू

कामरेड सुक्कू ओयामी परिवार में पांडू और मंगली दंपत्ति के घर पैदा हुए थे। वह पश्चिम बस्तर डिवीजन के गंगलूर एरिया के गांव पेद्दा जोजोड़ गांव के निवासी थे। शहादत के समय कॉमरेड सुक्कू महज 25 साल के थे। अपने माता-पिता की तीन संतानों मे सुक्कू सबसे छोटे थे। बचपन से ही बाल संगठन में सदस्य होकर बैल चराते हुये क्रांतिकारी गीतों को गुनगुनाया करते थे। क्रांतिकारी संघर्षों से प्रेरणा लेते थे। बाद में डीएकेएमएस सदस्य के रूप में उन्होंने काम किया। इसके अलावा जन मिलिशिया में रहकर उन्होंने सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। 2004 के आम चुनाव के समय अपने गांव में आई पुलिस पर किये गये हमले में वह शामिल थे। इसी क्रम में कामरेड सुक्कू जनवरी 2005 में पीएलजीए में भर्ती हुये।

जनवरी 2005 से कॉमरेड सुक्कू ने गंगलूर के स्थानीय छापामार दल में सदस्य के रूप में काम किया। जून 2005 में सलवा जुडूम सैनिक अभियान भैरमगढ़ क्षेत्र में शुरू हुआ। दुश्मन ने क्रांतिकारी आंदोलन का उन्मूलन करने के लक्ष्य से इस फासीवादी हमले को शुरू किया था। कार्पेट सेक्यूरटी के तहत पूरे बीजापुर जिला में पुलिस कैंपों का जाल बिछाया गया। गांव-गांव में तबाही का तांडव मचाया जा रहा था। तब सलवा जुडूम का प्रतिरोध करने में कम्बैट फोर्स में रह कर जांगला और कोतरापाल में दुश्मन के ऊपर किये गये कई हमलों में कॉमरेड सुक्कू शामिल थे।

मेन फोर्स में आदर्श छापामार की भूमिका

जुल्मी सलवा जुडूम अभियान को परास्त करने तथा दण्डकारण्य को आधार इलाके के रूप में विकसित करने के लिये उन्नत सैनिक फार्मेशन के गठन का एसजेडसी ने निर्णय लिया था। तब पार्टी ने कामरेड सुक्कू को दक्षिण सब जोन क्षेत्र में गठन होने वाली कंपनी-2 में अक्टूबर 2006 में स्थानान्तरित किया। पार्टी के प्रस्ताव को सुक्कू ने खुशी से मान लिया। इस तरह वो कंपनी का सदस्य बना।

दमनकारी सलवा जुडूम को शिकस्त देने के लिए जनवरी

2006 में गंगलूर 'राहत' शिविर पर हमला कर सलवा जुडूम गुंडों व विशेष पुलिस अधिकारियों का खात्मा किया गया। इस हमले में दुश्मन के ऊपर पहलकदमी से चढ़ाई करने वाले वीरयोद्धाओं में कॉमरेड सुक्कू भी एक थे। उसके बाद 9 फरवरी 2006 को ऐतिहासिक भूमकाल दिवस के पूर्व संध्या पर एनएमडीसी के हिरोली स्थित बारूद डिपो पर हमला किया गया था। इसमें 14 हथियार और 19 टन बारूद को जब्त किया गया था जिसमें एक हजार जन मिलिशिया की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इस हमले से दुश्मन का दिल कांप उठा था। इस हमले में कामरेड सुक्कू एम्बुश पार्टी में रहे थे। उसी सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए बासागुड़ा, इंजारम और एर्राबोर के सलवा जुडूम शिविरों पर हमला कर दुश्मन को करारा जवाब दिया गया था। कई सलवा जुडूम एसपीओ को खत्म किया गया। गांवों के ऊपर सीआरपीएफ और नगा पुलिस के सरंक्षण में सलवा जुडूम के गुंडे हमला कर 'सब को मारो, सबको जला दो, सब कुछ तबाह करो' की नीति पर अमल कर रहे थे। जनता अपने घरों और गांवों से बेदखल होकर हाहाकर मचा रही थी, तब सलवा जुडूम के गुंडों पर हुए इन हमलों ने जनता को काफी उत्साहित किया। इन तमाम हमलों में कामरेड सुक्कू शामिल थे। उन्हें सौंपी गई जिम्मेदारी को पूरा करने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। अपनी जान की परवाह किये बिना एक जांबाज योद्धा की भूमिका अदा की।

कंपनी-3 में कामरेड सुक्कू

छापामार युद्ध को तेज करने और दुश्मन का उन्मूलन करने के लिये मेन फोर्स (प्रधान बलों) को बढ़ाने की जरूरत है। इस सिलसिले में पार्टी ने 2006 में कंपनी-3 का गठन किया। गठन के समय से ही सुक्कू सदस्य के रूप में इस कम्पनी से जुड़ गए। गगनपल्ली में सीआरपीएफ, सीएसफ और एसपीओ के सयुंक्त दल पर हमला कर उन्हें खदेड़ देने की घटना में कॉमरेड सुक्कू शामिल थे। इसके अलावा जगदलपुर-कोंटा सड़क पर 2 मार्च 2007 को असरीगुड़ा के पास नगा जवानों के ट्रक पर किए गए ऐम्बुश में कॉमरेड सुक्कू ने भाग लिया था। इस हमले में पांच नगा जवानों का सफाया कर तीन एके-47 रायफलों सहित कई हथियार जब्त किये गए थे। इसमें कॉमरेड सुक्कू ने सीजिंग पार्टी में रह कर दुश्मन के ऊपर करारा प्रहार किया और हथियार जब्त किए।

एम्बुशों में कामरेड सुक्कू

जबसे सलवा जुडूम शुरू हुआ है तबसे पुलिस, अर्ध सैनिक बल, एसपीओ और सलवा जुडूम के गुंडे गांवों पर बेरोकटोक हमले कर तबाही मचा रहे थे। गांवों में तबाही का नंगा नाच करते समय उन पर करारा प्रतिरोध की कार्रवाइयां कम ही हुई थीं। भारी संख्या में आकर बेलगाम आतंक मचाना उनकी आदत सा बन गया था। इस पर रोक लगाने वाला करारा हमला उरपलमेट्टा में ही हुआ। जुलाई 2007 में इंजारम के निकले पुलिस, सीआरपीएफ और एसपीओ के सवा सौ के करीब भाड़े के बलों ने गगनपल्ली के पास उरपलमेट्टा पहाड़ में सलवा जुडूम से बचने के लिये जंगल में झोपड़ियां बना कर रह रही जनता पर हमला किया था। झोंपड़ियां जलाते हुए, लोगों को मारते हुए तबाही मचा रहे इन बलों पर हमारी पीएलजीए ने शानदार हमला किया जिसमें 23 पुलिस को खत्म कर 21 हथियार जब्त कर लिए गए। दुश्मन से आमने-सामने लड़ते हुए हमारे जाबांज योद्धाओं ने सलवा जुडूम को एक तगड़ा झटका दिया जिससे क्षेत्र की जनता में और पार्टी के कतारों में क्रांतिकारी जोश पैदा हुआ। इस बहादुराना कार्रवाई में शहीद सुक्कू भी शामिल थे।

इसी तरह, 29 अगस्त को जेगुरगोंड़ा क्षेत्र में ताड़िमेट्ला गांव के पास पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में 13 पुलिस वालों को खत्म करने में कामरेड सुक्कू साहस के साथ दुश्मन पर टूट पड़े थे। दुश्मन पर हमला करने में बेहिचक आगे बढ़ते थे। इसी क्रम में नवंबर 2 तारीख को चेरला से पामेड़ आ रही पुलिस दल पर हमला कर 11 पुलिस जवानों को खत्म करने में भी कामरेड सुक्कू के साहस और दृढ़ संकल्पत को देखते हुये उन्हें सेक्शन डिप्यूटी का दायित्व दिया गया। सभी साथियों से घुलमिल कर रहने वाले, कम बोलने वाले कामरेड सुक्कू दस्ता में पढ़ाई सीखकर 'पडियोरा पोल्लो', 'प्रभात' 'मिड़ंगूर', 'पीतूरी' जैसी पत्रिकाओं को पढ़कर अपनी राजनीतिक व सैनिक समझदारी को बढ़ाने की लगातार कोशिश करते रहे। सैनिक प्रशिक्षण कैंप में दुबला-पतला होने पर भी ग्राउंड में हर तरह की प्रैक्टीस करते थे। आदर्श छापामार साथी के रूप में उनकी छवि बनी थी। जहां भी, जब भी, किसी भी गांव की जनता से मांग कर लाई कुल्हाड़ी, गंजी (खाना बनाने का बर्तन) और अन्य सामान खराब न करते हुये, गुम न करते हुये जनता को सही सलामत लौटा देने में तत्परता दिखाते थे। जनता से घुलमिल कर रहा करते थे।

20 दिसंबर को किस्टाराम-गोल्लापल्ली के बीच में सीएसएफ बलों पर भट्टीगूड़ेम के पास किये गये एम्बुश में दुश्मन के साथ डटकर मुकाबला करते हुये कामरेड सुक्कू ने अपने प्राणों को न्यौछावर किया है। जब दुश्मन हमारे ऐम्बुश साइट में आया था, कमांडर ने एक पलटन को दुश्मन पर बगल से धावा बोलने का आदेश दिया जिसमें कॉमरेड सुक्कू भी शामिल थे। वह अपनी पलटन के साथ जब सड़क को पार कर रहे थे तभी दुश्मन की गोली लगी और वहीं गिर पड़े। आतिंम सांस तक जनता के लिए जीते हुये, जनता के लिये खून बहाया है हमारे सुक्कू ने। कॉमरेड सूक्कू एक आदर्श कम्युनिस्ट छापामार थे। ये आदर्श गुण, अनुशासनात्मक छापामार जीवन, साहस आदि हमें हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे। इस प्रेरणा से कई युवा पीएलजीए में भर्ती होकर शहीदों के सपनों को साकार बनाने के लिये आगे आएंगे।

कामरेड उंगाल

कामरेड उंगल कोंटा तहसील के दोरनापाल इलाके के ग्राम करिगुंडम के निवासी थे। तीन भाई और तीन बहनों में उंगाल दूसरी संतान थे। उनके माता-पिता इंगे और मुकाल का परिवार अत्यंत गरीब परिवारों में से था। आदिवासी मुरिया समुदाय में जन्मे उंगाल को उनकी गरीबी ने ही क्रांतिकारी आंदोलन की तरफ जाने पर मजबूर किया। उन्होंने तय कर लिया कि इसी आंदोलन के

कॉमरेड उंगाल

जरिए गरीबों की जिंदगी को बदला जा सकता है। शुरू में गांव में ही जन संगठनों में काम किया। जब दोरनापाल इलाके में सलवा जुडूम फैल गया तब जनता पर पुलिसिया दमन बेहद बढ़ा। आए दिन गांवो पर शत्रु बलों के हमले होने लगे। जब गांव के गांव कब्रगाह में तब्दील होने लगे तो गांवों में रहने की स्थिति खत्म हो गई। करिगुंडम गांव में भी जनता के दुश्मनों ने सलवा जुडूम में शामिल होकर गांवों पर हमले किये। इसी सिलसिले में कामरेड उंगाल ने पार्टी के सामने प्रस्ताव रखा कि वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनकर काम करना चाहते हैं। स्थानीय एरिया कमेटी ने उन्हें मार्च 2006 में भर्ती कर दोरनापाल इलाके के जन मिलिशिया दस्ते में भेजा। तब से वह पीएलजीए में सक्रिय रूप से काम करने लगे।

दिसम्बर 2006 में लड़ाई की जरूरतों के अनुसार पार्टी ने उन्हें कंपनी-3 में स्थानांतरित किया। प्रधान बलों के साथ कोई पुराना परिचय न होने के बावजूद उन्होंने इस फैसले को खुशी के साथ स्वीकार किया और कंपनी-3 का लाल सैनिक बन गये। तबसे लेकर अपनी शहादत तक उन्होंने एक साल उसी में काम किया।

एक साधारण सैनिक के रूप में पीएलजीए में भर्ती होने वाले उंगाल ने अपनी राजनीतिक चेतना बढ़ाने की लगातार कोशिश की। सामूहिक अध्ययन और प्राथमिक शिक्षा की कक्षाओं में उनकी पहचान एक अच्छे छात्र की बन गई। पार्टी की पत्रिकायें पढ़ने में वह तत्परता दिखता था। उनकी अनुशासित क्रांतिकारी जिंदगी को देख पलटन पार्टी कमेटी और कंपनी पार्टी कमेटी ने उन्हें पार्टी सदस्यता दी। कंपनी की फौजी स्कूल और मास (मोबाइल अकादमिक स्कूल) में वह प्रथम श्रेणी के छात्र रहे।

फौजी मोर्चे में कामरेड उंगाल एक जांबाज योद्धा थे। ऐतिहासिक उरपलमेट्टा ऐम्बुश में उन्होंने जबर्दस्त योगदान दिया। अत्यंत शूरता के साथ हत्यारे पुलिस बलों की तरफ आगे बढ़ने और जब उनकी गोलियां खत्म हो गई थीं तब कुल्हाड़ी लेकर उनका सफाया करने में कामरेड अग्रिम पंक्ति में थे। इस हमले की खासियत यह थी कि लड़ाई के दौरान कुछ कामरेडों के पास गोलियां खत्म होने से भी वे पीछे नहीं हटे, बल्कि परम्परागत हथियारों से दुश्मन का सफाया कर उनके हथियार छीनकर फिर उन्हीं हथियारों से बाकि बचे पुलिस वालों का सफाया किया। इस लड़ाई में उंगाल पहले दर्जे का योद्धा बन कर उभरे। ताड़िमेट्ला और तोंगूड़ेम ऐम्बुशों पहली हमलावर पलटन में रहकर दसियों की संख्या में दुश्मनों का उन्मूलन करने में कामरेड उंगाल आगे रहे थे।

जब वह जन मिलिशिया दस्ते में थे तब एर्राबोर राहत शिविर में एसपीओ गुण्डों पर किए गए हमले में शामिल हुए थे। सैकड़ों लोगों ने उस हमले में भाग लिया था जिसने सलवा जुडूम की रीढ़ में ठण्डक पैदा की थी। वर्ग दिशा और जन दिशा को सही रूप से समझते हुए जुडूम के गुण्डों को सबक सिखने में उन्होंने शोर्यपूर्ण योगदान दिया। कम समय में ही उन्होंने सभी साथियों का विश्वास हासिल कर लिया था। भट्टिगूडेम ऐम्बुश में कुछ शत्रु बल रोड के किनारे पर बने एक नाले में लेटकर गोलियां चला रहे थे। उनका सफाया करने के लिए कामरेड उंगाल अपने सेक्शन कमांडर के साथ आगे बढ़ रहे थे तब दुश्मन की गोली उनके सिर पर पीछे से लगी थी जिससे वह गंभीर रूप से घायल हुए थे। फिर भी वह हिम्मत न हारते हुए पीछे हटे और घायल होने की सूचना पलटन को दी। तुरन्त ही डाक्टरों की टीम ने उनका इलाज शुरू किया। कुछ मिनटों बाद ऐम्बुश को सफल बनाकर शहीदों के शवों और घायलों को उठाकर सारे कामरेड वापस आ गए। जब इलाज का सिलसिला चल ही रहा था, रात के 8.30 बजे कामरेड उंगाल ने आखिरी सांस ली। उसके पहले ही कामरेड बामन और सुक्कू की शहादत हो चूकी थी। एक तरफ ऐम्बुश में मिली जीत और दूसरी ओर तीन जांबाज कामरेडों की शहादत - दोनों को सभी कामरेडों ने क्रांतिकारी जोश के साथ लिया कि बिना कुरबानी के नयी व्यवस्था का निर्माण नहीं होगा।

अगली सुबह पीएलजीए की कम्पनी ने तीनों शहीदों की अंतिम यात्रा निकाली और बुलन्द नारेबाजी करते हुए पूरे क्रांतिकारी सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया। सभी ने शपथ ली कि कामरेड्स बामन, सूक्कू और उंगाल की शहादत को ऊंचा उठाकर दुश्मन का नाश करेंगे - दण्डकारण्य को आधार इलाका बनाने के लक्ष्य को पूरा करेंगे।✯

tu fefyf'k;k iyVu dekMj dkejM ikVke vk;r vej jg!

2 जून 2007 को पश्चिम बस्तर डिवीजन आवनार मिलिशिया पलटन कमांडर कामरेड पोटाम आयतू दुश्मन द्वारा फेंके गए गोले (मोर्टार शेल) से शहीद हो गये। अवनार-कोरचिल के बीच में हुई मुठभेड़ में कार्डेक्स वायर को विस्फोट कर कॉमरेड आयतू रिट्रीट हो रहे थे कि दुश्मन ने पीछे से शेल दाग दिया। कामरेड आयतू एक गरीब परिवार में पैदा हुये थे।

कामरेड पोटामी आयतू लगभग 4 साल से जन मिलिशिया पलटन में काम कर रहे थे। दुश्मन की खबर मिलते ही अपने साथियों के साथ लेकर, क्लेमोर, तीर-धनुष, भरमार लेकर उनका पीछा करने निकल जाते थे। हर घटना में उन्होंने बहादुरी से भाग लिया। इस गांव में कितनी ही बार सलवा जुडूम गुंडों ने हमला किया, लेकिन बहादुर जन मिलिशिया ने हर बार उनको पीछे हटने पर मजबूर किया। कामरेड आयतू पर जनता का जबर्दस्त विश्वास था। कामरेड आयतू की शहादत का समाचार सुनकर गांव की जनता में शोक की लहर फैल गई। सैकड़ों जनता ने उनकी अंतिम यात्रा में भाग लिया। ★

eMyh e f[kyh yky iQy dkejM rYye che

जिसने दुश्मन के अत्याचारों को परास्त करते हुए पार्टी का एक भी भेद नहीं खोला!

मंडेली, दक्षिण बस्तर जिले के जेगुरगोंडा एरिया में स्थित एक छोटा सा आदिवासी गांव है। तेल्लम परिवार के गोल्ला वड्डे दंपत्ति की बड़ी बेटी थी, तेल्लम बीमे। बीमे की एक छोटी बहन और एक छोटा भाई है। बढ़ती उम्र के साथ-साथ वे खेती के कार्यों में मां-बाप का सहारा बनी थीं। नागर (हल) जोतने के अलावा सभी कार्यों में शामिल होकर बाप का दांया हाथ बनी थीं। मां-बाप उन्हें बहुत बड़ा सहारा मानते थे। मंडेली गांव में क्रांतिकारी आन्दोलन का प्रभाव अधिक था। इसलिये जबसे अकल आई तभी से बीमे गांव में आयोजित होने वाले सभा-सम्मेलनों में भाग लेती थीं। वहां की राजनीतिक चर्चा सुनकर पार्टी गतिविधियों में शामिल होने का उन्होंने मन बना लिया था। बचपन से ही निडर एवं निर्भीक रही कॉमरेड तेल्लम बीमे अपने गांव की सुरक्षा में लगी रहीं। दिन हो या रात, कभी भी संतरी ड्यूटी करने को तैयार रहती थीं। गांव पर हमला करने के लिये दुश्मन जिन रास्तों से आता था, उन रास्तों में जन मिलिशिया के द्वारा एंबुश लगाया जाता था। ऐसे तमाम एंबुशों में उन्होंने भाग लिया। दुश्मन के बारे में जानकारी इकट्ठा करने आसपास में घूमती थीं। सलवा जुडूम के शुरू होने के बाद जन मिलिशिया की गतिविधियों में तेजी आयी। इससे बीमे का ज्यादातर समय जन मिलिशिया की गतिविधियों में बीतता था जिससे घरेलू कार्यों के लिये समय निकालना मुश्किल होता था। घर के कामकाज में ध्यान न दे पाने के चलते मां-बाप थोड़े नाराज हो गये थे। तब कॉमरेड बीमे ने अपने मां-बाप को समझाया कि जन मिलिशिया का कामकाज ही उसके लिये महत्वपूर्ण है, बाद में घरेलू काम! बीमे जन मिलिशिया के कामकाज में ओर सक्रिय होती गयीं।

एरिया कमेटी के निर्णय पर जुलाई 2007 में एक दिन कुंडेर गांव के सलवा जुडूम गुण्डों के घरों पर हमला किया गया। पलटन के नेतृत्व में स्थानीय जन मिलिशिया को इकट्ठा करके इस हमले को अंजाम देने की योजना बनाई गई थी। मंडेली की जन मिलिशिया से 5 लोगों को भेजने पलटन ने खबर भेजी थी। जन मिलिशिया कमांडर ने अपने सदस्यों की बैठक करके विषय से उन्हें अवगत कराया और पांच लोगों का चयन किया। इसमें बीमे का नाम नहीं था। बीमे को किचन ड्यूटी सौंपी गयी थी जिससे वे खासी नाराज हो गयी और कमांडर से बहस में उतर गयीं। इस बार हमले में शामिल होने के लिये उन्होंने मौका देने की जिद की थी, आखिर कमांडर को उनकी बात माननी पड़ी। बीमे उत्साह और उमंग के साथ पांच लोगों की टीम में शामिल होकर हमले में भाग लेने निकल पड़ीं। गांव के बाहर संकेत स्थल में जाकर पलटन को ढूंढ़ाए लेकिन पलटन स्थल पर नहीं मिली। मंडेली की जन मिलिशिया कॉमरेड्स का इंतजार किया लेकिन तयशुदा समय पार होने के बाद पलटन अन्य गांवों की जन मिलिशिया के साथ मिलकर हमले के लिये निकल चुकी थी। मंडेली जन मिलिशिया के कॉमरेड्स निराश होकर वापस जाने लगे। कॉमरेड बीमे का मुंह छोटा हो गया था। हताशा के चलते वे नीरस ढ़ंग से चलने लगी थीं। अपने गांव पहुंचने के लिये उन्हें बीच के एक गांव को पार करना था। उस गांव की जनता भी जंगल में छुपकर रह रही थी। गांव में कोई नहीं था। गश्त के लिये निकली पुलिस की टुकड़ी गांव के खाली घरों में आराम कर रही थी। गांव की पगडंडी से आपस में बातचीत करते हुये चल रहे जन मिलिशिया कॉमरेड्स की आवाज सुनकर पुलिस बल सचेत हो गया और घरों में पोजिशन ले लिया। थोड़ी देर पहले ही जन मिलिशिया कॉमरेड्स उसी रास्ते से गये थे, इसलिये वे सचेत नहीं थे। घरों के पास पहुंचते ही पुलिस ने जन मिलिशिया कॉमरेड्स पर गोलीबारी शुरू कर दी। अचानक हुये इस हमले से बीमे, जन मिलिशिया कॉमरेड जंगल की ओर दौड़ पड़े। चूंकि कॉमरेड बीमे कुछ सोचते हुये चल रही थी, इसलिये सचेत होने के पहले ही पुलिस के चुंगल में फंस गयी। फिर भी वह पुलिस से छूट कर दौड़ रही थीं। लेकिन पुलिस के 4 जवानों ने उन्हें पकड़ लिया। सांड जैसे इन पुलिस वालों ने बीमे के हाथ-पैर बांध दिये और कपड़े फाड़ दिये। छापामार दस्ता और जन मिलिशिया के डेरों के बारे में कॉमरेड बीमे से जानकारी हासिल करने के लिये पुलिस वालों ने उन्हें भयंकर यातनायें दीं। लेकिन हिम्मत और साहस की धनी कॉमरेड बीमे पुलिस अत्याचारों की धज्जियां उड़ाती हुई उन्हें एक भी जानकारी नहीं दी। और पार्टी की गोपनियता की रक्षा की। हमारी प्यारी कॉमरेड बीमे के साथ पुलिसिया दरिंदों ने सामूहिक बलात्कार किया और उन्हें अंत में गोलियों से भून कर लाश को सड़क किनारे फेंक कर अपनी पाशविकता परिचय देकर चले गये। बाद में जन मिलिशिया कॉमरेड्स एवं ग्रामीणों ने घटना स्थल पर पहुंचकर कॉमरेड बीमे के शव को कपड़े पहना कर गांव में लाकर क्रांतिकारी सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया। जन दुश्मनों पर हमलों में भाग लेने का उत्साह दिखाने वाली बीमे ने मात्र 18 साल की छोटी उम्र में ही जनता के लिये अपनी जान की बहुत बड़ी कुरबानी दी।

कॉमरेड बीमे का संकल्प, उनकी वर्गीय नफरत, तमाम यातनाओं का उपहास उड़ाते हुये पार्टी की गोपनियाता, अपने साथियों की सुरक्षा के लिये उन्होंने जो हिम्मत दिखाई, हर वक्त पार्टी के काम को प्राथमिकता देने की प्रतिबद्धता आज के युवक-युवतियों के लिये अनुसरणीय हैं। कॉमरेड बीमे की दृढ़ता, साहस, वर्ग दुश्मन के प्रति घोर नफरत, दुश्मन के साथ लड़ने का उत्साह को आत्मसात करके उसके सपनों को साकार करेंगे। दुश्मन को खून की नदियों में डूबो कर उनकी शहादत का बदला लेंगे। उनके नक्शेकदम पर चलेंगे। कॉमरेड बीमे की आशाओं को आगे बढ़ायेंगे। ★

lkgfld xfjYyk dek.Mj dkejM jru dh ;kn e---

(पलटन-2 के कमांडर कामरेड रतन एक ऐम्बुश के दौरान दुश्मन से वीरता से लड़ते हुए शहीद हुए। उन्हें याद करते हुए एक कामरेड ने यह कथनात्मक रिपोर्ट हमें भेजी है जिसमें उनकी जीवनी पर रोशनी डाली गई है। हम इस रिपोर्ट को हू ब हू छाप रहे हैं।

-संपादक मंडल)

साथी रतन की शहादत का समाचार 2007 ढलते समय में मुझे मिला। एक ओर पीएलजीए योद्धाओं ने निहत्थे रहते हुये-दुश्मन के बंदीखाने में चौबीसों घंटा पहरा, कंटेदार तारों, 25 फीट ऊंचाई की दीवारों में भी हथियारबंद पुलिस जवानों पर हमला कर सात बंदूकें छीनकर, 299 बंदियों का जेल तोड़कर आना-देशभर में प्रचार माध्यमों के फैल्श न्यूज होना-उत्पीड़ित जनता इस घटना से प्रेरणा ले रही है। दूसरी ओर 20 दिसंबर को आंतरिक सुरक्षा को लेकर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की अध्यक्षता में राज्य के मुख्यमंत्रियों की बैठक में जेल ब्रेक पर गहरी चिंता जताई गई। वहीं उसी दिन जेल में बंद बंदी की मौत पर बिहार में बंद की घोषणा की गई थी। गोल्लापल्ली के समीप 12 पुलिस वालों को खत्म कर उनके सारे हथियार पीएलजीए ने जब्त कर लिये, जो पूरे देश की उत्पीड़ित जनता को प्रेरणा दे रहा था। किंतू इस क्रांतिकारी जोशोखरोश, बदलते राजनीतिक घटना क्रम, राज्य के लूटेरी भाजपा सरकार द्वारा केंद्र से मांग की जा रही अतिरिक्त 70 बटालियनों पर अपने बीच हो रही बहस में भाग लेने के लिये आज वो हंसता हुआ, दुबला-पतला नव जवान हमारे बीच नहीं है। अपने छह साल के क्रांतिकारी जीवन में कॉमरेड रतन कभी न भूलने वाली कई यादें, पद चिन्ह, आवाजें छोड़ गया है।

आठ साल पहले गर्मी का मौसम था। जब स्थानीय दस्ता मिनागचाल नदी के किनारे डेरा डाले हुये था। गंगलूर के नजदीक बसे गांव रेड्डी में 23 वर्ष पहले जन्म लेने वाला यह युवक मेरे पास आकर हंसते चेहरे के साथ पूछता है ''मुझे दल में भर्ती करोगे? मैं दल में भर्ती होना चाहता हूं'' मैं कुछ देर तक इस मासूम चेहरे को देखता हुआ इसके सवाल का जवाब देने के बारे में सोचता हूं। मैंने कहा तो बताओ दल में क्यों भर्ती होना चहाते हो? छापामार जिंदगी में तुम्हे ऐसी कौन सी खूबी नजर आई? तुम कितने पढ़े-लिखे हो? आदि इस तरह के प्रश्नों की बौछार मैने कर दी। इन सवालों को सुनकर वह मासूम सा लड़का, तेजस्वी तेवर से थोड़ी देर में हतप्रभ होकर बोलने लगा ''मैं जनता के लिये लड़ना चाहता हूं। पांचवी तक पढ़ाई की है। गांव में डीएकेएमएस का काम, गांव के सरपंच, पटेल की लूट व भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष मुझे लगा। सीएनएम के गीतों ने मेरे दिल को छुआ है। इसलिये मैं दल में भर्ती होना चाहता हूं।'' उन्होंने मेरे सवालों का जवाब देते हुये कहा, तो मैंने उसे हिदायत दी ''अभी तो तुमने स्कूल छोड़ी है। गांव के जन संगठन में सक्रिय भागीदारी लो। पार्टी संगठन तथा माओवादी राजनीति के बारे में कुछ समझो तभी ही तुम कष्टप्रद क्रांतिकारी छापामार जीवन में टीक सकते हो। किंतू उनका मन एक ओर तो मेरे शब्द उचित लगे मगर दूसरी ओर तत्काल दल में भर्ती होने की इच्छा पूरी नहीं होने पर बैचेन हो गया।

कॉमरेड रतन ने महारा समाज के एण्ड्रीक परिवार में जन्म लिया था। उसके माता-पिता उसे राजू कहकर पुकारते थे। घर का छोटा लड़का होने के नाते भाई-भाभी लोग सब उन्हें लालसा से देखते थे। गांव की प्राथमिक शाला में पांचवीं उत्तीर्ण होने के बाद घर की आर्थिक हालात कमजोर होने के कारण आगे पढ़ाई जारी नहीं रख सका। खेति काम में परिवार के साथ हाथ बंटाना शुरू किया। गांव के जन संगठन में सक्रिय रूप में काम कर रहा था। रेड्डी गांव के 100 परिवार में अधिकांश परिवार तेलगा समाज के हैं। महारा समाज के 10 परिवार ही हैं। घर में हल्बी ही बोलते थे लेकिन गांव में अधिकांश लोग तेलगा होने के कारण तेलुगू भी वह अच्छी जानता था। डीएकेएमएस के सदस्यता पाकर सक्रिय रूप से काम करना शुरू किया तथा कम समय में गांव की डीएकेएमएस कमेटी का सदस्य बनकर उन्होंने कमेटी सचिव का कार्यभार संभाला।

डीएकेएमएस में रहते हुये तेन्दूपत्ता मजदूरी बढ़ाने जैसे आर्थिक, शहीद सप्ताह, आठ मार्च, पृथक बस्तर जैसे राजनीतिक आन्दोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया। गंगलूर नजदीक होने के कारण पुलिस की गश्त, संगठन सदस्यों की धरपकड़ के लिये छापेमारी से बचते हुये, दमन का सामना करते हुये संगठन की गतिविधियों को अंजाम दिया।

सन् 2002 मार्च महीने में पीएलजीए में कॉमरेड रतन भर्ती हुये थे। तभी से उन्होंने मद्देड़ एरिया के आवापल्ली एलओएस में सदस्य के रूप में छापामार जीवन की शुरूआत की। उन्होंने कई सैनिक कार्रवाइयों में, टीसीओसी में भाग लिया। 'प्रभात', 'जंग' जैसी पत्रिकायें और दैनिक सामाचार पत्र अच्छे से पढ़ता था। वर्ग

संघर्ष में तपते हुये अपनी राजनीतिक समझदारी, मार्क्सवाद का प्राथमिक ज्ञान को बढ़ाने का अथक प्रयास करते थे। साथियों से मिलजुलकर रहते हुये आम जनता से भी घुलमिल कर रहता था। दस्ते के अनुशासन का रतन कड़ाई से पालन करते थे।

आवापल्ली, मद्देड़ एरिया में हुये कई आर्थिक व राजनीतिक संघर्षों में जनता को गोलबंद करने में अपने स्तर पर उन्होंने काफी कोशिश की। दस्ता के उप कमांडर के रूप में तथा 2005 के अंत से मद्देड़ एरिया कमेटी सदस्य के रूप में रतन ने अपनी क्रांतिकारी जिम्मेदारियां बखूबी निभाई हैं।

सैनिक कार्यवाहियों में काफी रुचि रतन दिखाता था। 2003 मई में लोदेड़ में पुलिस के साथ हुई मुठभेड़, तथा इलिमिबि के पास प्लाटून के साथ किये गये एंबुश, मुखबिरों का सफाये में उन्होंने काफी सक्रिय भागीदारी की। 2005 जून से पश्चिम बस्तर के कुटरू, वेदिरे, भैरमगढ़, माटवाड़ा क्षेत्र में बढ़ते क्रांतिकारी आंदोलन का सफाया करने के लिये कांग्रेस नेता महेन्द्र कर्मा के नेतृत्व में केन्द्र-राज्य शासन ने साठगांठ कर जब सलवा जुडूम का जूल्मों-सितम शुरू किया था। मद्देड़ के आवापल्ली, कोवेल क्षेत्र में सलवा जुडूम का दमन अभियान सितंबर 2005 तक पहुंचा था। गांव-गांव की पूरी जनता, संगठन के सदस्य सलवा जुडूम के फासीवादी दमन के तरीकों, हत्याओं को देख कर दहल रहे थे। खेत-खलिहानों में निहत्थे आदिवासी किसानों का खून बहाया जा रहा था। 'घेरा डालो और विनाश करा' की नीति के तहत अध-सैनिक बल, सीआरपीएफ, सीएएफ, डीएफ, नगा पुलिस सयुंक्त रूप से गांवों को घेर कर फसल जलाते हुये, घरों को आग लगाते हुये, सब को मार डालो, सब कुछ खत्म कर डालो की तर्ज पर तांडव कर रहे थे। नये-नये पुलिस कैंप कार्पेट सेक्यूरिटी के तहत बनाये जा रहे थे। इस भीषण दमन के समय में मद्देड़ एरिया की जनता को सलवा जुडूम के प्रतिरोध में खड़ा करने में रतन ने एरिया कमेटी सदस्य के नाते महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सलवा जुडूमी गुण्डों पर किये गये कई हमलों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। चेरकुल जैसा गांव के मुखिया लोग सलवा जुडूम में शामिल होकर दल के ऊपर हमला करने में आगे आये थे। इन्हें सबक सिखाने में भी रतन शामिल था। लुटेरी सरकार द्वारा संचालित घेराव-दमन की कार्यनीतिक अभियानों को नाकाम करने के मकसद से जवाबी मुहिम के बतौर कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान (टीसीओसी) पार्टी द्वारा चलाया गया। 2006 के अभियान में भाग लेते वक्त मद्देड़ के पास स्थित फारेस्ट गेस्ट हाऊस पर किये गये हमले में आग से झुलस कर घायल हो गया था। किंतू हिम्मत नहीं हारा, घायल अवस्था में भी दस्ता के काम में भाग लेता था। इनकी सैनिक कार्यदक्षता को देखते हुये डिविजनल पार्टी कमेटी ने इनका 2006 अंत में कम्बैट फोर्स में तबादला कर नेशनल पार्क प्लाटून में भिजवा दिया।

प्लाटून कमांडर के रूप में कॉमरेड रतन

पीएलजीए के सेकंडरी बल में प्लाटून में सेक्शन कमांडर के रूप में प्लाटून-2 में 2006 अंत से पदभार ग्रहण किया था। जनवरी 2007 में बोधपारा के पास पुलिस के ऊपर किये गये हमले में भाग लिया। इस हमले में तीन पुलिस जवान घायल हुये थे। नेशनल पार्क के क्षेत्र में दुश्मन के साथ मुकाबला करने में लगातार भागीदार रहे।

ऐतिहासिक रानीबोदली शार्ट सरप्राइज हमले में असाल्ट पार्टी में रहते हुये दुश्मन के ऊपर साहस करते हुये बिजली जैसे पुलिस पर टूट पड़े थे। इस हमले में दिये गये टारगेट को रतन ने सफल किया। इस हमले के दौरान दुश्मन की गोलियों से हाथ की उंगलियां टूट गई थी, साथी मोहन, लिंगन्ना, कैलाश, भगत, भीमाल, चैतू दुश्मन की गोलीबारी में शहीद हुये थे, किंतू रतन घायल होकर भी दुश्मन के ऊपर फायरिंग करते हुये शहीद साथियों के शवों को लाने में, दुश्मन की हथियार छीनने में आगे रहा है। क्रांतिकारी छापामार का आदर्श व आदम्य साहस दिखाया था। 55 पुलिस जवानों का सफया करने तथा 32 बंदूके जब्त करने में एक जांबाज छापामार के रूप में आदर्श भूमिका रतन ने निभाई थी।

रानीबोदली में घायल होने के पश्चात कुछ दिन घाव सुधारने तथा स्वास्थ्य ठीक होने तक आराम लेकर प्लाटून कमांडर के रूप में मई 2007 से दायित्व संभाला। इस दौरान पीएलजीए सप्ताह को सफल बनाने के लिये खूब कोशिश की थी। दुश्मन के सघन गश्त अभियान को नाकाम करने तथा प्रतिरोध करने हेतु दिसंबर 13 को छापामारों ने आवापल्ली क्षेत्र में चेरामंगी-मुरकीनार के बीच में सीआरपीएफ, एसपीओ रोड़ ओपेनिंग पार्टी पर एंबुश कर एक सीआरपीएफ जवान को खत्म कर दो जवानों को घायल किया था। इस हमले में साथी रतन मरे हुये पुलिस जवान की बंदूक जब्त करने के लिये आगे बढ़ ही रहा था कि पुलिस की गोली लगने से शहीद हो गया। किन्तू अपने जांबाज योद्धाओं ने साथी रतन के शव को पुलिस वालों को छूने तक नहीं दिया। शव को साथ में लाये तथा जनता के बीच शोक सभा आयोजित कर क्रांतिकारी सम्मान के साथ शव पर पीएलजीए के झण्डे का कफन ढका कर तथा रतन को अंतिम विदाई दी।

कॉमरेड रतन आज अपने बीच में नहीं है। किन्तू रतन के सपने, उसके विचार, यादें, उनकी आदर्श छापामार जिंदगी हमें हमेशा प्रेरणा देती रहेगी। पार्टी की एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस द्वारा निर्देशित 'दण्डकारण्य, बिहार-झारखण्ड को आधार इलाके में बदल डालो, छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में विकसित करो' के लक्ष्य को साकार करने के लिये, जनता के लिये अपनी जान न्यौछावर कर गया है। बस्तर की गौरवशाली माटी से रतन जैसे अनमोल जवाहर छापामार योद्धा रतन की शहादत से प्रेरणा लेते हुये पैदा होंगे। उसके सपनों को साकार बनायेंगे। ✯

पाठकों से....

आप तक समय पर 'प्रभात' नहीं पहुंच पा रही है। इसके लिए हमें खेद है। जनवरी से जून तक का यह संयुक्त अंक आप के हाथ में है। कुछ शहीदों की जीवनियां 'प्रभात' में छपने से छूट गई हैं, उन्हें इकट्ठा कर जरूर भेजें। रिपोर्टों में तारीख, स्थल/डिवीजन आदि को लिखकर फोटो समेत भेजें।

- संपादक मंडल

iyVu&14 d cgknj dekMj dkejM pr (ln# mbdk)
lnk turk d fnyk e cl jgx!

21 फरवरी 2007 को दिन के 11.30 बजे सिरिकोण्डा जंगल में पलटन के डेरा पर पुलिस का हमला हुआ जिसमें हमारे प्यारे कामरेड चैतू शहीद हो गए। पलटन के कमाण्डर कामरेड चैतू ने दुश्मन का मुकबाला साहसपूर्वक किया। जैसे ही दुश्मन ने हमला शुरू किया तो कामरेड चैतू ने अपने साथियों को काशन दिया कि दुश्मन के हाथों में कुछ भी नहीं लगना चाहिए। दुश्मन द्वारा की जा रही अंधाधुंध फायरींग में कामरेड चैतू के पेट में गोली लगी जिससे वो गंभीर रूप से घायल हो गये। उन्होंने फायरींग की तीव्रता और अपनी घायल अवस्था का ख्याल करते हुए सोचा कि अब यहां से निकलना मुश्किल है। इसलिए उन्होंने अपनी रायफल दूसरे साथियों को सौंपते हुए रिट्रीट होने का काशन दिया।

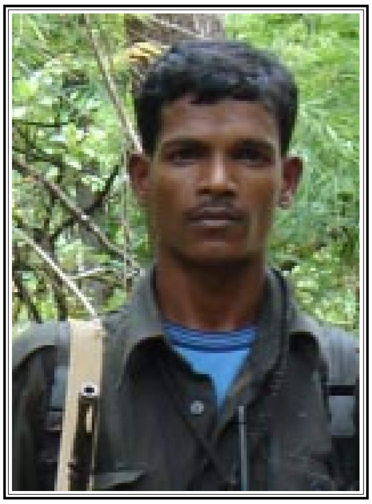

24 वर्षीय योद्धा कामरेड चैतू का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन के कर्रेबोदली गांव में एक मध्यम वर्गीय आदिवासी किसान परिवार में हुआ था। उइके दंपत्ति ने उन्हें सुदरू नाम दिया। 2000 में कामरेड सुदरु पार्टी में भर्ती हुए। मार्च 2001 में उनकी बदली गड़चिरोली डिवीजन में हुई। 2001 से 2004 तक उन्होंने पलटन-3 में काम किया और 2004 से 2005 मई तक एलजीएस के कमांडर की भूमिका निभाई। उन्होंने अहेरी एरिया कमेटी में रहकर सैनिक काम-काज की देखरेख की।

जीना-मरना पार्टी में और जनता बीच!

लड़ाई की जरूरत को देखते हुए जहां भी भेजा जाए, इसके लिए कामरेड चैतू हमेशा तैयार रहते थे। अहेरी से लेकर टिप्रागढ़ तक जहां भी काम होता वह वहां जाकर उसे करते थे। अंजान बोली को सीखा, अंजान घरों को अपना बनाया। पश्चिम बस्तर से लेकर उत्तर गड़चिरोली, मानपुर, माड़ डिवीजन सब जगह उन्होंने घूम कर देखा। घर छोड़ने के बाद 'सारी जनता मेरा घर है, मेरे साथ काम करने वाले मेरे साथी ही मेरे सगे-संबंधी हैं' ऐसी हमारे प्रिय कामरेड चैतू की सोच थी। घर से जब मां-बाप के निधन की खबर सुनी तब भी उन्होंने अपना दिल छोटा नहीं किया। गड़चिरोली डिवीजन को उन्होंने पूरे सात वर्ष तक अपनी कर्मभूमि बनाया रखा, लेकिन कभी घर को देखने, मां-बाप को देखने के लिए जाने का प्रस्ताव नहीं रखा। कामरेड चैतू के इस त्याग से हमें बहुत कुछ सिखना है।

धैर्यशील सैनिक कमांडर

उत्तर तेलंगाना व दण्डकारण्य के आंदोलन के बीच समन्वय कर लोकयुद्ध को आगे बढ़ाने के विचार से संयुक्त सैनिक कार्रवाइयां करने का केन्द्रीय कमेटी ने निर्णय लिया था। उस प्रस्ताव को अमल करते हुए गड़चिरोली डिवीजन से 11 लाल सैनिकों के एक दस्ते को प्रतिरोध के लिए आंध्रप्रदेश के आदिलाबाद डिवीजन में भेजा गया था। ऐम्बुश के लिए कोशिश कर ही रहे थे कि दुश्मन को उसका समाचार मिल गया। ऐम्बुश जगह पर बैठ कर वापस अपने डेरा पर आ रहे थे लेकिन दुश्मन वहां पहले ही घात लगाकर बैठा हुआ था। जब हमारे कामरेड चाय पीने के लिए जमा हुए तो दुश्मन बलों ने चारों तरफ से अंधाधुंध गोलियां बरसानी शुरू कर दी। इस गोलीबारी में ऐम्बुश पार्टी के कमांडर कामरेड सलीम शहीद हुए थे। दो साथियों के हाथ में गोली लगने से घायल हो गये थे। ऐसी परिस्थिति में कामरेड चैतू ने गजब की सहनशक्ति का परिचय दिया। तब कामरेड चैतू शहीद कामरेड सलीम की रायफल उठाकर कमांडिंग करते हुए साथियों को लेकर रिट्रीट हुए। कामरेड चैतू उस इलाके की न भाषा को जानते थे न ही इलाके के को जानते थे। जनता से भी उतना संबंध नहीं रहा था। लेकिन दुश्मन जहां देखे वहां चारों तरफ मुस्तैद था, किया जो तो क्या किया जाए? नहाने के लिए एक जगह गए तो वहां फायरींग हुई जिसमें एक कामरेड शहीद हो गया। न खाने के लिए खाना था, न ही पीने के लिए पानी। पूरा एक सप्ताह भर वो भूखे रहे। पीने के पानी के लिए कुछ बर्तन भी साथ नहीं था। जेब में पड़ी झिल्लियों में ही पानी भर कर पीना पड़ा।

उनके साथ आ रहे कामरेड सोमजी भी एक घटना में शहीद हो गए। इस तरह से मात्र तीन दिनों में चार जगह फायरींग हुई और हमारे 7 प्रिय कामरेडों को जान गवांनी पड़ी। ऐसी विकट परिस्थितियों में बचे हुए कामरेडों का मनोबल बढ़ाते हुए सिविल ड्रेस में वापस अपने इलाके अहेरी में आए और पार्टी से संपर्क किया।

2004 अप्रैल महीने में अहेरी एलओएस एरिया के वेडमपल्ली गांव में हमारा दल पलटन की संख्या में डेरा डाले हुए था। एक मुखबिर की खबर पर कमांडो बलों ने हमला बोल दिया। उस समय कामरेड चैतू डिप्यूटी कमांडर थे। कमांडर के साथ समन्वय करते हुए उन्होंने दुश्मन का डटकर मुकाबला किया। 40 मिनट की भीषण गोलीबारी के बाद कमांडो बलों को पीछे हटने पर मजबूर होना पड़ा। इस घटना से अहेरी की जनता व पीएलजीए में जबर्दस्त उत्साह का संचार हुआ।

2007 सितंबर-अक्टूबर के विशेष टीसीओसी अभियान में उत्तर गडचिरोली डिवीजन में गए। वहां रोप्पि डेलिबिरेट ऐम्बुश में असल्ट टीम के कमांडर के बतौर जबर्दस्त भूमिका निभाई। अपनी टीम को एड्वांस किया। जब टीम का एक साथी घायल हो गया तो उनकी रायफल के साथ साथी को भी लेकर रिट्रीट हुए।

2001 से लेकर अपनी शहादत तक कामरेड चैतू गड़चिरोली डिवीजन में रहते हुए कई ऐम्बुशों में शामिल हुए और कई

(शेष पृष्ठ 19 में...)

nkcj gey e 'kghn g, dkejMk dk dkfV&dkfV vfHkunu

वीरों के रक्त से रंजित इंकलाब की राह पर आगे बढ़ते रहेंगे !

22 फरवरी 2008 को दोबूर के जंगल में हुये पुलिस हमले में पीएलजीए के पांच जांबाज कॉमरेडों ने बहादुरी की मिसाल कायम करते हुये वीरगति को प्राप्त किया। गड़चिरोली की पलटन-7 के कॉमरेड और भाम्रागढ़ एरिया कमेटी के सदस्य कॉमरेड जग्गु कुछ साथियों के बीमार होने की वजह से जंगल में डेरा डाले हुये थे। किसी जनद्रोही की मुखबिरी के आधार पर गड़चिरोली सी-60 के दरिंदे कमांडो ने भारी संख्या में आकर मुंह अंधेरे ही हमला कर दिया। कमांडो बलों के हमले का मुहंतोड़ जवाब देते हुये कॉमरेड जग्गु, कॉमरेड राधा, कॉमरेड कुम्मे, कॉमरेड रजिता और कॉमरेड लालू शहीद हो गये। दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी इन बहादुर योद्धाओं को नम आंखों से श्रद्धांजली देते हुये इन्हें क्रांतिकारी अभिनंदन करती है। इन कॉमरेडों की संक्षिप्त क्रांतिकारी जीवनी प्रस्तुत करती है।

dkejM tXx

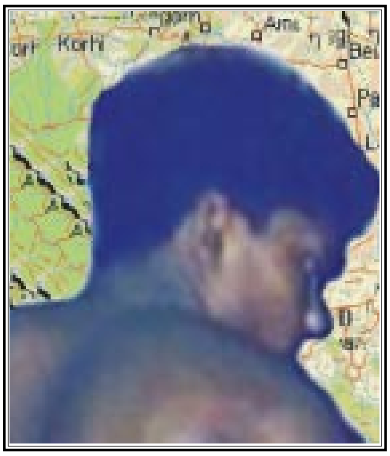

दक्षिण बस्तर के किष्टाराम एरिया में एक गांव है एन्डुम। यह गांव शुरू से ही, अर्थात 80 के दशक से ही क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र रहा है। इसी गांव में कॉमरेड जग्गु जन्म लिये थे। घर में माता-पिता के अलावा एक छोटा भाई है। क्रांतिकारी मिट्टी और आबोहवा में पले बढ़े कॉमरेड जग्गु पहले बाल संगठन में फिर जन मिलिशिया में भर्ती हुये और दुश्मनों को हैरान-परेशान करने की कार्यवाहियों में भाग लेते हुये अपनी सैनिक समझदारी को विकसित किया। 2000 के अंत होने के पहले ही वे पार्टी में पूर्णकालिक रूप से भर्ती हो गये। 2001 के मोटू थाने पर हमले में कॉमरेड जग्गु ने बढ-चढ़कर हिस्सा लिया। इस हमले में कॉमरेड जग्गु के कंध में दुश्मन की गोली लगी थी। घाव तो ठीक हो गया लेकिन उनका एक हाथ पूरी तरह काम नहीं कर पाता था। भारी बंदूक वे उठा नहीं पाते थे। सैनिक कार्यों में रूचि रखने वाले नौजवान जग्गु के लिये यह किसी त्रासदी से कम नहीं था। गड़चिरोली डीवीसी स्टॉफ में रहते समय जब टीसीओसी अभियान चलाया जाता था तो वे स्टाफ के साथियों के साथ दुश्मन पर घात लगा कर हमले करने के लिये निकल पड़ते थे। पार्टी नेताओं से छोटा हथियार जिसे वे अच्छी तरह से चला सकते हों ऐसे हथियार की मांग वे हमेशा करते थे। वह आदर्श कम्युनिस्ट की मिसाल थे। सादा जीवन-उच्च विचार उनकी जीवन शैली थी। जनता की सेवा तथा उनसे विनयपूर्वक व्यवहार उनकी आदत थी जिसने उनको जनता का चहेता बना दिया। साथी कॉमरेड उनके नेतृत्व में काम करने के लिये हमेशा तैयार रहते थे। डीवीसी स्टॉफ में कॉमरेड जग्गु एसी स्तर वाले कॉमरेडों में सबसे जूनियर थे लेकिन सभी सीनियर एसी सदस्यों ने और पार्टी सदस्यों ने सर्व सम्मति से कॉमरेड जग्गु को अपना कमांडर व नेता चुना। कॉमरेड जग्गु पार्टी नियमों का कड़ाई से पालन करते थे। फिजूलखर्ची को वे बिलकुल भी बर्दाश्त नहीं करते थे। पार्टी निधि के एक-एक पाई का वे हिसाब रखते थे। कॉमरेड जग्गु के ऊपर जिम्मेदारी देकर डीवीसी कॉमरेड निश्चिंत रहते थे। उक्त जिम्मेदारी का काम पूरा होने का उन्हें पूरा भरोसा होता था। कॉमरेड जग्गु डीवीसी स्टॉफ में रहने के बाद वर्तमान में भाम्रागढ़ एरिया कमेटी के अन्तर्गत काम करते थे। कॉमरेड जग्गु की शहादत गड़चिरोली डिवीजन के लिये एक बड़ी क्षति है। डिवीजन ने एक आदर्श कॉमरेड को खो दिया है।

dkejM jk/k

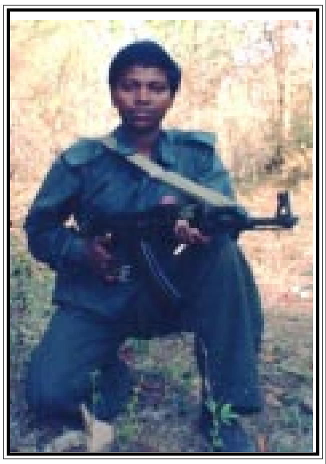

गड़चिरोली में 1991 से 1994 तक दुश्मन द्वारा चलाये गये भीषण दमनचक्र में पुलिस जहां दल को खाना देने वालों की हत्या तक कर देती थी, ऐसे समय में पार्टी के साथ मजबूती से खड़े रहने वाले परिवार में जन्मी थी कॉमरेड राधा। गड़चिरोली जिले में कोरची तहसिल के कोसमी गांव में कॉमरेड राधा का होड़ी परिवार में जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम पंडी होड़ी है। कॉमरेड राधा का नाम इनके माता-पिता ने घर में कमला दिया था। कोसमी गांव में कॉमरेड राधा का परिवार अत्यंत गरीब परिवारों में आता है। गरीबी और अभावों में पली कॉमरेड राधा ने पहले क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की सदस्यता ली। अपने गांव में हर घर की महिलाओं को केएएमएस में संगठित किया। महिलायें जब तक पीएलजीए में भर्ती नहीं होंगी तब तक महिला मुक्ति संभव नहीं है, इस समझदारी के साथ प्रजा रक्षा दल (पीआरडी) में भर्ती हो गई तथा कई हमलों में भाग लिया जिसमें अकाल हमला प्रमुख है। उसके बाद वे 2003 में टिप्रागढ़ दल में भर्ती हो गई। दल में भर्ती होने के बाद गड़चिरोली में बनी पलटन-7 की सदस्या बनीं। पलटन-7 में रहते हुये कॉमरेड राधा कई हमलों और पुलिस से हुई मुठभेड़ों में शामिल हुई। पलटन के अच्छे लड़ाकों में कॉमरेड राधा की

गिनती होती थी। 22 फरवरी 2008 को दोबूर में कमांडो के हमले में कॉमरेड राधा ने वीरता की जो मिसाल पीएलजीए के सामने पेश की वो हर पीएलजीए सैनिक के लिये अनुकरणीय है।

दोबूर मुठभेड़ में कमांडो ने जैसे ही दल पर हमला किया कॉमरेड राधा के पैर में गोली लग गई। कॉमरेड राधा ने अपनी चोट की परवाह किये बिना दुश्मन पर जवाबी फायर झोंक दिया। बीमार पलटन उप कमांडर की एसएलआर राइफल उस समय कॉमरेड राधा के पास थी। उन्होंने एसएलआर की पहली गोली से एक पुलिस कमांडो को मार गिराया और अपनी राइफल से तब तक फायरिंग करती रही जब तक पलटन के बीमार साथी सुरक्षित ना निकल गये। कारतूस खत्म होने के बाद आखिर में दुश्मन को आगे बढ़ने से रोकने के लिये दुश्मन पर हथगोला फेंका, शरीर में कई गोलियां लगने की वजह से कॉमरेड राधा शहीद हो गई।

वीरता और बहादुरी में कॉमरेड राधा जहां सबके लिये एक आदर्श थीं, वहीं पलटन में उनका व्यवहार सबसे मित्रवत व कॉमरेडाना रहता था। किसी साथी से उनका कभी मन मुटाव नहीं हुआ था। मीठी बोली उनकी बातचीत की विशेषता थी। कम्युनिस्ट मूल्यों की जीती जागती प्रतिमूर्ति थीं कॉमरेड राधा। कॉमरेड राध ा की शहादत महिला कॉमरेडों के लिये ही नहीं, पूरी पार्टी के लिये एक आदर्श है। हमारी प्रियतम कॉमरेड राधा को कोटि-कोटि नमन।

dkejM dEEk

कॉमरेड कुम्मे गड़चिरोली जिले के भाम्रागढ़ तहसील के पेनगुंडा गांव में जन्म ली थी। कुम्मे जब छोटी थी तभी मां-बाप का देहांत हो गया था। तीन बड़े भाई अलग-अलग घर बसा कर रहने लगे। छोटी सी कुम्मे के ऊपर दो छोटे भाइयों को पालने का बोझ आ पड़ा। गांव में लोगों के घर अपनी क्षमता के अनुसार काम करके अपना और अपने छोटे-छोटे भाइयों का मुश्किल से पेट भरती थी। कुम्मे जब 15 साल की हुई तब अपने भाइयों को लेकर अपने मामा के घर चली गई। मामा के घर रहते हुये वह पार्टी के दस्ते के संपर्क में आई थी। दस्ता जब भी उनके गांव में जाता तब वे दस्ते के पास जरूर आती थी।

गांव के मुखियाओं द्वारा युवक-युवतियों को दस्ते के पास न जाने का दबाव डाला जाता था। तब अन्य नौजवानों के समान कुम्मे भी छुप-छुपकर दस्ते से मिलती थी। कॉमरेड कुम्मे का घर का नाम मानो था। मानो दस्ते की महिला कॉमरेडों की स्थिति देखती और बहुत प्रभावित होती थी। महिलाओं को पुरुषों के समान आजादी और एक समान देखने के व्यवहार से कॉमरेड मानो के दिल में दस्ता सदस्य बनने की इच्छा पैदा होती गई। मामा ने कुम्मे से अपने लड़के की शादी का दबाव डाला तब कॉमरेड कुम्मे के सामने विकट परिस्थिति पैदा हो गई। अगर वह शादी के लिये हां नहीं करती है तो छोटे-छोटे भाइयों की परवरिश का सवाल उठ खड़ा होता और अगर वह दस्ते में शामिल नहीं हुई तो उसकी जिन्दगी भी उद्देश्यहीन होकर रह जायेगी। अंत में कॉमरेड कुम्मे यह विचार करते हुये दल में भर्ती हो गई कि पार्टी में भर्ती होकर वे इस व्यवस्था को बदलेगी जिसमें लाखों-करोड़ों बच्चों की जिंदगी के ठौर-ठिकाने की गांरटी होगी, जिनमें उनके भाई भी होंगे। यह विचार करते हुये नवम्बर 2004 में दल में भर्ती हो गई। पार्टी में पूर्णकालिक रूप से भर्ती होने के बाद वे शुरू से ही पलटन-7 की सदस्या रहीं। कॉमरेड कुम्मे, कॉमरेड रजिता और कॉमरेड राधा पलटन-7 की बहादूर व आदर्श पीएलजीए सैनिक थीं। 2005 शुरू में सलवा जुडूम के खिलाफ नेशनल पार्क में किये गये हमले में पलटन-7 की सदस्या के रूप में कॉमरेड कुम्मे आगे रही थीं। 2005 में ही पेरमिली एरिया के कोसमपल्ली गांव में पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में पीएल-7 के डिप्युटी कमांडर लालसू के शहीद होने के बाद भी कॉमरेड कुम्मे हिम्मत व बहादुरी के साथ दुश्मन का मुकाबला करती रही। संयुक्त टीसीओसी चलाते समय माड़, नेशनल पार्क और भाम्रागढ़ के कुल 100 कॉमरेड जब एकत्रित हुये तब कॉमरेड कुम्मे ने रसोई की (किचेन) जिम्मेदारी लेकर उसे बड़ी कुशलता के साथ निभाया। किसी भी साथी को शिकायत का कोई मौका नहीं मिला। हमेशा अपनी राजनैतिक व सैनिक समझदारी बढ़ाने के लिये प्रयासरत रहती थीं। कॉमरेड कुम्मे ने पार्टी में आकर प्रेम विवाह किया। शादी से पहले कॉमरेड कुम्मे ने अपने भावी पति से साफ शब्दों में कहा कि क्रांति का मकसद ही उसके लिये सर्वोपरि है और आखिर तक इसी रास्ते में दोनों को चलना है। कॉमरेड कुम्मे दृढ़ निश्चियी कॉमरेड थीं। गांव से उनके छोटे भाइयों की बदहाली की खबर मिलने पर विचलित नहीं होती थीं, और भी गंभीरता के साथ अपने क्रांतिकारी कार्य में जुट जाती थीं। अपनी छोटी सी क्रांतिकारी जिन्दगी में हमेशा क्रांतिकारी गतिविधि यों में जुटी रहीं और क्रांतिकारी शहादत को हासिल किया।

dkejM jftrk (uhyh)

कॉमरेड रजिता का जन्म एक गरीब क्रांतिकारी परिवार में हुआ था। पिता कॉमरेड जूरू एक लोकप्रिय क्रांतिकारी थे, जो पेरिमिली दल कमांडर की जिम्मेदारी निभाते थे। अप्रैल 1999 में भाम्रागढ़ के झारावाड़ा फायरींग में कॉमरेड जूरू शहीद हो गये। उस समय नीली छोटी थी। क्रांति या शहादत जैसे शब्दों का मतलब भी नहीं जानती थी। जैसे-जैसे बड़ी होती गई अपने मन में अपने पिता को आदर्श मानने लगी। पिता की शहादत से डर कर जहां

भाइयों ने पार्टी से दूर रहने का फैसला किया वहीं नीली ने अपने पिता की शहादत की विरासत को आगे बढ़ाने का फैसला किया। नीली अगस्त 2004 में पार्टी में भर्ती होकर कॉमरेड रजिता बनी। कॉमरेड रजिता को गाना, नाच और नाटक से बड़ा लगाव था। वह खुद भी मंजी हुई कलाकार थी। कॉमरेड रजिता के सांस्कृतिक प्रदर्शन को जनता बहुत सराहना करती थी। चेतना नाट्य मंच में कुछ महीने काम करने के बाद पीएल-7 में आकर दुश्मन के छक्के छुड़वाने का ताना-बाना बुनने लगी। युद्ध व राजनीतिक कार्य सीखने की कोशिश में कॉमरेड रजिता हमेशा लगी रहती थी। उम्र छोटी थी लेकिन कॉमरेड रजिता के सपने बहुत बड़े थे। 18 वर्ष की आयु में कॉमरेड रजिता की शहादत पार्टी को एक बड़ा नुकसान है। कॉमरेड रजिता की शहादत पार्टी के ऊपर कर्ज है जिसे पार्टी अवश्य ही चुकायेगी।

dkejM yky (dEek dryye)

7वीं पलटन के सदस्य कामरेड लालू ने 22 फरवरी 2007 को दोबूर में दुश्मन के साथ आमने-सामने की लड़ाई मे जबर्दस्त प्रतिरोध करते हुए वीरगति को प्राप्त किया। कामरेड लालू सातवीं पलटन के अगुआ सदस्य थे। जब वो साथियों की अगुवाई करते हुए जा रहे थे तो दुश्मन ने घात लगाकर भीषण गोलीबारी की जिसमें कामरेड लालू के पेट मे गोली लगी। गोली लगने के बावजूद भी अपनी राइफल से फायरींग करते हुए दुश्मन के बीच से निकल कर वापस आए। जब तक आखिरी सांस रही अपनी राइफल को नहीं छोड़ा। कामरेड लालू का उनके गांव वालों ने क्रांतिकारी सम्मान के साथ गर्व से अंतिम संस्कार किया।

कामरेड लालू मात्र 21 साल के नौजवान वीर थे। एटापल्ली तहसील के मेन्ड्री गांव में कतलम परिवार में उन्होंने जन्म लिया था। कामरेड लालू को घर में कुम्मा नाम से बुलाते थे। उनका परिवार बेहद गरीब किसान परिवार था। इस गरीबी की जड़ को जब तक खत्म नहीं किया जाएगा तब तक गरीबी नहीं मिट सकती। इसकी जड़ है यह व्यवस्था। इस व्यवस्था को बदलना ही होगा। इस सोच के तहत नौजवान कुम्मा 20 फरवरी 2004 को जन मुक्ति छापामार सेना के पूर्णकालिक सैनिक के रूप में भर्ती हुए थे। गांव में रहते हुए उन्होंने ग्राम रक्षा दल में रहकर अपने गांव की सुरक्षा के लिए काम किया। 24 दिन के सैनिक प्रशिक्षण कैंप से प्रशिक्षत होकर जन मिलिशिया दल के साथ मिलकर सैनिक कार्रवाइयों में भाग लेना शुरू किया।

2004 के टीसीओसी के समय रेकलमेटा, गर्दवाड़ा में गश्ती के लिए निकली पुलिस पार्टी पर उन्होंने जबर्दस्त फायरींग की जिस कारण पुलिस को गांव से भागना पड़ा था। 2004 अगस्त से जनवरी 2006 तक कामरेड लालू 7वीं पलटन के सदस्य के रूप में रहते हुए फासीवादी सैनिक-सांगठनिक अभियान सलवा जुडूम को हराने के लिए पश्चिम बस्तर के नेशनल पार्क एरिया में कई संघर्ष किये। कामरेड लालू सैनिक कार्रवाइयों मे बढ़-चढ़ कर भाग लेते थे। उन्हें कोई भी काम सौंपा जाता वह उसे धूप-छांव, गर्मी-सर्दी, दिन-रात की परवाह न करते हुए शिद्दत से पूरा करते थे। हर कार्रवाई के लिए वह हर समय तैयार रहते थे।

कामरेड लालू आपने साथ रहने वाले साथियों के बहुत प्रिय कामरेड थे। जन्म देने वाली मां की तरह वह अपनी पार्टी से प्यार करते थे। सभी माओं की दुख-तकलीफें समाजवादी समाज आने से ही दूर होंगी इस विचार से कामरेड आपनी मां के दुखों को सुनकर भी दुखी नहीं होते थे। उन्होंने आखिरी दम तक क्रांति के लिए काम किया। आइए, कामरेड कुम्मा के अरमानों को पूरा करने के लिए उसके खून से बने रास्ते पर आगे बढ़ें। ★

cMk d ikl ih,yth, dk 'kkunkj geyk
pkj dh ekr vkj ikp ,lihvk u Mky fn, gfFk;kj

दक्षिण बस्तर डिवीजन के बंडा बेस कैम्प के पास 18 जून 2008 को पीएलजीए के लाल योद्धाओं ने एक जबर्दस्त हमला किया जिसमें एक हवलदार समेत 4 एसपीओ मारे गए जबकि चारों तरफ से घेरे जाने से 5 एसपीओ ने हथियार डालकर पीएलजीए के सामने घुटने टेक दिए। वे कुल 11 की संख्या में बंडा बेस कैम्प से आ रहे थे। इस खबर को पाकर पीएलजीए ने सुनियोजित तरीके से घेर लिया। आमने-सामने की लड़ाई में वे टिक नहीं पाए। आखिर में जान बचाने के लिए उन्हें एक ही रास्ता सूझा - हथियार डाल देना। उन्हें अच्छी तरह मालूम है कि हथियार डालने वालों को पीएलजीए कोई हानि नहीं पहुंचाएगी। दो एसएलआर और 7 त्रीनाटत्री रायफलें छीनकर उन्हें सुरक्षित छोड़ दिया। छोड़ने से पहले पीएलजीए के कमाण्डरों ने उन्हें समझाइश दी कि जनता पर जुल्म-अत्याचार करने की घटनाओं में शामिल मत होवें और खुद अपनी ही जनता के खिलाफ लड़ाने के लिए पैदा गई इस एसपीओ की नौकरी को छोड़ दें। सच्चाई यह रही तो पुलिस के अधिकारियों ने मीडिया के जरिए यह प्रचारित किया कि अपहृत एसपीओ के साथ नक्सलवादियों ने बुरी तरह मारपीट की। पुलिस के निचले स्तर के कर्मचारियों में हमारी पीएलजीए की नीति को गलत ढंग से प्रस्तुत करने के लिए ही वे ऐसे हथकण्डे अपनाते हैं। क्योंकि उन्हें डर है कि पीएलजीए की यह नीति कि - हथियार डाल देने पर बाइज्जत बख़्श दिया जाता है - का उनमें प्रचार होने से कल को ऐसी घटनाएं बहुत बढ़ सकती है। लेकिन इस मौके पर हम 'प्रभात' की तरफ से पुलिस कर्मियों और एसपीओ का आह्वान करते हैं कि वे जनता और पीएलजीए पर हमलों में भाग न लें और लड़ाइयों के दौरान हथियार डाल दें - पीएलजीए उन्हें कुछ नहीं करेगी।

dkejM bjik (ukUlq fgpkeh) dh gR;k dk cnyk yk!

11 मार्च 2006 को गड़चिरोली जिले के पावरेल्ली गांव में हुई मुठभेड़ में कामरेड इरपा शहीद हुये। उनके साथ पावरेल्ली गांव के डीएकेएमएस कार्यकारिणी सदस्य रामसाय जांगी भी शहीद हो गये।

कामरेड इरपा का जन्म एटापल्ली तहसील के जारावाड़ा गांव में हुआ था। शहादत के समय वे मात्र 17 साल का किशोर ही था। उसका जन्म गरीब किसान परिवार में हुआ था। माता-पिता ने उसे नान्सु नाम दिया। गरीब आदिवासी किसान मलेरिया के कारण असमय ही मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। कामरेड इरपा के पिता की मृत्यु भी मलेरिया के कारण हो गई थी। मृत्यु के बाद मां दूसरी शादी करके चली गई। नन्हे बच्चे अनाथ हो गये। हालांकि इरपा की उम्र छोटी थी फिर भी उसे अपने से छोटे भाइयों को संभालना पड़ा। अपने चाचा और बड़े पिता के साये में पले और बढ़े। ऐसे बचपन ने उन्हें अनुशासनबद्ध व जिम्मेदारीपूर्ण व्यवहार सिखाया।

बचपन से ही क्रांतिकारी पार्टी से बहुत लगाव था। अपने सांगठनिक दस्ते के गांव में दाखिल होने की खबर सुनते ही अपने दोस्तों को लेकर हाजिर हो जाता था। बड़ी खुशी के साथ पानी ढोके लाता था। जब तक दल गांव नहीं छोड़ता था तब तक वह दल के साथ चिपके रहता था। बड़ा उदास होकर पैर घसीटते हुये घर लौटता था।

अपने गांव के आदिवासी बाल संगठन का अध्यक्ष रहा। जुलाई 2002 में संपन्न डीएकेएमएस के अधिवेशन में आदिवासी बाल संगठन के प्रतिनिधि की हैसियत से भाग लिया। उसी वर्ष दिसंबर महीने में पीएलजीए में भर्ती होने का प्रस्ताव पार्टी के सामने रखा। उसकी उम्र को देखते हुये स्थानीय पार्टी ने उसे कुछ साल और घर पर ही रहकर काम संभालने की सलाह दी। तब वह बहुत उदास हो गया था। आखिर मार्च 2004 में पीएलजीए में भर्ती होकर उसकी चिर आकांक्षा पूरी हुई। एक साल तक वह चेतना नाट्य मंच में रहते हुये क्रांतिकारी आंदोलन व पीएलजीए का जोर शोर से प्रचार किया। हर काम में उसकी इमानदारी, जिम्मेदार युक्त व्यवहार से प्रभावित डिवीजनल पार्टी कमेटी ने अपने स्टाफ में नियुक्त किया।

इरपा एक हंसमुख, सभी के साथ मिलजुल कर रहने वाला मिलनसार कॉमरेड था। वह एक अनुशासनबद्ध, दृढ़ संकल्प से लैस छापामार योद्धा के रूप में विकसित हो रहा था। एक विश्वसनीय व आत्मीय साथी को खोकर डिवीजन पार्टी को बड़ा नुकसान पहुंचा है। बचपन से ही शोषणकारी व्यवस्था के खिलाफ मन में द्वेष कूट-कूट कर भरा था। इस व्यवस्था को ध्वस्त कर, कामरेड इरपा के सपनों को मंजिल तक पहुंचायेंगे। ✮

dkejM lehj (rkrh lUuq) dh cgknjkuk 'kgknr ftUnkckn!

कॉमरेड समीर पश्चिम बस्तर डिविजन के गंगालूर एरिया के तोड़का गांव में जन्म लिये थे। गंगालूर क्रांतिकारी संघर्ष की वह भूमि है जहां से कई नवयुवक व युवतियां पार्टी में भर्ती होकर क्रांति कार्य में भाग ले रहे हैं। पीएलजीए में भर्ती होकर अपने युद्ध जौहर से दुश्मनों के दिल दहला रहे हैं। कॉमरेड समीर उन्हीं वीर योद्धाओं में से एक थे। समीर के पिता ताती लच्छू ने बड़े प्यार से समीर का नाम घर में सन्नू रखा था। कॉमरेड समीर के घर माता-पिता सहित 4 बहनें और एक भाई हैं। गरीबी के कारण कॉमरेड समीर केवल तीसरी कक्षा तक ही पढ़ाई कर पाये।

राज्य सरकार का फासीवादी दमनात्मक सैनिक अभियान और उसके जन प्रतिरोध की भूमि पश्चिम बस्तर के गांव के युवक-युवतियां जन मिलिशिया में भर्ती होकर पुलिस बल और सलवा जुडूम के गुंडों के हमलों से अपने गांव-घर और फसलों की रक्षा करते हैं। कॉमरेड समीर भी जन मिलिशिया में भर्ती होकर अपने गांव, घर और फसलों की रक्षा करने के कार्य में लग गये थे। 2007 में कॉमरेड समीर पार्टी के पूर्णकालीक सदस्य की हैसियत से भर्ती हो गये। पार्टी के निर्णय के अनुसार गड़चिरोली में बनी कंपनी-4 में सदस्य बनने के लिये सहर्ष गड़चिरोली रवाना हो गये। 2007 दिसंबर पीएलजीए सप्ताह के अवसर पर कंपनी-4 में अपनी आमद दर्ज कराई। पीएलजीए बलों को राजनीतिक शिक्षण देने के कार्यक्रम में 17 जनवरी 2008 को किसी जनद्रोही की मुखबिरी के आधार पर महाराष्ट्र कमांडो बलों और छत्तीसगढ़ सीआरपीएफ ने डेरा को चारों तरफ से रात में ही घेर लिया ओर सबेरे 6.30 बजे पीएलजीए की कंपनी पर अंधाधुंध गोलियां बरसाना शुरू कर दिया। महाराष्ट्र-छत्तीसगढ़ सीमा पर दागुनटोला-वांगेतोरी के बीच जंगलों में हुई इस मुठभेड़ में कॉमरेड समीर घायल होकर गिर पड़े। जब तक इनके पास कारतूस रहा तब तक दुश्मन का वीरतापूर्वक सामना किया। बुरी तरह से गोलियों से छलनी हो गये, अंत में कॉमरेड समीर ने अपने प्राण त्याग दिये।

गड़चिरोली की संघर्षरत जनता व डिवीजनल कमेटी कॉमरेड समीर की शहादत को व्यर्थ नहीं जाने देगी। कॉमरेड समीर की राह पर चलते हुये उनके सपनों को साकार करेगी।

कॉमरेड समीर बहुत कम दिन ही गड़चिरोली में कंपनी-4 के साथ थे। कम दिनों में ही वे सभी कॉमरेडों से घुल मिल गये। शहादत के समय उनकी उम्र मात्र 17 वर्ष थी। इतनी कम उम्र में वीरता व साहस का उदहारण जो उन्होंने पेश किया है, वह सभी कॉमरेडों को प्रेरणा देता रहेगा।✮

'kghn dkejM eukckb urke vej jg!

22 मार्च को रात के दो बजे गडचिरोली कमांडो ने करीब 500 की संख्या में आकर टिप्रागढ़ एरिया के कोसमी गांव पर हमला कर दिया। 58 बेकसूर आदिवासी जनता की बेरहमी से पिटाई की, जिसमें महिला और पुरूषों दोनों थे। उस समय कामरेड मैनाबाई नैताम दूसरे के घर गई हुई थीं। उसी घर में कमांडो पुलिस ने 52 वर्षीय मैना बाई को पकड़कर बलात्कार कर अपने वहशीपन का परिचय दिया। उनकी बंदूक के बटों, लातो, घूंसों से पिटाई की। कमांडो के इस अत्याचार को मैना बाई नैताम सहन नहीं कर सकीं और उनकी हालत बिगड़ते गई। अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही उन्होने दम तोड़ दिया। धनोरा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के डॉक्टर गणवीर ने पुलिस की कहानी के अनुसार हार्ट अटैक से मृत्यु का बयान दिया जबकि कोसमी गांव की सैंकड़ो जनता कामरेड मैनाबाई की पिटाई और बलात्कार से की गई हत्या की गवाह है।

कामरेड मैनाबाई का जन्म कोसमी गांव के कोरेटी परिवार में आज से 52 साल पहले हुआ था। पिता का नाम पैकू कोरटी था। 2 भाई व 2 बहनों कुल 4 संतानों में कामरेड मैनाबाई दूसरी संतान थी। कामरेड मैनाबाई विवाह कर दूसरे गांव में नहीं गई, पति ही घर जमाई बनकर ग्राम हिरंगे से कोसमी ग्राम में रहने के लिए आये। लगभग तीन एकड़ जमीन जंगल विभाग से निकाल कर अपना जीवन यापन करने लगे। कामरेड मैना शुरू से ही संघर्षशील प्रवृति की महिला थीं। महिलाओं के हक अधिकार के लिए हमेशा जागरूक रहती थीं। सामाजिक व राजनीतिक कार्यों में हमेशा आगे रहती थीं। 10 वर्ष तक वे ग्राम पंचायत सदस्य रहीं। महिलाओं के हितों की लड़ाई लड़ने के लिए वे महिला संगठन की सदस्या बनी। शिवसेना पार्टी को जुझारू समझकर वह उससे भी जुड़ीं लेकिन जनता के हितों के अनुरूप इस पार्टी को न होते देख जल्द ही शिवसेना से उनका मोहभंग हो गया। उस समय तक पार्टी का एरिया में प्रवेश हुआ। दुश्मन का दुष्प्रचार से मैनाबाई पहले नक्सलवादी नाम सुनकर ही डरने लगती थीं। धीरे-धीरे पार्टी के पास आई, बाते सुनीं, उन्हें लगने लगा कि जैसे उन्हें जिंदगी का लक्ष्य मिल गया। फिर वे कभी पीछे मुड़कर नहीं देखीं। 1994 में वे क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की अध्यक्षा बनी। 1996 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई। 2007 में वे ग्राम पार्टी कमेटी की सचिव बनीं और पंचायत स्तर की जनताना सरकार की अध्यक्ष बनीं। कामरेड मैना बाई का पूरा परिवार पार्टी से जुड़ गया। पति टिप्रागढ़ एरिया कमेटी के सदस्य है। पुत्र जन मिलिशिया दल में शामिल है। इनके 4 संताने हैं। कामरेड मैनाबाई का जीवन संघर्षों का जीवन रहा है। शहादत के समय तक वे संघर्ष में डटी रहीं। फरवरी 2003 में दमन के खिलाफ ग्यारापत्ति में उन्होंने जुलूस का नेतृत्व किया 3000 लोगों के इस जुलूस में उन्होंने 1000 से ज्यादा महिलाओं को शामिल करवाया। मार्च 2003 में मानपुर में दमन के खिलाफ 10000 लोगों की रैली का नेतृत्व किया। 2003 अगस्त महीने में उन्होंने 7 किलोमीटर की रैली झूठी आजादी के खिलाफ निकाली। शराब के खिलाफ उन्होंने जमकर आंदोलन किया। कोसमी, सावरगांव, तेरेगांव से ग्यारापत्ति तक उनका मोर्चा निकला। 2003 में ही मर्कानार गांव में पुलिस हमले के खिलाफ प्रतिरोध में जनता का उन्होंने बखूबी नेतृत्व किया। गांव-गांव में उन्होंने बुरे शरीफजादों के खिलाफ अभियान चलाया और उन्हें नियंत्रित किया। 2004 में धनोरा तहसील में विशाल अकाल मोर्चा का नेतृत्व किया। 2004 में ही उन्होंने पार्टी स्थापना दिवस के अवसर पर गांव-गांव में मोर्चा निकालकर पार्टी राजनीति से जनता को अवगत कराने का महत्वूर्ण काम किया।

2006 से कामरेड मैनाबाई नैताम एक पंचायत स्तर की सरकार के दायारे में गुप्त रूप से पार्टी का काम करने लगी। जीवन भर सरकार और पुलिस अत्याचार के खिलाफ लड़ती हुई आखिर में सरकार और पुलिस के अत्याचार की शिकार होकर शहीद हो गई। उनके संघर्ष पूर्ण जीवन को और उनकी शहादत को टिप्रागढ़ की जनता कोटि-कोटि नमन करती है। ★

dkejM jk'ku ikVkoh ('kke) dk yky lyke!

मई 2008 को गडचिरोली के चातगांव एरिया में दुश्मन पर घात लगाकर हमला करने के लिए जाते समय किसी जनद्रोही द्वारा पहले से लाकर बैठाये गये पुलिस के ऐम्बुश में फंसकर बहादुरी से लड़ते हुये कामरेड रोशन ने वीरगति को प्राप्त किया। शहीद होने के पहले मैदान में फंसे अपने साथियों को निकालने के लिए दुश्मन से मोर्चा लेते रहे जब तक कि पूरे साथी सुरक्षित न निकल जाते। धराशायी होते समय उनके मुंह से 'माओवाद जिंदाबाद' और 'पीएलजीए जिंदाबाद' का शब्दघोष फूट पड़ा।

कामरेड रोशन का जन्म गडचिरोली जिले के एटापल्ली तहसील के जारावाड़ी पोस्ट के वेड़से गांव में एक गरीब आदिवासी परिवार में हुआ था। बचपन में पिता की मृत्यु के बाद अपनी माता के साथ नेनगुड़ा गांव चले आये और मां के साथ ही रहने लगे। उनके गांव में पार्टी का आना-जाना हमेशा होता था। क्रांतिकारी राजनीति सुनकर रोशन जनवरी 2006 में पीएलजीए में भर्ती हुये। पार्टी में भर्ती होने के पहले उन्होंने जन मिलिशिया दल में रहकर कई कार्यवाहियों में भाग लिया। पार्टी का प्रचार तथा मुखबिरों के नियंत्रण की कार्यवाहियों में वे आगे रहते थे। पार्टी में भर्ती होकर वह पलटन-3 का सदस्य बने। स्पेशल टीसीओसी में उनकी शौर्यपूर्णता ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। रूप्पी डेलीब्रेट ऐम्बुश में उन्होंने गजब की हिम्मत दिखाते हुये 7 कमांडों को घायल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अनुशासन का पालन, हिम्मत, बहादुरी के कारण अल्प समय में ही उन्हें सेक्शन डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई जिसे उन्होंने बड़ी लगन के साथ निभाया। कामरेड रोशन की उम्र व पार्टी जीवन बहुत छोटा है लेकिन इस अल्पायु में ही उन्होंने पीएलजीए के सिपाही की जो बड़ी मिसाल पेश की है वह सभी के लिए अनुकरणीय है। ★

vej 'kghn dkejM lqunk dk yky lyke!

n'euk dk èoLr djd 'kghnk dk J¼katyh vfiZr dj!!

20 जनवरी 2008 सुबह 11:30 बजे निरपुरा टेकडी जो छत्तीसगढ–मध्यप्रदेश के सीमा पर स्थित है, वहाँ मध्यप्रदेश के क्रूर पुलिस बल 'हॉक फोर्स' ने भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के डेरे पर हमला किया। जिसमें कॉ. सुनंदा (सब डिविसीएम) शहीद हो गई तथा अन्य एक साथी घायल हुई।

डेरे की सुरक्षा के लिए संट्री पोस्ट पर पी.एल. जी.ए. के तैनात बहादुर साथियों ने दुश्मन को देखते ही गोली का जवाब गोली से देना शरू किया। फायरिंग ने सारे साथियों को सतर्क किया। कैम्प कमांडर के आदेश के मुताबिक डिफेन्स टीम अडवान्स हुई, जिसमें कॉ. सुनंदा भी है।

दुश्मन सेन्ट्री पर ऑटो फायरिंग करते हुए तीन तरफ से घेर लिया। नेतृत्वकारी साथियों की तरफ दुश्मन फ्लैंक से आकर रैपीड फायरिंग शुरू किये, ऐसे समय पी.एल.जी.ए. की डिफेन्स टीम सुरक्षा के लिए दौड़ी और दुश्मन पर जोरदार फायरिंग करते हुए नेतृत्व को सुरक्षित किया। इसी समय कॉ. सुनंदा को गोली लगी। दुश्मन के पक्ष में भी एक को गोली लगी। घायल सुनंदा खून से लथपथ हो गई। पास के साथी को बताया पर उससे पहले ही वह साथी उसे मदद पहुंचाने की कोशिश करे उसे भी एक गोली लगी। ऐसी अवस्था में सुनंदा ने वॉकी–टॉकी पर घायल होने का संदेश कमांडर को दिया और खुद कम–से–कम 100 मीटर तक आई।

अन्य साथी उनके मदद के लिए कवर फायर देते हुए दौड़े और उन्हे उठाकर लाए। पर रास्ते पर खून का अत्यधिक रिसाव होने के कारण कॉ. सुनंदा ने दम तोड़ दिया। इससे पहले उनको कुछ इलाज पहुंचा सकते, साथी इस दुनिया को अंतिम लाल सलाम कर चुकी थी।

इस तरह अपनी जान पर खेल कर कॉ. सुनंदा ने पार्टी के नेतृत्व और अन्य साथियों की रक्षा की।

सदियों के बंधनों को तोड़ने वाली नारी

कॉ. सुनंदा का जीवन संघर्षशील रहा है। पार्टी में आने के पूर्व भी सामाजिक संघर्ष में उनकी न केवल भूमिका है, बल्कि वे खुद इस सामाजिक प्रताड़ना की शिकार भी रही है। एक गरीब आदिवासी मडावी परिवार में जन्मी शामकुंवर बचपन से संघर्ष करते–करते क्रांतिकारी सुनंदा बन गई।

घर में रहते समय माँ–बाप पुटुलु करना सोचते थे (आदिवासी की प्रथा– जिसमें मामा के लड़के की शादी करनी पड़ती है) इसका सुनंदा ने जमकर विरोध किया। पसंद से ही शादी करने के महिला के जनवादी अधिकार के लिए लड़ी। आमतौर पर ससुराल में प्रताड़ना जातिवादी समाज में ज्यादा होता है, पर आदिवासी समाज में भी हिन्दुत्ववादी घुसपैठ के कारण कुछ हद तक झलकने लगी है। आदिवासियों में ज्यादातर सियान, पुजारी तथा पारिवारिक सियानों का दबाव चलता है। और परंपराओं का नियम जिसने आदिवासी स्त्री को भी कुरितीयों का शिकार बना दिया। पितृसत्ता भी जमकर है। सुनंदा को भी इस अग्नि परीक्षा से गुजरना पड़ा। वह डटकर अपने पति का साथ लिए इन सारी रूढ़ी–परंपराओं के बंधनों, पारिवारिक बंधनों को तोड़ती गई। यही संघर्षशील जुनून था जिसने शामकुंवर को क्रांति के तरफ आकर्षित किया।

जन नेत्री

गांव में रहते समय जनसंगठन मे शामिल हुई तब शराबबंदी आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। गांव में महिलाओं की गोलबंदी करने में कॉ. सुनंदा की महत्वपूर्ण भूमिका रहती थी। सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जिस तरह खुद परिवार में संघर्ष किया, उसी तरह जनता को भी इसके विरूद्ध लडने के लिए संगठन के माध्यम से प्रेरित किया।

पुरूषों की तुलना में महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में आने के लिए सामाजिक बंधनों के खिलाफ अतिरिक्त संघर्ष करना पड़ता है। उसमें भी अगर माता है, तो यह और भी मुश्किल कर देता है पर कॉ. सुनंदा उन माताओं के लिए एक आदर्श है, जो 'मातृत्व की भावनाओं और सारी नारियों की मुक्ति के लिए (जनता के लिए) जारी क्रांतिकारी संघर्ष में निभाने वाली उनकी भूमिका' इस अंतरद्वंद्व में निर्णय नहीं कर पाती। कॉ. सुनंदा अपने तीन मासूमों को घर पर छोड़कर क्रांति में कूद पडीं। मातृत्व का इतना बड़ा त्याग बिरले ही देखने को मिलता है। जब भी बच्चों से मिलतीं उनको यह संघर्ष बार–बार करना पड़ता। कॉ. सुनंदा में उच्च कोटी की मातृत्व की भावना थी। इसलिए वह केवल अपने बच्चों तक अपना प्यार सीमित न करते हुए हजारों–लाखों को अपने आँचल में समेटे हुई थीं।

वह जान गई थीं कि मेरे बच्चों की परवरिश की तकलीफ सिर्फ मेरी नहीं है और इसकी जड़ मेरा खुद का परिवार नहीं है, बल्कि यह शोषण आधारित व्यवस्था है जिसके कारण लाखों–करोडों बच्चों की परवरिश की समस्या उत्पन्न हुई है। वह बच्चों को क्रांति का महत्व व स्वावलंबी जीवन जीने की सीख देती थीं। वह जान गई थीं कि बच्चों का भविष्य संवारना है, तो इस व्यवस्था को बदलना जरूरी है। इस तरह अपनी समस्या को समाज की समस्या के साथ जोड़ कर मानवीय समाज व्यवस्था के मर्म को गहराई से समझ लिया और फिर जनयुद्ध में कूद पड़ी।

साधारण गृहिणी से क्रांतिकारी नेत्री

सुनंदा आम स्त्री के जैसे ही साधारण गृहिणी थी। पर अन्याय और प्रताड़ना के खिलाफ लड़ते–लड़ते उनमें एक योद्धा की चेतना विकसीत हुई। एक अशिक्षित माता जिसने पार्टी में आने के बाद ही पढना–लिखना सीखा था। पढाई ने उसके जीवन में विकसित होने में छलांग लगाई। और वह सीढ़ी दर सीढ़ी अपने कर्तत्व के बल पर विकसित होती गईं। दल सदस्य से लेकर शहीद होने के समय तक, सब–डिविसी स्तर तक विकसित होते गईं। सन 2000 के पार्टी अधिवेशन में सर्व प्रथम डेलिगेट बनी। तब से लेकर सन 2006 के उत्तर गडचिरोली–गोंदिया डिविजन के तीसरे अधिवेशन तक वह इस डिविजन के हर प्लिनम तथा अधिवेशनों में डेलिगेट रहीं। डिविजन में महिला आंदोलन का विकास करने की दृष्टि से चलाए गई क्लासेस में – पितृसत्ता समाज में, पार्टी में भी किस प्रकार से पनप रही है, इसे पहचानने में कॉ. सुनंदा ने महत्त्वपूर्ण मुद्दे प्रेषित किये थे। वह दस्तावेजों का अध्ययन करना, फील्ड से रिपोर्ट एकत्रित करके उसका अध्ययन करना और पूरी जानकारी पार्टी कमेटी को देना, यह काम वह नियमित रूप से करती थीं। सांगठनिक मामले हों चाहे व्यक्तिगत हों कोई भी विषय कमेटी के समक्ष रखती थीं। इस तरह एक अनुशासनबद्ध उनका आचरण था। उनमें गुरिल्ला जीवन की घोर कठिनाइयों को सहने की अद्‌भुत हिम्मत थी।

गुरिल्ला नारी

1992 में टिप्रागढ दल से अपना गुरिल्ला जीवन शुरू किया। उनकी दृढ़ता देखकर उन्हें टेक कार्य के लिए चुना गया। 1993 से 1995 तक दृढ़ता से शहरी विभाग में टेक कार्य किया। उसके बाद फिर दल में भूमिका निभाने आईं। कुछ समय देवरी दल में बिताने के बाद उन्हें टांडा दल में ट्रान्सफर किया गया। दो साल तक टांडा के संघर्ष में जनता को गोलबंद करने में बखुबी भूमिका निभाई। जनता के साथ कंधे से कंधा मिलाते हुए हर प्रकार के संघर्ष में जिद से शामिल रहीं। टांडा में एक विशेष उल्लेखनीय ऐतिहासिक अकाल रैली है, जिसमें कॉ. सुनंदा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। उनके नेतृत्व के गुणों को देखते हुए पार्टी ने उन्हें 1998 में एरिया कमेटी में चुन लिया। इसके बाद वे आखरी साँस तक दर्रेकसा एरिया की जिम्मेदारी संभालते रहीं। उनका सबसे ज्यादा समय दर्रेकसा क्षेत्र के आंदोलन में गुजरा है। एक तरह से दर्रेकसा आंदोलन ही कॉ. सुनंदा का गुरिल्ला जीवन इतिहास है।

उनके नेतृत्व में हुए प्रमुख संघर्षों में पानी की मांग को लेकर दो बार अकाल विरोधी बड़ी रैलियां, बांबु, तेंदूपत्ता संघर्ष समितियां बनाकर बड़ी–बड़ी सभाएं लेकर जन चेतना में विकसित किया और जनता की रोजी बढ़ाकर देने मे बखूबी नेतृत्व दिया। जनता को इन आर्थिक संघर्षों से विकसित करते हुए इस शोषण की जड़ राज्यसत्ता में है, यह राजनीतिक समझदारी निरंतर जारी रखी जाती रही। और इस समझदारी के तहत ही जनता को मुख्यमंत्री के द्वार पर धरना देना या तहसीलों पर, थानों पर मोर्चा निकालना इत्यादि संघर्ष के रूपों को इस्तेमाल किया जाता रहा। यह अमल करने में कॉ. सुनंदा की पहलकदमी रहती थी। 2003 की रैली में जनता की हजारों की संख्या में भागीदारी से यह समझ सकते हैं कि दर्रेकसा की जनता का कॉ. सुनंदा के साथ कितना गहरा रिश्ता है।

जन आंदोलन और सशस्त्र संघर्ष इन दोनों का चोली–दामन का साथ है। जन आंदोलन सशस्त्र संघर्ष की सेवा करते हैं, तो सशस्त्र संघर्ष जनआंदोलन को विकसित करने में मदद करते है। जैसे–जैसे सत्ता फासीवादी रूप धारण करती है जनता के जनवादी मौके खत्म हो जाते है और जनता को सशस्त्र संघर्ष के सिवा विकल्प नहीं बचता। आज भारत की सत्ता घोर फासीवादी रूप धारण कर चुकी है और जनता के न्यूनतम अधिकार भी छिने जा रहे हैं। ऐसे समय सशस्त्र संघर्ष का महत्त्व और बढ़ जाता है। क्रांति में तमाम संघर्षों में से सशस्त्र संघर्ष की भूमिका प्रधान है। यह कॉ. सुनंदा भलीभाँती जानती थीं इसलिए सैनिकी मामलों में उनका विशेष लक्ष्य रहता था। वह एक योद्धा थीं। युद्ध में अगली कतार में वह हमेशा तैयार रहती थीं। बेवरटोला, बेंदाडी आंबुश हो, छुरिया रेड हो या चांद सूरज का पुलिस घेराव हो या पिपरीया का दुश्मन का ऐम्बुश हो हर समय कॉ. सुनंदा दृढ़ता से लड़ी है। आवागमन के समय भी कई मौकों पर फायरिंग में हिम्मत से डटी रही हैं। इस तरह वह सैनिकी मामलों में भी निर्णयों व कॉशन का पालन तहे दिल से करने वाली दृढ़ योद्धा थीं और 20 जनवरी 2008 की उनकी अंतिम जंग में भी वह डिफेन्स टीम में रहकर अपनी जान कुर्बान कर दी पर मैदाने जंग से हटी नहीं। आखरी साँस तक डटी रही।

कॉ. सुनंदा के जीवन कार्य से हमें काफी सीख तथा प्रेरणा मिलती है। खासकर उनका अनुशासनबद्ध गुरिल्ला जीवन, निर्णय किये गए कार्य को तहे दिल से अमल करना, व्यक्तिगत हो चाहे सांगठनिक सारे मामले कमेटी के सामने खुलकर रखना और सबसे महत्त्वपूर्ण है युद्ध में दृढ़ता से डटे रहना। यह प्रेरणा हमें हमेशा हमारी प्रिय शहिद कॉ. सुनंदा से मिलती रहेगी। चाहे जीवन में कितनी भी कठिनाइयां आए फिर भी जनता की मुक्ति के लिए जनयुद्ध में आखरी साँस तक डटे रहना, यही सच्ची श्रद्धांजली कॉ. सुनंदा को होगी।✯

सप्ताह मनाने का आव्हान हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) द्वार किया गया था। इस आव्हान को माड़ डिवीजन में सफलतपूर्वक संपन्न करते हुये कई गांव में मशाल जुलूस निकाले गये और सभायें आयोजित की गईं। पूरे सप्ताह भर एक गांव की जनताना सरकार से दूसरे गांव की जनताना सरकार तक मशालें पहुंचती रहीं और रातों को जुलूसों का कारवां चलता रहा। जनता हाथों में मशालें और नारे लिखी तख्तियां व बैनर पकड़े हुये थी। पूरा जंगल मशालों की रोशनी से जगमगा उठता था। एक मशाल जुलूस 14 मार्च को ग्राम पोदमगोटी से शुरू हुआ जो तोके, इरकभट्टी, कोहकामेट्टा, कुन्दला, सोनपूर होते हुये चितराम गांव में नरायणपुर-बांदे रोड़ पर 20 मार्च को समाप्त हुआ। दूसरा जुलूस कुतुल से शुरू होकर मोहन्दी, आकाबेड़ा होते हुये करेलघाट तक गया।

दक्षिण बस्तर डिवीजन

दक्षिण बस्तर डिवीजन के कोंटा इलाके में महान भूमकाल दिवस नागाराम गांव में मनाया गया। जिसमें 1944 पुरुषों व 1198 महिलाओं ने भाग लिया। जन सभा को जन संगठनों के नेताओं ने संबोधित किया। वक्ताओं ने भूमकाल विद्रोह में शहीद हुये लोगों को विनम्रतापूर्वक श्रद्धांजिल अर्पित की और उनके सपनों को मंजिल तक पहुंचाने का जनता से आव्हान किया। भूमकाल विद्रोह के इतिहास पर वक्ताओं ने अपनी बात रखी। चेतना नाट्य मंच ने शहीदों को याद करते हुये सांस्कृतिक कायक्रम पेश किया।

उसूर एरिया में भूमकाल दिवस

दक्षिण बस्तर डिवीजन के उसूर एलओएस एरिया के अंतर्गत महान भूमकाल दिवस पर एक सभा का आयोजन किया गया। सभा में 485 पुरुषों व 295 महिलाओं ने भाग लिया।

पामेड़ इलाके में जन संगठनों के नेतृत्व में दो सभाओं का आयोजन किया गया जिसमें 850 महिला व पुरुषों ने भाग लिया। वक्ताओं ने इतिहास पर नजर दौड़ाते हुये कहा - अंग्रेजों ने बस्तर की वन संपदा, खनिज संपदाओं को लूटने के लिए18 वीं सदी की शुरूआत में ही हमले करने शुरू कर दिये थे। लेकिन बस्तरिया आदिवासियों ने शुरू से ही उनके शासन को कड़ी चुनौती दी और विद्रोह किये। हमारी आदिवासी जनता ने कभी भी उनके शासन को स्वीकार नहीं किया। 1825 परालकोट विद्रोह से लेकर भूमकाल विद्रोह तक लगभग 10 विद्रोह हुये जिनमें हजारों की संख्या में क्रांतिकारी जनता ने अपनी जान की बाजी लगाई। महान भूमकाल विद्रोह की शुरूआत 1910 को 10 फरवरी को हुई जिसने अंग्रेज सरकार को जबरदस्त टक्कर दी और 40 दिनों तक अपनी सत्ता को बनाये रखा।

अंत में एक वक्ता ने इस संबोधन के बाद सभा समापन की घोषणा की कि माओवादी पार्टी के नेतृत्व में हम आदिवासियों की अपनी सत्ता के लिए, जल-जंगल-जमीन के लिए आज भी भूमकाल की लड़ाई जारी है। बस्तर के हजारों नौजवानों को जन मुक्ति छापामार सेना में भर्ती होकर लुटेरी सरकार को जड़ से खत्म करके अपनी जनताना सरकार को मजबूत करना है। यही भूमकाल के शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

जेगुरगोण्डा एरिया में

जेगुरगोण्डा एरिया के अंतर्गत बासागुड़ा-बोड़केल एलओएस एरिया आरपीसी (जनताना सरकारों) के तहत आम सभाओं का आयोजन किया गया। जिनमें 659 महिलाओं व 1163 पुरुषों ने भाग लिया। अलग-अलग जगहों पर आरपीसी अध्यक्षों ने व एरिया कमेटी सदस्यों ने जन सभाओं को संबाधित किया। बैनर, पोस्टर, पर्चों के जरिये व्यापक पैमाने पर प्रचार अभियान चलाया गया। भाषणों में भूमकाल विद्रोह के इतिहास को विस्तारपूर्वक जनता के सामने रखा गया। भूमकाल विद्रोह के नेतृत्वकारी योद्धा गुंडादूर के साथ-साथ अन्य आदिवासी विद्रोही नेताओं सड़मेक बाबूराव, गेंद सिंह, अल्लूरी सीताराम राजू, बिरसामुंडा को भी याद किया गया।

वक्ताओं का कहना था कि एक तरफ सलवा जुडूम जैसा फासीवादी अभियान जारी है, निर्दोष लोगों को मारा जा रह है, घरों को जलाया जा रहा है इस सबके बावजूद इतनी संख्या में जनता का भाग लेना इस बात का प्रमाण है कि बस्तरिया आदिवासी जनता आज भी भूमकाल की विरासत को संभाले हुये, उससे सबक लेते हुये वर्तमान में जारी साम्राज्यवाद प्रायोजित सलवा जुडूम अभियान का डटकर मुकाबला करना चाहाती है और कर रही है।

चेतना नाट्य मंच के कलाकारों ने 10 फरवरी 1910 भूमकाल विद्रोह पर जोशीला कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

26 जनवरी काला दिवस

कोंटा एरिया में 26 जनवरी झूठे गणतंत्र दिवस का भांडा फोड़ करते हुये काले दिवस के रूप में मनाया। बैनरों, पोस्टरों को सड़कों पर टांग कर प्रचार किया गया। अखंड भारत के नाम पर भारतीय शासकों ने स्वतंत्र व उभरती राष्ट्रीताओं को 1947 के बाद दमन के जरिये अपने में शामिल किया और भारत को राष्ट्रीताओं का कैदखाना बना दिया। भारतीय संघ में शामिल होने के लिए देशी रियासतों को साम-दाम-दण्ड-भेद की कुटिलतापूर्वक चालों से भारतीय गणतंत्र की घोषणा की। इस के विरोध में आम सभाओं का भी आयोजन किया गया।

15 अगस्त काला दिवस

जेगुरगोण्डा एरिया में 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस को काला दिवस कहते हुये गांव-गांव में जनता ने आम सभायें की। चारों तरफ संेटरी पोस्ट तैनात करके एक आम सभा का सफल आयोजन किया गया जिसमें 1700 पुरुषों व 2275 महिलाओं ने भागीदारी की।

वक्ताओं ने 15 अगस्त 1947 को मिली 'आजादी' को एक बहुत बड़ा धौखा बताया। 15 अगस्त की काली रात में अंग्रेजों द्वारा अपने भारतीय दलालों को सौंपी गई सत्ता को हरगिज आजादी नहीं कहा जा सकता। हमारे देश की शोषित उत्पीड़ित जनता के साथ यह 'आजादी' एक बहुत बड़ा विश्वासघात थी। अंग्रेजों ने दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों व जमींदारों को भारत की सत्ता का हस्तांतरण किया था। कांग्रेस पार्टी ने जनता के जंगजू विद्रोह,

शहादतों के साथ गद्दारी करके सत्ता को अपने हाथ में लिया था। वक्ताओं ने सच्ची आजादी, जनता के लिए जनवाद की लड़ाई को जारी बताया और साम्राज्यवाद, व दलाल नौकरशाह पूंजीपतियो, जमींदारों की सत्ता को उखाड़ फैंक कर, अधूरे इंकालाब को पूरा करने का आव्हान आवाम के सामने किया। यह आजादी भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरू जैसे शहीदों, गुंडदूर, बाबूराव, गेंदसिंह जैसे योद्धाओं के सपनों की आजादी नहीं है। उस अधूरे इंकलाब को हमें पीएलजीए में भर्ती होकर आगे बढ़ाना होगा।

चीनी क्रांति को याद किया कोंटा इलाका की जनता ने

दक्षिण बस्तर के कोंटा इलाके में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें 342 पुरुषों व 228 महिलाओं ने भाग लिया। चीन की नवजनवादी क्रांति को याद करते हुये वक्ता साथियों ने चीनी जनता के शानदार युद्ध के बारे में जनता को अवगत करवाया। चीन की क्रांति ने दुनिया के उत्पीड़ित राष्ट्रों, उत्पीड़ित जनता के सामने एक नये रास्ते को रखा। जन मुक्ति सेना के लंबे अभियान व दीर्घकालीन जनयुद्ध की मिसाल इतिहास में देखने तक को नहीं मिलती। माहन माओ के नेतृत्व में जो रस्ता चीन की जनता ने दिखाया है वह दुनिया की सभी उत्पीड़ित जनता के लिए मुक्ति का रास्ता है। 'नव जनवादी क्रांति को मंजिल तक पहुंचायेगे', 'माओवाद जिंदाबाद', 'दुनिया के मेहनतकशो एक हो' के नारों की गूंज के साथ सभा संपन्न हुई।

पृथक बस्तर की मांग पर आम सभा संपन्न

कोंटा इलाक में 1 नंवबर को अलग बस्तर राज्य की जनता की मांग को लेकर आम सभा का अयोजन किया गया। 1 नवंबर को ही छत्तीसगढ़ राज्य गठन का दिवस है। जिस तरह से अलग छत्तीसगढ़ राज्य की मांग जायज थी और हमारी पार्टी ने उसके लिए भी संघर्ष किया था उसी प्रकार अलग बस्तर राज्य के लिए लड़ रही जनता की मांग भी जायज है और हम इसके लिए संघर्ष जारी रखेंगे ऐसा कहना था सभा को संबोधित करने वाले वक्ताओं का। इस सभा में सैकड़ों की संख्या में जनता ने भाग लिया।

28 जुलाई से 3 अगस्त तक शहीद सप्ताह मना

दक्षिण बस्तर जेगुरगोण्डा एरिया में शहीदी स्मारक स्थलों पर भारत की जनता की मुक्ति के लिए शहीद हुये साथियों को याद करते हुये सभायें सप्ताह भर होती रहीं। सैकड़ों की संख्या में बैनर, पोस्टर, पर्चो के माध्यम से शहीदों का संदेश जनता में पहुंचाया गया और गांव-गांव में व्यापक प्रचार किया गया।

एक सभा में 7,535 जनता ने भाग लिया। वक्ता साथियों ने जन मुक्ति के लिए आज तक हुये सभी शहीदों को सिर झुकाकर श्रद्धांजलि पेश की। और उनके खून से बनी राह पर चलने का आव्हान जनता से किया। शहीदों के अरमानों को हकीकत में तब्दील करने के लिए और उनकी शहादतों का बदला लेने के लिए नौजवानों से पीएलजीए में भर्ती होकर गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में बदलने की अपील की। चेतना नाट्य मंच की टीम ने शहीदों को गीतों, नाटकों के जरिये याद किया।

उत्तर-दक्षिण गढचिरोली डिवीजन

पीएलजीए की सातवीं वर्षगांठ मनी

गड़चिरोली डिवीजन के भामरागढ एलओएस एरिया में 2 जगहों पर पर पीएलजीए दिवस मनाया गया। इन सभाओं में 451 जनता ने भागीदारी की। सभा को एरिया कमेटी सदस्यों ने संबोधित किया। अपने संबोधन में वक्ताओं ने एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस के आव्हान को जनता के सामने रखा। कांग्रेस द्वारा दिये गये आधार इलाका निर्माण व चलायमान युद्ध में छापामार युद्ध को बदलने के लक्ष्यो को पीएलजीए में व्यापक रूप से भर्ती होकर व जन मिलिशिया को मजबूत करते हुये ही पूरा कर सकते हैं। वक्ताओं का कहना था कि यह जिम्मेवारी हम सभी पर है। हर व्यक्ति को इसके लिए संघर्ष में कूद जाना चाहिये। जनता से अपील करते हुये कहा कि आप लोग अपने बच्चों को पीएलजीए में भर्ती होने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि अपनी लोकसत्ता की रक्षा की जा सके और मजबूत किया जा सके। गांव-गांव में जन मिलिशिया को मजबूत करने व आने वाले पुलिस बलों पर हमले करने का आव्हान भी पीएलजीए दिवस पर किया गया। एसजेडसी और एसएमसी द्वारा भेजे गये संदेशों को सभा के प्रारंभ में जनता के सामने पढ़ कर सुनाया गया।

रूसी क्रांति की याद में...

भामरागढ़ एरिया में रूसी क्रांति की 90वीं वर्षगांठ को मनाया गया। अक्टुबर क्रांति के नाम से मशहूर 1917 में संपन्न हुई महान सामाजवादी क्रांति की विजय दुनिया के मेहनतकशों के लिए प्रेरणा का स्रोत था। सदियों से बंधा शोषण का जुआ रूसी जनता ने महान लेनिन के नेतृत्व में उतार कर फेंक दिया था और पहली बार एक शोषणविहीन राजव्यवस्था की स्थापना की थी। हजारों की तादाद में बहादुर रूसी जनता ने अपने प्राणों की आहुति देकर अपने सामाजावादी राज्य की स्थापना की थी। 7 नवंबर 1917 की सामाजवादी क्रांति ने उस समय दुनिया भर में चल रहे राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों को नई गति प्रदान की थी और उनको तमाम तरह की सहायता दी थी। देखते-देखते एक तिहाई दुनिया में सामाजवादी क्रांतियों का उभार आ गया था। हमें भी आपनी जनताना सरकारों का गठन करते हुये ऐसी ही व्यवस्था की स्थापना करनी है, यह संबोधन था वक्ताओं का।

कसनसूर एरिया में आठ मार्च मना

उत्तर गडचिरोली डिवीजन में कसनसूर एरिया में तीन जगहो पर आठ मार्च अतंर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। आदिवासी जनता अपने हक-अधिकार के लिए माओवादी पार्टी के नेतृत्व में जनयुद्ध लड़ रही है। भारत के शासक वर्ग आपने पुलिस-अर्ध सैनिक बलों के दम पर महिलाओं पर तरह-तरह के अत्याचार कर रहे हैं। महिलाओं के साथ बल्तकार को आंदोलनों को कुचलने के लिए एक हथियार के रूप में सब जगह बेशर्मी से हदें पार करके इस्तेमाल कर रहे हैं।

आम सभाओं की अध्यक्षता क्रांतिकारी आदिवासी महिला

(शेष पृष्ठ 39 में...)

turk dh vnkyrk l dN [kcj

उत्तर गड़चिरोली डिवीजन

पुलिस मुखबिर टिबु पुंगाटी का सफाया

कसनसूर एलओएस एरिया के अंतर्गत आने वाले सेवारी गांव का टिबु पुंगाटी बचपन से चोर प्रवृति का व्यक्ति था। लोगों के घरों में से बर्तन आदि चोरी करते करते बड़ा चोर बन गया, लोगों की संपत्ति लूटने लगा।

1990 में इसका बड़ा भाई जन संगठन में काम करता था लेकिन गिरफ्तार होकर जेल में जाने के बाद पुलिस का मुखबिर बन कर वापस आया और गांव वालों पर गुंडागिरी करने लगा। 1992 में संगठन वालों ने उसकी पिटाई कर दी, उस समय टिबु पुंगाटी डर कर भाग गया था। 1997 में इसके बड़े भाई को उसकी पुलिस के साथ साठगांठ और मुखबिरी के कारण दस्ते को उसे मौत के घाट उतारना पड़ा था। उसके बाद गांव वालों ने इनके परिवार को भी गांव से भगा दिया था। बाद में टिबु का लड़का देवजी पुंगाटी भी उसके चाचा की राह पर चलकर पुलिस की मुखबिरी करने लगा। 2005 में वो भी दस्ता के हाथों से बच नहीं पाया। उस समय जन अदालत में टिबु की पिटाई कर चैतावनी देकर जनता ने माफ कर दिया था। लेकिन टिबु पुंगाटी के परिवार ने पुलिस की मुखबिरी को ही अपना पेशा बना लिया था। एक के बाद एक तीन लोग पुलिस के मुखबिर बने, जनता की माफी को टिबु हवा में उड़ाते हुये फिर गुंडगर्दी पर उतर आया था। कसनसूर की जनता व आंदोलन के लिए टिबु पुंगाटी को खत्म करना आवश्यक हो गया था। दिनांक 3 अप्रैल 08 को पीएलजीए बलों ने जनता के आदेश पर उसका सफाया कर दिया।

दस्ता को जहर देकर मारने की गड़चिरोली एसपी की साजिश नाकाम!

गड़चिरोली की पुलिस ने संघर्षरत क्रांतिकारी आदिवासी जनता के खिलाफ अघोषित युद्ध छेड़ रखा है। लोगों की पिटाई करना, झूठी मुठभेड़ों में निर्दोष लोगों की हत्या करना, महिलाओं से बलत्कार करना सी-60 कमांडो और पुलिस का हर रोज का सगल बन गया है। एक तरफ झूठे सुधार कार्यक्रम और दूसरी तरफ नृशंस दमनचक्र, अब और भी क्रूरता की हद पार कर कोर्वटों, मुखबिरों आसामाजिक तत्वों के जरिए छापामारों को खाने में जहर देकर मारने की साजिश वहां के पुलिस अधिकारी रच रहे हैं।

उत्तर गड़चिरोली के कसनसूर एरिया के गांव कोंदावाही के ग्रामीणों को पुलिस वालों व अन्य मुखबिरों ने 14 लोगों को 14 भरमार बंदूकों के साथ नक्सली दलम के सदस्य बताकर आत्मसमर्पण करवाया। आत्मसमर्पण करने वालों को भरमार के साथ 60,000 रू और बिना बंदूक के 15,000 रू देने का लालच दिया गया। इन लोगों को पार्टी के खिलाफ तैयार करके गांव में ग्राम रक्षा दल की गुंडावाहिनी तैयार करने के लिए भेज दिया। इन जन द्रोहियों को दलम को खाने में जहर मिलाकर देने की योजना बनाकर गड़चिरोली के एसपी ने भेजा।

एक बार जन संगठन का कार्यकर्ता गांव में मीटिंग लेकर रात को एक घर में सो रहा था। रात के बारह बजे के करीब इन लोगों ने उसे घेर लिया। किसी तरह वह कामरेड वहां से बच निकलने में सफल हुआ। अगले ही दिन उनकी पहचान करके गांव वालों की मीटिंग बुलाई। तब तक उनकी साजिश का पूरी तरह पता नहीं था, इसलिये 8 लोगों की पिटाई करके माफी मांगने पर छोड़ दिया गया। लेकिन उनकी करतूतें बढ़ती गईं। पुलिस को सूचना लगातार जाती रही। उनकी करतूतें जनता के सामने खुलती गईं। 15 मार्च 2008 को 8 गांव की लगभग 380 जनता ने जन अदालत लगाकर कुल्ले गोटा व रवि गोटा को पकड़ कर पेश किया गया। कड़ी पूछताछ के बाद उन्हेंने साजिश के बारे में खुलासा किया। रवि गोटा ग्राम सुरक्षा सामिती का कमांडर निकला और कहा एसपी ने उन्हें बंदूक लेकर आने व दल वालों को जहर देकर मारने की बात कही थी। जनता ने उन दोनों की काली करतुतें, जन द्रोह को कहीं से भी माफ करने के काबिल नहीं पाया। दोनों को जन अदालत ने सजा ए मौत दी और उनको उनके नापाक इरादे पूरे करने से पहले ही खत्म कर डाला। और इसके साथ एसपी को चेतावनी भी दे डाली, क्रांतिकारी जनता तुम्हारे नापाक इरादों को कभी पूरा नहीं होने देगी।

ग्राम सुरक्षा दल के राजू का सफाया

उत्तर गड़चिरोली डिवीजन के जारवेड़ा थाना के अंतर्गत आने वाला कांदकी गांव का निवासी राजू नैताम पुलिस द्वारा बनाए जा रहे ग्राम सुरक्षा दल का सदस्य बना था। आसपास के गांवों में घूमकर लोगों को धमकी और लालच देकर ग्राम सुरक्षा दल का गठन करने का काम करता था। गड़चिरोली एसपी का गुर्गा बनकर समाचार इकट्ठा कर पहुंचाता था। गांव वालों और जन संगठन के सदस्यों को थाने में ले जाकर सरेंडर करवाने में उसका हाथ रहता था।

गांव-गांव में घूमते हुये जब लोगों को शक होता था तो अपने को नक्सलवादियों के लिए ही काम करता हूं कहकर जनता को भ्रम में रखता था। लेकिन राजू की हरकतें जनता से छुपी नहीं रह सकी और उसे खत्म करने का फैसला लिया। राजू नैताम को उसके गांव कांदकी में ही 1जनवरी 08 को खत्म कर दिया गया।

दक्षिण बस्तर

जन विरोधी पेदा हुंगाल को मौत

दक्षिण बस्तर डिविजन में बिड़िया केलवा मे पेदा हुंगाल जन विरोधी कामों में सलंग्न था। गांव में रहकर व्यापार करता था। आंध्र जाकर वहां की पुलिस से मिलकर दोरनापाल शिविर में रहने लगा और जनता में दुष्प्रचार कर व दबाव डाल कर शिविर में जाकर रहने के लिए प्रोत्साहित करने लगा। डब्बा कोंटा गांव में ऐसा प्रयास कर रहा था तब जन संगठनों के सदस्यों ने उसके काम की जांच की और जन आदालत के सामने पेश किया। जनता ने विचार करके उसे खत्म करने का फैसला सुनाया। 8 फरवरी को पेदा हुंगाल को जनता के फैसले को अमल में लाते हुये जन मिलिशिया ने मौत के घाट उतार दिया।

मुखबिर प्रकाश खत्म

कोंटा पुलिस के लिए मुखबिरी का काम करने वाले प्रकाश (30) को 3 जुलाई 2007 को मार डाला गया। जन दुश्मन प्रकाश उड़िसा राज्य के जिला जयपुर का रहने वाला था जो 3 साल से मुखबिरी कर रहा था। भेज्जी थाना के तहत काम करते हुये उसे एक साल हो गया था। प्रकाश जब जन मिलिशिया के हाथों पड़ गया तो उसने एलओएस कमांडर को बताया कि उसका मुख्य काम आप लोगों के घूमने के रस्ते व डेरों की तलाश करना है। उसके बाद पुलिस के साथ आकर उन जगहों पर हमला करवाना। जब उसने अपना कसुर कबूल कर लिया तो उसे जन अदालत के सामने रखा गया। जनता ने उसे नहीं छोड़ने का फैसला किया और मौत की सजा सुनाई।

उतर बस्तर डिवीजन

15 लाख का बड़ा घोटाला उजागर
सरपंच की पिटाई

उतर बस्तर डिविजन के प्रतापुर एरिया, बड़गांव एलओएस इलाके में 13 अप्रैल को एक जन अदालत का आयोजन किया गया। प्रतापुर गांव की सरपंच अनिता का पति लक्ष्मण ताराम जो सरपंच का काम भी संभालता है, के खिलाफ वहां की जनता ने जन सरकार को रिपोर्ट दी कि सरपंच लुटेरी सरकार से आये पैसे को बिना कुछ काम किये हड़प रहा है। जन अदालत में सरपंच सहित उसके अन्य सहयोगियों से पूछताछ की गई तो उन्होंने 15 लाख 48 हजार 241 रू. के घोटले की बात स्वीकार की।

रोजगार गारन्टी योजना, वृद्धा पेंशन, निराश्रित पेंशन आदि सरकारी योजनाओं में इलाके के सरपंच, सचिव व उनके गुर्गे फर्जीवाड़ा कर रहे हैं। जिसके खिलाफ पोस्टर लगा कर उनके विरूद्ध कार्रवाई करने की चेतावनी दी थी। अदालत में पूछताछ के दौरान जब उन्होंने सहयोग नहीं किया तो जनता ने उनकी जोरदार पीटाई शुरू कर दी। जिसके बाद सारा कुछ शीशे की तरह साफ होता चला गया। रोजगार गारांटी योजना के तहत भूमि-समतलीकरण का कार्य होना था। जिसके लिए सरकार की तरफ से 15,48,241 रू. का आवंटन हुआ था। सरपंच लक्ष्मण ताराम व उसके सहयोगी बड़ा भाई जो पटेल भी है लच्छू राम, बुधानडंड का पटेल सुखदेव बैसाखू, प्रतापुर का पटेल उग्रेल, गोगारी का सोयल की भी जन अदालत में पिटाई की गई।

सरपंच द्वारा उपयंत्री (सब इंजिनियार) के साथ मिलकर भूमि समतलीकरण की एक झूठी रिपोर्ट तैयार की, किस की जमीन ठीक की, किस को काम पर लगया सब रजिसटर में झूठ दर्ज किया, केवल अपने सहयोगी मुखियाओं की जमीन को समतल किया जिस पर 4,48,241 रू. खर्च होने की बात उसने स्वीकार की, बाकि के 11 लाख रू. अपने आप डकार गया।

जन अदालत लगभग 5 घंटे तक चली और 17 गांवों की 1200 जनता ने भाग लिया। सरपंच को तब छोड़ा गया जब उसने एक माह में किसानों की डकारी गई राशि वापिस करने की बात को कबूला। अदालत में सचिव ने एक-एक किसान की हजम की गई राशि के बारे में बताया। जिन किसानों के नाम पर यह राशि उन किसानों को दी जायेगी जो भूमि-समतलीकरण के नाम पर आई थी।

इस जन अदालत से जनता व जन संगठनों में काफी जोश आया है। सरपंच, पटेल उसके ये सारे सहयोगी जन संगठनों के कार्यकर्ताओं पर दबाव डालते थे और पुलिस को रिपोर्ट देने के लिए डराते थे। इसलिए लोगों ने खासतौर पर इनकी जमकर पिटाई की। ★

(... पृष्ठ 37 का शेष)

सगंठन की नेत्रियों ने की और झंडा फहराकर कार्यक्रमों की शुरूआत की।

महिलाओं पर अत्याचारों के विरोध में सैंकड़ों पोस्टर, पर्चे और कुछ बैनरों के साथ प्रचार किया गया। 15 गांवों की सैंकड़ों जनता ने तीन जगहों पर आम सभाओं में भाग लिया। गडचिरोली के अत्याचारी कमांडो बलों के खिलाफ जनता ने खुलकर विरोध प्रदर्शन किया।

अहेरी एरिया में विस्थापन के खिलाफ सभायें

अहेरी एरिया में विस्थापन के विरोध में व साम्राज्यवादियों के लिए देश के सांसाधनों की खूली छूट देने के विरोध में 4 गांव में जन सभाओं का आयोजन किया गया। मेंड्रा, नैगुंडा, नैनेरअ और सिदे इन गांव की सभाओं में सैंकड़ों की संख्या में जनता ने भाग लेकर अपना विरोध दर्ज करवाया।

चातगांव एरिया में डीएकेएमएस अधिवेशन सफल

चातगांव एरिया में क्रांतिकारी आदिवासी मजदूर किसान संगठन का क्षेत्रीय सम्मेलन इंकालाबी जोश के साथ 6 अप्रैल 2008 को संपन्न हो गया।

6 अप्रेल को सभी किसान प्रतिनिधि कामरेड देवदास हॉल में जमा हुये। डीएकेएमएस के एरिया अध्यक्ष कामरेड .... ने झंडा फहराकर शहीदों को श्रद्धांजली देते हुये सम्मेलन की शुरूआत की।

प्रतिनिधियों ने पिछले दो सालों के कामकाज की समीक्षा की और संगठन के घोषण-पत्र पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। सम्मेलन ने अगले सम्मेलन तक अपनी कमेटी का चुनाव किया और राजनीतिक प्रस्ताव परित किये। जिसको सभी प्रतिनिधियों ने अनुमोदन कर पास किया।

दमन के खिलाफ सशक्त आंदोलन खड़ा करना, टंटा मुक्ति समिति का पर्दाफाश करना, तेंदू पत्ता, बांस मजदूरी, वन उपजों की दरें बढ़ाने के संघर्षो को लगातार जारी रखना, सूर्जागढ़ पहाड़ को बचाना आदि प्रस्ताव पारित किये गये।

दोबूर फायरींग के खिलाफ
10 मार्च को गड़चिरोली जिला बंद रहा

10 मार्च 2008 को गड़चिरोली जिले में दोबूर फायरींग के खिलाफ चक्का जाम रहा। संघर्ष से प्रभावित इलाके में निजी व सरकारी वहान पूरी तरह से बंद रहे। सिरोंचा, अहेरी, भामारगढ़, कसनसूर और कोरची के दुकानदारों ने अपनी दुकाने बंद रखी। दूसरे राज्यों से आने वाले वाहन भी बंद रहे। ★

पुलिसिया ज्यादतियों और अत्याचारों के खिलाफ मानपुर इलाके की जनता ने बजाया संघर्ष का बिगुल!

2004 से भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में क्रांतिकारी आन्दोलन में संगठित हो रही मानपुर क्षेत्र की जनता का इतिहास रहा है कि उन्होंने अन्याय और जुल्म के खिलाफ बगावत का झण्डा हमेशा बुलन्द रखा है। छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले में आने वाला यह क्षेत्र कुछ कांकेर जिले के कोड़ेकुरसे और कुछ भानुप्रतापपुर इलाकों से भी जुड़ा हुआ है। दुर्ग जिले में आने वाला औद्योगिक क्षेत्र दल्ली-राजहरा, जोकि मजदूरों के जुझारू संघर्षों के लिए मशहूर है, भी इसके बगल में है। दरअसल यहां पर क्रांतिकारी आन्दोलन का प्रभाव करीब डेढ़ दशक से रहा है। बगल में मौजूद गड़चिरोली जिले (महाराष्ट्र) के टिप्रागढ़ क्षेत्र और उत्तर बस्तर (छत्तीसगढ़) के प्रतापुर-रावघाट क्षेत्र के संघर्षों का यहां की जनता पर न सिर्फ प्रभाव ही रहा, बल्कि उनके साथ उनके जीवन्त सम्बन्ध भी रहे। और 1996 में मानपुर पुलिस थाने पर तत्कालीन पीपुल्सवार पार्टी के गुरिल्लों द्वारा किए गए शानदार हमले ने ही तो इस क्षेत्र की जनता के सामने हथियारबन्द लड़ाई की जरूरत को व्यावहारिक रूप से पेश किया था। इस पृष्ठभूमि में 2004 से यहां विस्तारित हुए छापामार दस्तों का, क्रांतिकारी राजनीति का जनता ने तहेदिल से स्वागत किया। अपनी बुनियादी समस्याओं के हल के लिए संगठित होकर लड़ने का रास्ता चुन लिया। देव-धर्म से जुड़े आपसी विवादों को भी बिना खून-खराबे के मिल बैठकर एक सौहार्दपूर्ण माहौल में कैसे हल किया जा सकता है, इस बात को यहां की जनता ने भाकपा (माओवादी) के प्रवेश के बाद ही समझ लिया। गांवों में मौजूद सामंती मुखियाओं के शोषण-अत्याचारों के खिलाफ संगठित ताकत से चुनौती दी जा सकती है, उनका अन्त किया जा सकता है, इस सच्चाई को जनता ने अपने संगठित होने के क्रम में खुद समझ लिया। लेकिन संगठित ताकत का रूप ले रही जनता की चेतना से क्षेत्र के प्रतिक्रियावादी तत्व और उनका पुलिस-प्रशासन बेचैन होने लगे। इसे दबाने के लिए उनके पास एक मात्र हथियार मौजूद है - वो है बल प्रयोग। पुलिस की लाठियों और गोलियों के दम पर टिकी प्रतिक्रियावादी राजसत्ता ने इस नवोदित जन चेतना को लौह जूतों तले रौंदने का वहशी अभियान शुरू किया। लोगों को मारना, पीटना, घरों में घुसकर शराब-मुरगे लूटना, जनता के नेताओं को गिरफ्तार करना, जेलों में डालना, कुछ लम्पट-असामाजिक व जन विरोधी तत्वों को पैसों के लालच में फंसाकर पुलिसिया मुखबिर बनाना - ये सारे हथकण्डे अपनाए जाने लगे। लेकिन समाज विज्ञान का द्वंद्वात्मक नियम ही है कि इन सबके खिलाफ जनता का विरोध-प्रतिरोध भी बढ़ता जा रहा है। उसके चंद उदाहरण नीचे पेश हैं -

दिसम्बर 2007 को जमुना नामक एक एरिया कमेटी सदस्य रायपुर में गिरफ्तार हुई थी। पुलिस की यातनाओं से घबराकर उसने पुलिस को इलाके में घुमाकर पार्टी के बहुत सारे सम्पर्क और सामान दिखा दिए। उसी सिलसिले में राजनांदगांव जिले के जक्के गांव के पंचायत सचिव की उसने निशानदेही की। पुलिस को बताया कि उसके घर में कुछ दैनिक उपयोग का सामान रखा हुआ है। 29 जनवरी 2008 की आधी रात में 40-50 की संख्या में आए पुलिस बलों ने सचिव के घर को घेर लिया, घर की तलाशी ली और कुछ भी न मिलने पर उसे गिरफ्तार कर ले जाने की कोशिश की। इस बीच ग्रामीण इकट्ठे हो गए। पुलिस को पूछा कि क्या वे कोई वारंट लेकर आए हैं, जिससे घर की तलाशी ली जा सके और गिरफ्तार किया जा सके। जाहिर सी बात है, पुलिस जनवादी तरीके से पूछे जाने वाले ऐसे सवालों को सुनने की आदी ही नहीं है। लोगों के साथ धक्का-मुक्की करने और गाली-गलौज करने के अपने चिर-परिचित तेवर दिखाने लगे। लोगों का सब्र का बांध जब टूट ही गया तो उन्होंने भी ईंट का जवाब पत्थर से ही देना मुनासिब समझा। लोग बार-बार यह दोहराते रहे कि अगर गांव के किसी व्यक्ति को पकड़ना भी है तो कानूनी ढंग से करे, कारण बताकर करे, सबके सामने करे, उसकी गलती क्या है यह बताकर करे। रात के अंधेरे में चोरों की तरह गांव पर धावा बोलकर आतंक मचाने का हम विरोध करते हैं। पुलिस को वहां से भागने के अलावा दूसरा कोई रास्ता ही नहीं सूझा। सब बदहवास भाग निकले। इसके बाद जनता ने अपने इस प्रतिरोधी संघर्ष को व्यपकता देते हुए पंचायत के 3 अन्य गांवों की जनता से एकजुटता बनाई। कुल 400 की संख्या में जाकर पास में स्थित दल्ली-मानपुर मुख्य सड़क को 32 घण्टों तक जाम कर दिया। पुलिसिया अत्याचारों के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। मोहला थाने से आए 100 से ज्यादा पुलिस बलों को भी इस जाम को हटाने के लिए आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई। आखिर में, जब प्रशासन के अधिकारियों और राजनेताओं ने जनता को यह आश्वासन दिया कि आइंदा ऐसी घटना न हो, इसके लिए पुलिस को आदेश देंगे, तब जाकर जनता ने जाम को हटाया।

30 जनवरी 2008 को कांकेर जिले के दुर्गकोंदुल तहसील के ग्राम ओटेकस्सा पर 80 पुलिस वालों के जत्थे ने धावा बोल दिया। रैनू नामक व्यक्ति को उन्होंने दबोच लिया जिसे वो संगठन नेता बताने लगे थे। लेकिन गांव की जनता ने, जिसमें खासकर महिलाएं और बूढ़े शामिल थे, पुलिस को घेर लिया। वे जाने लगे तो उनके पीछे पड़े। वहां से एक दूसरे गांव तक पुलिस आगे-आगे और लोग पीछे-पीछे। वहां जाने के बाद वहां की महिलाएं भी लोगों के इस हुजूम में शामिल हो गईं। महिलाओं की ताकत और ज्यादा बढ़ गई। पुलिस को आगे जाने से रोक दिया। उन्होंने पूछा कि वे यह बताएं कि रैनू ने क्या गुनाह किया। किस जुर्म में उसे गिरफ्तार किया जा रहा है? कानून, लोकतंत्र आदि शब्दों की परिभाषा से ही चिढ़ने वाली पुलिस की बोलती बन्द हो गई। अखिर उसने रैनू को छोड़ दिया और अगले दिन थाने में हाजिरी

देने का आदेश भी दिया। महिलाओं ने फिर पूछा थाने में क्यों आए, उसका जुर्म क्या है यहीं सबके सामने बताओ। इसका वे क्या जवाब दे सकते थे? जनता को जागरूक बनाना और अपने हक-अधिकारों के संघर्ष करने की सीख देना यही तो थे रैनू जैसे लोगों के जुर्म! इस पूरे घटनाक्रम में महिलाओं की पहलकदमी ही काबिले तरीफ थी।

एक और घटना 24 फरवरी 2008 की है। राजनांदगांव जिले में आने वाले गज्जूटोला गांव से एक मुखबिर के जरिए पुलिस को यह समाचार मिला था कि वहां नक्सलवादी ग्रामीणों को एक वीडियो फिल्म दिखा रहे हैं। शाम को पुलिस आ धमकी। एक माइनप्रूफ गाड़ी और 2 जीपों में भारी संख्या में आई पुलिस से जंगल से बड़ी संख्या में लौट रही जनता का आमना-सामना हुआ। पहले लोगों को धमकाने लगे। इससे असर नहीं रहा तो दो ग्रामीणों को पीटने लगा। तब तक चुपचाप देखती रही महिलाएं मैदान में आ गईं। लाठी, डंडा जो मिला उसे हाथों में ले लिए पुलिस से उलझ गईं। इस अचानक और अनापेक्षित प्रतिरोध से पुलिस चकमा खा गई। स्थिति को काबू से बाहर होते देखकर पुलिस बैक फुट पर चले गई। लेकिन महिलाओं ने उन्हें तब तक नहीं छोड़ जब तक कि उन्होंने बेवजह पिटाई के लिए माफी नहीं मांग ली।

इन सबके बाद, जन प्रतिरोध का एक और वाकया सामने आया जो सबसे ज्यादा जुझारू था। वह है नांगहूर व रोसेली की जनता का प्रतिरोध-विरोध।

6 मार्च 2008 को मानपुर क्षेत्र में आने वाले भानुप्रतापुर तहसील के ग्राम नांगहूर व रोसेली के ग्रामीणों के साथ पुलिस ने मारपीट और गाली-गलौज किया जिससे गुस्साये ग्रामीणों ने पुलिस वालों का पहले विरोध और बाद में प्रतिरोध किया। पुलिस ने हवाई फायर भी की ताकि जनता को आतंकित किया जा सके। इस झड़प में कई ग्रामीणों के साथ-साथ 9 पुलिस वाले भी बुरी तरह घायल हुये थे। बाद में ग्रामीणों ने तराईगोटिया के पास 24 घंटे का चक्काजाम किया और 14 मार्च को दमकसा में 57 गांव के हजारों लोगों ने विरोध सभा आयोजित की।

6 मार्च को पुलिस पार्टी अपने चिर परिचत गुंडाई अंदाज में गश्त पर निकली हुई थी। पुलिस ने बेखौफ जनता के साथ मारपीट करना शुरू किया और ग्राम पंचायत की सरपंच फूलवती उसेंडी को 20 लोगों के लिए जल्दी खाना बनाने के लिए ध मकाया। जबर्दस्ती घरों से शराब लेकर पी लिए। फूलवती के पिता विष्णु उसेंडी के अुनसार खाना हमने बना भी दिया था लेकिन पुलिस ने गांव वालों के साथ मारपीट यह कहते हुये शुरू कर दी कि तुम दादा लोगों को खाना खिलाते हो और गाली-गलौज पर उतर आये। मारपीट से रोसेली के अगनू राम के सिर में, नांगहूर के पनरूराम के जांघ में, सरपंच फूलवती के पीठ में, दुखिया बाई के सिर व जांघ में चोटें आई हैं। ग्रामीणों को डंडों, बूटों व बंदूक के कुन्दों से मारा गया।

मारपीट के दौरान लोगों ने आत्मरक्षा के लिए 9 पुलिस वालों को भी जमकर पीटा। पुलिस ने हवा में गोलियां चलाकर जनता को डराने की कोशिश की तो जनता ने सीना तानकर चुनौती दी कि 'दम है तो यहां मारो, ऊपर बादलों को क्या मारते हो'। जनता के इस कड़े तेवर को देखकर पुलिस वाले कुछ देर बाद उड़न छू हो गए। अपने कर्मचारियों के करतूतों पर परदा डालते हुए कच्चे चौकी प्रभारी ने अखबार वालों से कहा 'पुलिस पार्टी गश्त पर थी, पुलिस ने ग्रामीणों से मारपीट नहीं की, ग्रामीणों ने ही पत्थर व डंडों से पुलिस पर हमला किया है, इसमें हवलादार उसेंडी सहित 9 जवान घायल हुये हैं। ग्रामीणों में नक्सली भी थे, जो पुलिस पार्टी को मारने की योजना बना रहे थे।'

चक्काजाम में शामिल रोसेली, नांगहूर, तराईघोटिया, नेंडगांव के ग्रामीणों का कहना है कि पुलिस की हर रोज की गुंडागर्दी हम कब तक सहें। पुलिस वाले नशे में थे व अनाप-शनाप गालियों पर उतर आए थे। ग्रामीणों ने बताया कि पुलिस वाले मारपीट कर जबर्दस्ती 'सलवा जुडूम जिंदाबाद व नक्सल मुर्दाबाद' के नारे लगवा रहे थे। ऐसा न करने पर गांव वालों को पीटा गया। गांव की दीवारों पर नक्सलवादियों के खिलाफ गंदी-गंदी गालियां लिखीं। बाद में इस क्षेत्र के ग्रामीणों ने 14 मार्च को दमकसा में हजारों की संख्या में पहुंच कर प्रतिरोध सभा का आयोजन किया। दोषी पुलिस कर्मियों को तुरंत बर्खास्त करने की मांग की। इस रैली में हमारे पदभर्री गांव के निवासी विश्राम तोप्पा को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया जो जन संगठन की तरफ से रैली के समर्थन में संबोधित करने गया हुआ था। और अपने इस जुल्मोसितम को जायज ठहराने के लिए पुलिस ने 14 मार्च की जनता की विरोध-सभा को 'नक्सलवादियों की रानिबोदली विजय सभा' और विश्राम तोप्पा को इनामी नक्सली घोषित कर दिया। क्षेत्र की जनता ने पुलिस के इन सफेद झूठों की निंदा करते हुए यह सवाल उठाया कि कल तक अपने गांव में, अपने घर में, अपने बीवी-बच्चों के साथ कमाने-खाने वाला व्यक्ति कैसे और कबसे नक्सली बन गया? पुलिस-प्रशासन भले ही इन करतूतों के जरिए जनता को भयभीत करने का सपना देख रहा हो, लेकिन जागरूक जनता इसे अपने संघर्ष के जरिए चकनाचूर कर देगी।

अन्त में, दमन के जरिए जनता की चेतना को या जनता की संगठित ताकत को दबाया जा सका, इसका एक भी उदाहरण विश्व इतिहास के पन्नों में खोजने से भी नहीं मिलता। हां, इतना कर सकते हैं कि कुछ समय के लिए, कुछ हद तक, कुछ जगहों पर दबा-सा दिया जा सकता है। शोषक वर्गों को यह बात मालूम ही नहीं, ऐसी बात भी नहीं है। लेकिन उनके पास यही एक चारा बचा है कि वे नित नए तरीकों में दमन करने के उपाय ईजाद करते रहते हैं। सिर्फ दमन से बात नहीं बनेगी, इसलिए प्रलोभनों का जाल भी फैलाते हैं, 'सुधार', 'विकास' आदि शब्दों का मायाजाल बुनते हैं ताकि लोगों को फंसाया जा सके। लेकिन दमन ही उनके लिए प्राथमिक है। वे अत्यंत पाशविक तरीके अपनाने से भी पीछे नहीं हटते क्योंकि कैसे भी हो उन्हें अपनी लूटकारी व्यवस्था को बनाए रखना है। जनता को उनकी हर चाल का बारीकी से अध्ययन करना होगा। हर मोड़ पर कड़ी टक्कर देनी है। मानपुर क्षेत्र के लोगों की छोटी ही सही, पर इन प्रेरणादायक जन-प्रतिरोधी कार्रवाइयों से सिर्फ वहीं नहीं, पूरे दण्डकारण्य की जनता को निश्चित रूप से एक नया जोश मिलेगा। ★

ग्रेहाउण्ड्स हत्यारों को पीएलजीए का मुंहतोड़ जवाब!

पीएलजीए को इंकलाबी जोश के साथ लाल-लाल सलाम!!

ओडिशा के मलकानगिरी जिले के चित्रकोंडा थाना के अंतर्गत एक बहुत बड़ा जलाशय है, बलिमेला। आंध्र-ओडिशा बार्डर स्पेशल जोन (एओबी) में आने वाले इस इलाके में 29 जून 2008 की सुबह जन मुक्ति छापामर सेना ने घात लगाकर एक जबर्दस्त हमले को अंजाम दिया। भारत की सबसे क्रूर और खूंखार कमांडो बलों, जिनके हाथ सैकड़ों क्रांतिकारियों, कम्युनिस्ट नेताओं, आम लोगों और औरतों-बच्चों के खून से रंगे हैं, पर पीएलजीए का यह पहला बड़ा हमला है। ग्रेहाउंड्स के हत्यारे जंगल में सर्चिंग करके एक नाव में सवार होकर थाने में जा रहे थे। पीएलजीए बलों ने पास की पहाड़ी पर ऐंबुश लगाकर तीन तरफ से जबर्दस्त गोलीबारी की, जिससे नाव का संतुलन बिगड़ गया और नाव 40 फीट गहरे पानी में डूब गई। जलाशय के चारों ओर पहाड़ियां हैं। पीएलजीए ने उनका इस्तेमाल करते हुये लांच पर आ रहे 64 कमंडो बलों को निशाना बनाया। उनमें 3 सब इंसपेक्टर और 3 ओडिशा के होमगार्ड थे, बाकि सब भाड़े के ग्रेहाउण्ड्स जवान। 24 घायल किनारे पर पहुंच कर जान बचाने में सफल हुये जिनमें से 8 गंभीर घायलों को हेलिकाप्टर से विशाखपटनम ले जाया गया।

नाव में 38 ग्रेहाउंडस के हत्यारे डूब कर मर गये। 6 हेलिकाप्टरों, जल सेना के गोताखोरों और हजारों की तादाद में सीआरपीएफ और पुलिस बलों की मदद से करोड़ों रुपये पानी की तरह बहाकर कड़ी मशक्कत करने पर भी एक पखवाड़े बाद सारी लाशों बरामद हो पाईं। कई झूठी मुठभेड़ों के बाद, जिसका ताजा उदाहरण कंचाल हत्याकाण्ड है, क्रांतिकारियों की लाशों को जानबूझकर कई दिनों तक घटनास्थल पर ही सड़ाने के लिए यही ग्रेहाउण्ड्स बल बदनाम है। इत्तेफाक से पीएलजीए की इस कार्रवाई की वजह से भी कई दिनों तक इनकी लाशें बरामद नहीं होने पर उनके परिवारों को दुख जरूर हुआ ही होगा जिसे हम समझ सकते हैं। लेकिन, साथ ही साथ, उन सैकड़ों माता-पिताओं के, जिनकी संतानों की लाशों को इन ग्रेहाउण्ड्स बलों ने एक बार नहीं, कइयों बार जानबूझकर सड़ा दिया था जिससे उन्हें अपने जिगर के टुकड़ों को आखिरी बार गले लगाकर जी भरकर रोने का भी मौका नहीं मिल पाया था, उन लोगों के दुख को समझने और उनके दर्द का अंदाजा लगाने का मौका भी, खासतौर पर आंध्र के नागरिक समाज को तो जरूर मिल गया होगा। इस हमले ने देश के शासक वर्गों, ओड़िशा, आंध्रप्रदेश की राज्य सरकारों और केंद्र सरकार को कंपकंपी चढ़ा दी। बौखलाये आंध्र के गहृमंत्री जानारेड्डी ने पहले तो बयान दिया था 'माओवादियों से बदला लिया जायेगा' और अगले ही दिन बयान बदलकर कहा कि हम बातचीत के लिए तैयार हैं।

ज्ञात रहे कि मार्च महीने में दक्षिण बस्तर के कंचाल गांव में कोर्वट एक्शन कर और ऐंबुश में फंसाकर हमारे 18 प्रिय साथियों की हत्या इन्हीं ग्रेहाउण्ड्स सरकारी हत्यारों ने की थी। यहां तक कि गांव की 60 वर्षिय बुर्जुग महिला को भी वर्दी पहनाकर गोली मार डाली थी। जिस एओबी इलाके में अब यह कार्रवाई हुई उसी के अन्तर्गत विशाखा जिले के वाकापल्ली गांव में इन्हीं ग्रे-हाउण्ड्स बलों ने 12 आदिवासी महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया था। ग्रेहाउण्ड्स की पाशविकता का शिकार हुई इन महिलाओं को बाद में कोर्ट-कचहरियों से जो अपमान मिला वो इससे भी बढ़कर है। पीएलजीए की इस कार्रवाई से उन महिलाओं की पीड़ा तो जरा भी कम नहीं होगी, लेकिन अपमानों के दौर से लगातार गुजरने के कारण घुट-घुटकर जी रही उन पीड़ित महिलाओं के चेहरों से आज शायद पहली बार हल्की सी मुस्कान तो जरूर बिखरी होगी।

खासतौर पर मुखबिरों और कोवर्टों की पक्की सूचना पर ही धोखे से वार कर कत्लेआम मचाने के लिए बदनाम इस बल की 'बहादुरी' को लेकर हाल के वर्षों में खासा हौवा खड़ा किया जा रहा है। सभी राज्यों में ग्रेहाउण्ड्स को मोडल बनाने की सीख दी जाने लगी क्योंकि आंध्र में क्रांतिकारी आन्दोलन को लगे अस्थाई झटके के लिए इसी हत्यारे बल को मुख्य कारण माना जा रहा है। लेकिन इस कार्रवाई से जनता की शक्ति पर निर्भर रहने वाली हमारी जन सेना - पीएलजीए ने फिर एक बार इस ऐतिहासिक तथ्य को साबित किया कि चाहे कितना भी ताकतवर दुश्मन हो सही दावपेंच खेलकर वीरता, सूझबूझ, तेजी और पहलकदमी के साथ लडेंगे तो जीत निश्चित है। जैसे ही ग्रेहाउण्डस की इतनी तादाद में मरने की खबर फैली तो आंध्र, दण्डकारण्य और ओड़िशा के गांव-गांव में खुशियों की लहर दौड़ गई और एक जश्न का माहौल बन गया। इस तरह, पीएलजीए ने हमारे सैकड़ों शहीद साथियों के खून का बदला, दर्जनों महिलाओं के अपमान का बदला पूरा न सही, एक हद तक ले ही लिया। बलिमेला प्रतिक्रियावादियों के भाड़े के टट्टुओं के लिए एक खुली चेतावनी है। 'प्रभात' इस बहादुराना कार्रवाई को कामयाबी के साथ अंजाम देने वाले पीएलजीए के विभिन्न बलों के जांबाज कमाण्डरों और लाल योद्धओं का तथा एओबी स्पेशल जोनल कमेटी का और एओबी की तमाम संघर्षशील जनता का लाल-लाल अभिनन्दन करती है। ★

एसपी डांगी और कलेक्टर पिस्दा के काफिले पर हमला दो भाड़े के पुलिस जवान घायल

23 मार्च 2008 को कांकेर जिले के कलेक्टर पिस्दा और एसपी डांगी की बदनाम जोड़ी अपनी दमनकारी मुहिम में तेजी लाने की मंशा से माड़ डिवीजन के सितरम का दौरा करने निकली हुई थी जहां पर पुलिस थाना खोलने की योजना है। स्थनीय पीएलजीए दस्ते को इसकी जानकारी मिली और विस्फोट कर उन पर हमला किया। इसमें दो पुलिस वाले घायल हुए। हालांकि इस हमले में इस हत्यारी जोड़ी को कुछ नहीं हुआ, पर एक चुनौती जरूर दी गई। ★

हाट बाजारों में पुलिस पर पीएलजीए के शानदार हमले! कई अत्याधुनिक रायफलें जब्त!!

जबसे पीएलजीए की स्थापना हुई तभी से उसके सभी बलों के योद्धओं ने हाट बाजारों में पुलिस व अर्द्ध सैनिक बलों पर हमला कर उनके हथियार छीन लेने की कई कार्रवाइयों को अंजाम दिया है। ऐसी घटनाओं में जन मिलिशिया की पहलकदमी ही सबसे अहम है जोकि पीएलजीए का आधार बल है। ऐसे हमलों की खास बात यह है कि अब तक हुई लगभग सभी घटनाओं में हमारे योद्धाओं ने चाकू, कुल्हाड़ी जैसे परम्परागत हथियारों का ही प्रयोग किया है। पुलिस-प्रशासन परेशान है कि ऐसी घटनाओं को रोकें तो कैसे रोकें। एक बार तो जुडूम का सरगना महेन्द्र कर्मा ने आदिवासियों के कुल्हाड़ी लेकर घूमने पर ही प्रतिबन्ध लगवाने की सिफारिश की थी। लेकिन उससे भी बात नहीं बनी। अभी भी पुलिस के आला अधिकारी अपने कर्मचारियों को हर दिन निर्देश देते हैं कि हाट बाजारों में पूरी सावधानी बरती जाए। इसके बावजूद भी पीएलजीए के योद्धाओं ने हाल में चलाए गए टीसीओसी के दौरान ऐसे कई हमलों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। उन्होंने यह साबित किया कि जनता पर निर्भर करते हुए दुश्मन की कमजोर कड़ियों को सही रूप से पहचानेंगे तो उस पर कहीं भी हमला किया जा सकता है। ऐसी कुछ कार्रवाइयों का विवरण इस प्रकार है -

- 30 मई 2008 को दंतेवाड़ा जिले के कटेकल्याण साप्ताहिक बाजार में पीएलजीए के लाल योद्धाओं ने शानदार हमला कर दो अर्द्ध सैनिक बलों के दो जवानों को मार डाला। एक एसएलआर और एक इंसास की रायफलें छीन लीं।
- 22 जून 2008 को गादिरास के हाट बाजार में हमला कर दो मिजो जवानों को घायल किया गया जिनमें से बाद में एक की मौत हुई। इस हमले के जरिए एक एके-47 और एक एसएलआर पीएलजीए के हाथों में आ गईं। गौरतलब है कि मिजो जवान हाट बाजारों में दारू पीकर हुल्लड़ मचाने और महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार करने के लिए बदनाम है।
- 17 जुलाई 2008 को पूर्व बस्तर डिवीजन के मारडुम हाट बाजार में आए पुलिस दल पर पीएलजीए ने हमला कर एक पुलिस वाले को मार डाला और दूसरे को घायल किया। इसमें एक इंसास रायफल पीएलजीए के हाथ लगी।
- 30 अगस्त 2008 को किरन्दुल हाट बाजार में हमला कर एक एके-47 रायफल को छीन लाने की खबर है।

मानपुर क्षेत्र में बारूदी सुरंग विस्फोट एएसआई समेत 7 घायल

मानपुर इलाके में मानपुर-औंधी मुख्य मार्ग पर सीतागांव से लगे सेंडावाही पुल के पास घात लगाये बैठे पीएलजीए के छापामारों ने सर्चिंग पर निकली पुलिस पार्टी पर 27 मार्च 2008 की सुबह करीब 11 बजे हमला कर दिया। पुलिस की जीप को बारूदी सुरंग से उड़ाने के बाद दोनों तरफ से फायरिंग हुई। बारूदी विस्फोट और घंटे भर चली गोलाबारी में ए.एस.आई. समेत सात पुलिसकर्मी घायल हो गये जो बम निरोधक दस्ते के थे। छापामारों को कोई नुकसान नहीं हुआ। गौरतलब है कि यह पुलिस पार्टी एक मुखबिर की सूचना पर बारूदी सुरंग को निष्क्रिय बनाने जा रही थी, जो खुद ही उसके विस्फोट की चपेट में आ गई।

जनता के कट्टर दुश्मन एसपीओ मंगतु व मोड्डा का सफाया

18 अप्रैल को पीएलजीए की एक्शन टीम ने जिला मुख्यालय नारायणपुर शहर के एक पारा में धावा बोलकर 2 एसपीओ का सफाया कर दिया। एक्शन टीम सुरक्षित अपने इलाके में पहुंच गई। जहां यह घटना हुई वहां से पुलिस लाईन 1 किलोमीटर से भी कम दूर पर है जहां सैकड़ों पुलिस व अर्द्ध सैनिक बल तैनात थे। गोलियों की आवाज सुनकर भी भाड़े के बल अपने ठिकानों से एक कदम भी नहीं बढ़ाया। मारे गए 2 एसपीओ में से एक माड़ डिविजन के गांव इरकभट्टी का मंगतु था और दूसरा था कुतुल गांव का मोड्डा। जब जनता ने यह समाचार सुना तो खुशियों की लहर दौड़ गई क्योंकि इन दोनों ने कई सालों से लोगों को खासा परेशान किया हुआ था।

छिंदपाल ऐम्बुश - 3 पुलिस मरे

8 मई 2008 को उत्तर बस्तर के बड़गांव थाने के अंतर्गत छिंदपाल गांव के नजदीक भानुप्रतापपुर-पखांजूर मुख्य सड़क पर पीएलजीए की एक टुकड़ी ने पुलिस बलों पर ऐम्बुश किया। इसमें पुलिस के एक पलटन कमाण्डर, एक एएसआई व एक आरक्षक मारे गए। बाकी बचे पुलिस वाले दुम दबाकर भाग गए। पीएलजीए के लाल योद्धाओ ने पुलिस वालों को बीच सड़क पर करीब दो किलोमीटर तक दौड़ाया। बाद में पुलिस वालों की जीप में आग लगाकर पुलिस से छीने गए हथियार लेकर पीएलजीए की टुकड़ी विजयी होकर लौटी। छीने हुए हथियारों में दो एके-47 रायफलें और एक दो इंची मोर्टार शामिल हैं।

सीआइएसएफ की जीप उड़ाई

8 जून 2008 को दुर्ग जिले के औद्योगिक नगरी दल्ली राजहरा से 7 किलोमीटर दूर स्थित अड़ेझरी के पास पीएलजीए ने सीआइएसएफ की एक जीप बारूदी सुरंग से उड़ाई। घटनास्थल दल्ली से महामाया खदानों में जाने वाली मुख्य सड़क पर है। ये जवान बारूद ले जाने वाली गाड़ी की सुरक्षा में जा रहे थे। गौरतलब है कि करीब ढाई महीने पहले इन्हीं खदानों से बारूद भी जब्त कर लिया गया था। विस्फोट से गाड़ी के परखचे उड़ गए जिससे 3 जवान मौके पर ही मारे गए और दो अन्य गंभीर रूप से घायल हुए। यहां से तीन इंसास रायफलें और एक पिस्तौल जब्त कर लिए गए।

किरंदुल क्वारी पर हमला

28 सितंबर 2007 को रात के 9 बजे सैकड़ों की संख्या जन मिलिशिया ने किरंदुल क्वारी पर धावा बोल दिया। यहां से जन

(शेष पृष्ठ 45 में...)

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

दिनांक : 27 जून 2008

रायपुर गिरफ्तारियों के लिए जिम्मेदार गद्दार सुमित को सजा-ए-मौत!

जनवरी 21 से लेकर करीब एक महीने तक रायपुर और उसके आसपास के शहरों में गिरफ्तारियों का एक व्यापक सिलसिला चला था। उस दौरान हमारी पार्टी के शहरी कामकाज से जुड़ी कार्यकर्ता कॉमरेड मालती और मीना के साथ-साथ करीब 15 लोगों को गिरफ्तार किया गया। इन दोनों कॉमरेडों को छोड़कर बाकी लोगों में कुछ हमारी पार्टी के आम समर्थक हैं, कुछ लोग तो बिल्कुल ही हमारी पार्टी से अनभिज्ञ हैं। इनमें से एक असित सेनगुप्ता को तो हमारी पार्टी का समर्थक भी नहीं कहा जा सकता है क्योंकि उनकी ताल्लुकात रेडफ्लैग ग्रुप से है। इन सबकी गिरफ्तारी से हमारी पार्टी के शहरी संगठन को कुछ हद तक और अस्थाई तौर पर धक्का लगा है। इन गिरफ्तारियों और हथियार समेत हमारे कुछ सामान पकड़े जाने के बाद पुलिस ने दावा ठोंका कि यह सब उसके खुफिया विभाग को मिली सफलता है।

दरअसल इन सभी घटनाओं का सम्बन्ध सुमित नामक व्यक्ति से है जो हमारी पार्टी के शहरी संगठन के जिम्मेवारों में से एक था। उसका असली नाम है नीलांजन सेनगुप्ता और वह पश्चिम बंगाल से आया हुआ था। 1998 से वह दण्डकारण्य में आकर विभिन्न जगहों पर विभिन्न स्तरों में 'सुमित' के नाम से काम करता रहा। एक जरूरी काम पर उसे 14 दिसम्बर 2007 को हमारी स्पेशल जोनल कमेटी ने 10 लाख रुपए देकर हमारे संघर्ष-क्षेत्र से रायपुर भेजा था। जब वह एक मोटर सायकल से जा रहा था तब एक मुखबिर की सूचना पर राजनांदगांव पुलिस ने मानपुर के आसपास उसे गिरफ्तार कर लिया। राजनांदगांव के एसपी विनोदकुमार चौबे और एएसपी मनीश शर्मा ने इससे पूछताछ की। जान से मारने और यातनाएं देने की धमकियों से डरकर पहले ही दिन से सुमित ने पुलिस को सब कुछ बताना शुरू किया। सबसे पहले रायपुर के फाफाडीह स्थित अपना किराए का मकान दिखाकर अपनी बीवी जमुना को गिरफ्तार करवाया। वह भी कमजोर पड़ गई और मानपुर क्षेत्र से करीब ढाई लाख रुपए और कुछ अन्य सामान पकड़वा दिए। लेकिन पुलिस ने बड़ी 'नादानगी' से यह बयान दिया था कि उक्त नक्सली महिला के पति के बारे में उसे कुछ भी पता नहीं चला। जब एक बार सुमित ने पुलिस के सामने घुटने टेक दिया तो धीरे-धीरे उसका पतन एक क्रांतिकारी से एक प्रति-क्रांतिकारी के रूप में होता गया। छत्तीसगढ़ के खुफिया विभाग के अधिकारी, आईबी के अधिकारी, आंध्र और पश्चिम बंगाल के एसआईबी वाले सुमित से पूछताछ करते रहे। इसने उनके सामने न सिर्फ पार्टी की सारी गोपनीय जानकारियां उगल दीं, बल्कि पुलिस का सहयोगी बन बैठा। जिस जनता के लिए अपनी जान तक न्यौछावर करने का संकल्प लेकर वह क्रांतिकारी बना था, अपनी जान बचाने के चक्कर में निजी स्वार्थ में इस हद तक फंस गया कि ठीक उसी जनता के हितों को खतरे में डालने को वह तैयार हो गया। जन सेवक से वह जन दुश्मन बन गया।

हमारी स्पेशल जोनल कमेटी ने सुमित की गिरफ्तारी के तुरन्त बाद प्रेस विज्ञप्ति जारी कर मांग की थी कि उसे अदालत में पेश किया जाए। लेकिन रायपुर आईजी ने ऐसी किसी गिरफ्तारी की बात से इनकार कर कहा था कि अगर कोई नक्सली गिरफ्तार हो जाता है तो हम क्यों छुपाएंगे, बल्कि हम उसे एक उपलब्धि के रूप में पेश करेंगे। लेकिन सच्चाई यह है कि 10 लाख रुपए चुपचाप डकारने के लालच में न तो उसकी आज तक गिरफ्तारी दिखाई गई, न ही उसे अदालत में पेश किया गया। जनता का वो सारा पैसा मुख्य रूप से राजनांदगांव के एसपी वी.के. चौबे, एएसपी मनीश शर्मा, एएसपी प्रखर पाण्डे और डोंगरगढ़ के टीआई पी.सी. राय ने बांट लिया और इसका एक बड़ा हिस्सा डीजीपी विश्वरंजन को भी दिया गया क्योंकि यह सारी साजिश उन्हीं की देखरेख में रची गई थी। उसे अदालत में पेश करने से इसकी पोल खुल सकती है, इसी डर से ऐसा करने से वो बचे रहे। चूंकि सुमित पुलिस का वफादार दलाल बन गया, इसलिए उसे रायपुर और भिलाई के अलग-अलग स्थानों में गाड़ियों में घुमा-घुमाकर हमारे शहरी संगठन से जुड़े कॉमरेडों को ढूंढने के प्रयास करते रहे। इसकी गद्दारी के कारण ही हमारी कॉमरेड्स मालती और मीना को पुलिस चिन्हित कर पाई और उनका लगातार पीछा किया। बाद में हमारे हथियार और अन्य सामान पकड़े गए। कुछ अन्य लोगों को भी गिरफ्तार कर उन्हें झूठे मामलों में फंसा दिया गया। हमारी महिला कॉमरेडों और अन्य लोगों को तरह-तरह की शारीरिक और मानसिक यातनाएं दी गईं। रायपुर, भिलाई और बिलासपुर में दहशत का वातावरण निर्मित हुआ था क्योंकि पुलिस कब, किसे और कहां पकड़कर 'नक्सली' या 'नक्सली समर्थक' घोषित करेगी किसी को नहीं पता था। छत्तीसगढ़ के कई बुद्धिजीवियों और पत्रकारों को भी हमारी पार्टी के साथ संबंध होने के मनगढ़ंत आरोप लगाकर ब्लैकमेल करने की कोशिशें चलीं जो अभी भी जारी हैं। यह सब एक घिनौनी साजिश है जिसका लक्ष्य क्रांतिकारी आंदोलन का जड़ से उन्मूलन

करना है। और सुमित इसका हिस्सा बना था, जिसने पुलिस अधिकारियों का पूरा-पूरा साथ दिया। यह उसकी गद्दारी ही थी जिसके कारण पुलिस को ये 'सफलताएं' हाथ लगीं।

इस गद्दारी के बदले सुमित को पुलिस ने पुरस्कृत भी किया। सुमित के असली नाम - नीलांजन सेनगुप्ता - से 18 मार्च 2008 को भारतीय स्टेट बैंक के राजनांदगांव मेन ब्रैंच में एक खाता खोला गया। उसका अकाउन्ट नंबर 30350323075 है। इसके अलावा एयरटेल का एक सिम - नम्बर 9981594025 - भी दिया गया ताकि वह पुलिस के आला अफसरों के साथ हमेशा संपर्क में रह सके। बैंक में उसके नाम से 7 हजार रुपए जमा कर दिए गए और 15 हजार रुपए की नगद राशि भी उसे दे दी गई। राजनांदगांव के वार्ड नंबर 15 के फर्जी पते पर नीलांजन सेनगुप्ता के नाम से एक ड्राइविंग लाइसेंस भी बनवाकर दिया गया। और इस गद्दारी के बाद पुलिस अधिकारियों ने उसे दोबारा हमारी पार्टी में घुसाने की कोशिश की ताकि वह हम पर भीतरघात कर सके। लेकिन पुलिस की तमाम चालों का पहले ही पता लगाकर हमारी पीएलजीए ने उसे गिरफ्तार किया। पीएलजीए के हमारे कमाण्डरों ने उससे कड़ी पूछताछ की जिसमें उसने अपने सारे गुनाहों को कबूल किया। इसका पूरा वीडियो रिकार्डिंग भी किया गया। इस गद्दार को हमारी पार्टी ने मौत की सजा देने का फैसला किया। हमारी पीएलजीए ने उसे यह सजा दे दी।

दरअसल पुलिस को रायपुर शहर में कथित 'सफलताएं' गद्दार सुमित के भीतरघात से ही मिलीं। कॉमरेड्स मीना और मालती समेत तमाम लोगों को गिरफ्तार करने और उन्हें यातनाएं देने में किन-किन पुलिस अधिकारियों का हाथ है, इसकी एक-एक जानकारी हमें है। और हम उनकी तमाम प्रति-क्रांतिकारी गतिविधियों पर लगातार नजर रखे हुए हैं। रमन सरकार हमारे कॉमरेडों के मुकदमे फास्ट ट्रैक कोर्टों में चलवाकर कुछ पुलिसिया दलालों से झूठी गवाही दिलवाकर जल्दी से सजाएं दिलवाने की कोशिशें कर रही है। यहां तक कि हमारे कॉमरेडों को वकील तक नियुक्त करने का मौका नहीं दिया जा रहा है। एक शब्द में कहा जाए तो रमन सरकार तमाम फासीवादी तरीके अपना रही है जिससे कि लोकतांत्रिक, प्रगतिशील और क्रांतिकारी ताकतों का गला दबाया जा सके। पीयूसीएल के नेता व मानवाधिकार कार्यकर्ता डॉक्टर विनायक सेन को जमानत देने से भी इनकार करना अपने आप इस प्रदेश में मानवाधिकारों की दुर्दशा को बयां कर देता है।

रायपुर-भिलाई में हुई गिरफ्तारियों से हमें अस्थाई तौर पर कुछ नुकसान भले ही हुआ हो, लेकिन क्रांतिकारी आंदोलन में यह अस्वाभाविक नहीं है। सुमित जैसे व्यक्तियों की गद्दारी भी हमारे आंदोलन के इतिहास में नई बात नहीं है। जनता और जनवादी ताकतों की मदद से तथा उनकी चौकस निगाहों की बदौलत हम ऐसे नुकसानों से जरूर उबर सकेंगे। भविष्य में ऐसे नुकसानों की पुनरावृत्ति को भी रोकने में हम सक्षम हो सकेंगे। हम शहरों में रहने वाले मजदूरों, कर्मचारियों, छात्र-बुद्धिजीवियों, महिलाओं और तमाम अन्य गरीब तबकों, जोकि केन्द्र-राज्य सरकारों द्वारा अपनाई जा रही उदारीकरण, निजीकरण और साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण की नीतियों से बुरी तरह परेशान हैं, के बीच कामकाज को तेज करने के प्रयास जरूर करेंगे।

कोसा
(सचिव)
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी
भाकपा (माओवादी)

गुड्सा उसेण्डी
(प्रवक्ता)
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी
भाकपा (माओवादी)

(... पृष्ठ 43 का शेष)

मिलिशिया ने 12 क्विंटल अमोनियम नाइट्रेट, फ्यूजवायर, 300 नग ओडी (डिटोनेटर), गैन्ती, फावड़ों को जप्त कर लिया। फासीवादी सलवा जुडूम अभियान को हराने के लिए इस क्षेत्र में जारी प्रतिरोधी संघर्ष के लिए ये सारे विस्फोटक बेहद अहम हैं।

जनता का पलटवार

जनता ने पुलिस का सामान जब्त किया

जब जनता के घरों से खाने-पीने का सामान भी लूटा जा रहा है तो क्या करें? जनता जंगलों मे रहने पर मजबूर है वहां भी छापा मारकर पुलिस जंगल में रखे खाने के भंडारों को लूट रही हैं। भारी समस्या के बीच जनता ने भी 22 नवम्बर 2007 को दोरनापाल से जेगुरगोण्डा में पुलिस के लिये जा रहे सामान को जब्त कर लिया और जनता ने आपस में बांट लिया। भूमकाल मिलिशिया के साथ मिलकर इस कार्रवाई को अंजाम दिया गया।

जब्त सामान - शक्कर-20 क्विंटल, आटा-150 किलो, बेसन-25 किलो, चना-50 किलो, प्याज-2 क्विंटल, आलू-2 क्विंटल, फली तेल-15 लिटर, नारियल-2 क्विंटल और सिविल कपड़ा-17 जोड़ी

जिस जीप में ये सामान ले जाया जा रहा था, भूमकाल मिलिशिया ने उसे जला कर राख कर दिया।

जुडूम का सरगना जिल्लाल का अन्त

भैरमगढ़ क्षेत्र के जांगला गांव का सामंती मुखिया और सलवा जुडूम के सरदारों में से एक लेकामी जिल्लाल को 18 जुलाई 2008 को उसी के खेत में पीएलजीए ने मार डाला। वहां से थोड़ी ही दूरी पर गांव में पुलिस कैम्प और जुडूम का शिविर भी मौजूद हैं, फिर भी इसके बचाव में आने की हिम्मत किसी ने नहीं दिखाई। यह जिल्लाल भैरमगढ़ के एक और जालिम मुखिया विक्रम मण्डावी के साथ मिलकर इस क्षेत्र में जनता पर किए गए हमलों में शुरू से शामिल था। कई लोगों की हत्याओं, कई महिलाओं पर किए गए अत्याचारों और लूटपाट-आगजनी की दर्जनों घटनाओं से इसका प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बन्ध था। खासतौर पर कोत्रापाल, पोटेनार आदि गांवों पर बरपाई कई कहर के लिए यही जिम्मेदार था। इसके सफाये से यह बात फिर एक बार साबित हो गई कि जनता पर जुल्मोसितम ढाने वालों को जनता कभी माफ नहीं करेगी। ★

(...अंतिम पृष्ठ का शेष)

ऐतिहासिक सम्मेलन के प्रभाव से पूरे जिले में जमींदारों की जमीनों पर कब्जा करने का आंदोलन जोर शोर से शुरू हुआ था। इसका प्रभाव मीदिकोंडा गांव पर भी पड़ा था। उस दौरान ही मीदिकोंडा गांव में रैडिकल युवा संगठन (आरवाइएल) का निर्माण हुआ था जो सामंतवाद-विरोधी संघर्षों में मजबूती से उठ खड़ा हुआ। 1994 में कॉमरेड मधु आरवाइएल में शामिल हुए और जमींदारों के खिलाफ चलाए गए संघर्षों में दृढ़ता से खड़े हो गए। एक समर्पित और जुझारू नौजवान नेता के रूप में गांव में उनकी छवि बन गई। कट्टर जमींदारों को जन अदालतों में घसीट लाने और जनता के फैसले पर उनकी पिटाई करने में वह आगे रहा करते थे।

1994 में गांव के संगठन पर दमन बढ़ा था। गांव के जन विरोधी सामंतों की मदद से पुलिस वालों ने संघ के 92 कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर गंभीर यातनाएं देने के बाद झूठे मामले बनाकर जेल भेजा था। कॉमरेड मधु गिरफ्तारी से बचकर भूमिगत तरीके से घूमते हुए बची हुई ताकतों से संघ के पुनरनिर्माण की कोशिश की।

मीदिकोंडा गांव में आने वाले गुरिल्ला दस्ते की मदद करने में कॉमरेड मधु ही आगे रहते थे। उनके लिए पुलिस सरगर्मी से तलाश रही थी। एक तरफ बढ़ता दमन और दूसरी तरफ राजनीतिक रूप से उनकी बढ़ी हुई चेतना, दोनों ही पहलुओं ने उन्हें पेशेवर क्रांतिकारी बना दिया। गांव के मैले कपड़े धोने वाले अंजन्ना ने देश को लगे शोषण नाम के मैले को साफ करने निकल पड़े। 1995 में उन्हें 10 गांवों की जिम्मेदारी दी गई जहां उन्हें आरवाइएल को संगठित करना था। 1996 में उन्हें पालाकुर्ती एरिया आरवाइएल का अध्यक्ष बनाया गया था। 1997 में वह महादेवपुर गुरिल्ला दस्ते में सदस्य बन गए। 1998 में सुरक्षा की जिम्मेदारियों के तहत वह उत्तर तेलंगाना की पलटन-1 के साथ दण्डकारण्य आए थे। अनजान इलाका, अनजान बोली, सब नया-नया होने के बावजूद उन्होंने डीके के कॉमरेडों से दोस्ती की और यहां के संघर्षों से प्रेरणा हासिल की। अगर पार्टी उन्हें यहां भेजती है तो वह खुशी से यहां आकर काम करेंगे, अपने दिल की यह बात उन्होंने कई लोगों को बता दी। उन दिनों उत्तर तेलंगाना के कई कॉमरेड डीके जाकर काम करने के लिए तैयार नहीं होते थे। कुछ कॉमरेडों को चुनकर भेजने पर भी उनमें से कई लोग वापस चले जाते थे। ऐसे समय में कॉमरेड मधु ने खुद ही चाहकर जनवरी 1999 में डीके में कदम रखा। छह महीनों तक एक गुरिल्ला दस्ते में काम करने के बाद उन्हें पलटन-2 का सदस्य बनाया गया। तब से लेकर तड़िकेल में शहादत को प्राप्त करते तक उन्होंने फौजी मोर्चे में ही काम किया।

फौजी मोर्चे में कॉमरेड मधु का योगदान

फरवरी 2000 में माड़ डिवीजन के बाकुलवाही में किए गए ऐम्बुश में कॉमरेड मधु ने भाग लिया। यह उनके लिए पहला अनुभव था। इस ऐम्बुश में 24 पुलिस वालों का सफाया कर बड़ी मात्रा में हथियार जब्त किए गए थे। सोमनपल्ली ऐम्बुश, चेरेपल्ली में बीआरओ पर किए गए ऐम्बुश, मुरदोंडा में बस में जा रहे पुलिस वालों पर किए गए ऐम्बुश और मोदकपाल में राजेन्द्र पामभोई के काफिले पर किए गए ऐम्बुश आदि कई ऐम्बुशों में उन्होंने सदस्य, उप कमाण्डर और कमाण्डर के रूप में भाग लिया और उनका नेतृत्व किया।

2001 में मोटू पुलिस थाने (उड़ीसा) पर किए गए हमले में कॉमरेड मधु असल्ट पार्टी का सदस्य था। लेकिन डर और झिझक के कारण दुश्मन पर चढ़ाई करने में वह आगे नहीं बढ़े थे। वह हमला विफल हुआ था। हमले की समीक्षा बैठक में उन्होंने ईमानदारी के साथ अपनी गलती को कबूल किया और आत्मालोचना की। उस हमले के बाद वह एक जबर्दस्त अंदरूनी संघर्ष के दौर से गुजरे थे। मन ही मन उन्होंने ठान ली कि आइंदा कभी भी दुश्मन के सामने डर का शिकार न हुआ जाए। उन्होंने मजबूत इरादों के साथ इस समस्या को दूर कर लिया जिसका सबूत आगे की कार्रवाइयों में उन्होंने पेश भी किया। गीदम रेड में, एनएमडीसी के बारूद डिपो पर किए गए हमले में, मुरकीनार हमले में जो कि दिन के उजाले में ही सफल बनाया गया, ऐतिहासिक रानिबोदली रेड में उन्होंने न सिर्फ बेझिझक और बेखौफ होकर भाग लिया, बल्कि उन्हें सफल बनाने में अहम रोल अदा किया। एनएमडीसी गोदाम और मुरकिनार हमले में पहले असल्ट टीमों में रहकर पहली गोली चलाने वाले कॉमरेड मधु ही थे।

टोह लेने के काम में भी कॉमरेड मधु ने अच्छा-खासा अनुभव हासिल किया। एक-दो बार टार्गेट के सामने से गुजरने से छोटी-छोटी चीजों पर भी सही नजर रखा करते थे। जो-जो चीजें उनकी नजर में आती थीं उनकी दूरी, आकार आदि का सही-सही आकलन करते हुए नक्शा बनाकर बाकी कॉमरेडों को समझाया करते थे। इस तरह किसी हमले की योजना तैयार करने में वह अहम भूमिका निभाते थे।

रानिबोदली रेड में रेडिंग पार्टी के उप कमाण्डर रहे कॉमरेड मधु ने असल्ट टीमों के साथ कैम्प के अंदर घुसकर बलों का नजदीक से नेतृत्व करते हुए 55 भाड़े के हत्यारों का सफाया करने में यादगार भूमिका निभाई। नवम्बर 2007 में पामुलवाय गांव के पास दो बार किए गए ऐम्बुशों को उन्होंने सफल बनाया जिनका उन्होंने कमाण्डर के रूप में नेतृत्व किया। अपनी 11 साल की फौजी जिंदगी में उन्होंने तकरीबन 30 कार्रवाइयों में भाग लिया।

फौजी मामलों में कॉमरेड मधु की दक्षता और उनकी बढ़ती राजनीतिक चेतना को देखते हुए पार्टी ने जून 2001 में उन्हें सेक्शन कमाण्डर की जिम्मेदारी दी। 2002 के मध्य में उन्हें पलटन-2 का उप कमाण्डर बनाया गया। 2005 में जब कम्पनी-2 का निर्माण हुआ तब उन्हें पलटन कमाण्डर और कम्पनी पार्टी कमेटी सदस्य के रूप में शामिल किया गया। 2006 के आखिर में जब कम्पनी-3 का निर्माण हुआ तब कॉमरेड मधु ने कम्पनी-2 के कमाण्डर की जिम्मेदारी ली।

कॉमरेड मधु से हमें क्या सीखना चाहिए?

गरीबी के चलते उन्हें घर पर पढ़ाई का नसीब नहीं हो सका। लेकिन पार्टी में आने के बाद दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ उन्होंने पढ़ना-लिखना सीख लिया। पार्टी के साहित्य को पढ़कर समझने

लायक खुद को विकसित किया। थोड़ा भी वक्त मिलता है तो वह राजनीतिक व सैद्धांतिक अध्ययन पर ध्यान दिया करते थे। हिन्दी भाषा पर भी ध्यान देकर सीखना शुरू किया। दैनिक अखबार आदि पढ़ा करते थे और सदस्यों को देवनागरी लिपि में (कोया भाषा में) चिट्ठियां लिखा करते थे। उनकी खासियत यह थी कि वह जिस पहलू में खुद को कमजोर महसूस करते थे उसे पार करने के लिए लगातार प्रयास किया करते थे। अंग्रेजी के अक्षरों को भी सीखकर दवाइयों के नाम पढ़ना सीख लिया और इस तरह वह बीमार कॉमरेडों को दवाइयां दिया करते थे।

गलतियों को स्वीकारने में ईमानदार रहा करते थे। अपनी कमजोरियों को पहचान उन्हें सुधारने के निरंतर प्रयास करते थे। मोटू रेड में दुश्मन के नजदीक तक आगे बढ़ने से कतराने वाले कॉमरेड मधु ने बाद की कार्रवाइयों में जितने साहस का परिचय किया और दुश्मन का सफाया करने में जो शूरता दिखाई वह अपने आप में इस बात का सबूत है। साथियों के अंदर और पार्टी में दिखाई देने वाली गलतियों की आलोचना करने में भी वह उतनी ही बेबाकी दिखाया करते थे।

दण्डकारण्य में अपने 10 सालों के क्रांतिकारी जीवन में उन्होंने आदिवासी जनता और साथी काडरों को असीम स्नेह बांटा। उनसे घुल-मिल जाकर जनता और काडरों का विश्वास हासिल किया। वर्ग के हिसाब से खुद बेहद गरीबी से और बेहद मुश्किल हालात से आने वाले होने के कारण उत्पीड़ित जनता का आदर करना, उनके हर दुख-दर्द से संवेदना रखना, आखिर में उसी जनता की सेवा में अपने प्राणों को न्यौछावर करना हम उनमें देख सकते हैं।

वह सभी से दोस्ताना ढंग से पेश आते थे। सभी से हंसते-मुस्कराते बतियाते थे। चूंकि बचपन से ही उन्होंने जमींदारों के जुल्म व अत्याचारों को प्रत्यक्ष देखा था इसलिए लुटेरे वर्गों के प्रति उनके दिल में नफरत भी कूट-कूटकर भरी रहती थी।

उत्पीड़ित जनता पर जुल्म और हिंसा करने वाले लुटेरों और उनके वफादार कुत्ते पुलिस वालों के प्रति उनमें हमेशा गुस्सा रहता था। पिछले 3 सालों से जारी सलवा जुडूम के दौरान कॉमरेड मधु बीजापुर जिले में ही रहे जो इसका सर्वाधिक शिकार था। पुलिस और जुडूम के गुण्डों द्वारा जलाए गए सैकड़ों घर और अन्य सम्पदाएं, बलात्कार का शिकार हुई महिलाएं, जिंदा जलाए गए लोगों की लाशें, टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए लोग, उनके परिजनों की हृदय विदारक रूदन, लोगों के दुख-तकलीफों को कॉमरेड मधु ने प्रत्यक्ष देखा। उनके आंसुओं को पोछकर उन्हें दिल से लगा लिया। दुश्मन पर बदला लेने के लिए जनता को तैयार किया। जुडूम के जुल्मों का अंत करने के लिए की गई तमाम कार्रवाइयों में उन्होंने न सिर्फ सक्रिय रूप से भाग लिया, बल्कि दुश्मन के श्वेत आतंक के जवाब में लाल आतंक पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। खासकर रानिबोदली रेड में 55 पुलिसिया गुण्डों का सफाया कर जुडूमी सरगनाओं के दिल में लाल आतंक पैदा करने के पीछे कारण यही था कि कॉमरेड मधु के साथ-साथ सभी कॉमरेडों की आंखों में जलाकर राख बनाए गए घरों के ही दृश्य थे और कानों में लोगों की रूदन ही रूदन गूंजती थी।

अनपढ़ होकर भी कॉमरेड मधु ने न सिर्फ पढ़ना-लिखना सीखा बल्कि कम्पनी में डॉक्टर की भूमिका भी निभाई। कम्युनिकेशन के उपकरण चलाना भी सीख कर साथियों को समझाया करते थे। अनुशासन का पालन करने और सादा-सीधा जीवन बिताने में भी कॉमरेड मधु का आचरण आदर्शपूर्ण हुआ करता था। शादी के मामले में भी कॉमरेड मधु ने कभी जल्दबाजी से काम नहीं किया। उनका विचार यह था कि पहले वह खुद राजनीतिक, फौजी और सांगठनिक तौर पर विकसित हो। क्रांतिकारी आंदोलन में एक हद तक विकसित होने के बाद ही उन्होंने एक कॉमरेड को पसन्द कर पार्टी की इजाजत से और पार्टी के तौर-तरीकों के अनुसार शादी की। क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल होने के बाद कुछ ही समय में शादी से जुड़ी समस्याओं में उलझने वाले कॉमरेडों के लिए कॉमरेड मधु के वैवाहिक जीवन से सीखना चाहिए।

इस प्रकार कई अच्छे गुणों के साथ क्रांतिकारी संघर्ष में तपकर फौलाद बन रहे कॉमरेड मधु की शहादत होना पीएलजीए के लिए बड़ा नुकसान है। कॉमरेड मधु की जीवनी से हम यह देख सकते हैं कि किस तरह वर्ग संघर्ष ने एक दबे-कुचले तबके से आए एक मासूम शख़्स को साहसिक गुरिल्ला कम्पनी कमाण्डर बनाया। आइए, तड़िकेल में शहीदों के द्वारा बहाए खून से हजारों हजार वीर योद्धा पैदा करने का संकल्प लेंगे।

मद्देड़ की माटी का लाल कॉमरेड बदरू

बदरू और आनंद के नाम से जनता को सुपरिचित इस वीर का असली नाम, यानी मां-बाप के द्वारा दिया गया नाम कुरसम सीताराम था। बीजापुर जिले के भूपालपटनम तहसील के कोत्तापल्ली गांव के गरीब परिवार की पहली संतान था कॉमरेड बदरू। उनकी एक छोटी बहन है।

घरेलू हालात - दुख-तकलीफें

कॉमरेड बदरू का बचपन छूटा ही नहीं था, उसके मां-बाप का देहांत हो गया था। घर की जिम्मेदारियां बदरू के कंधों पर आ गईं। मेहनत किये बगैर पेट में दाना नहीं पहुंच सकता था, इसलिये मद्देड़ के मुखियाओं-साहूकारों के पास चाकरी करना पड़ा। मवेशियों को चराने का काम मिला दिन भर जंगलों में मवेशियों को चराने में भटकना पड़ता था। बावजूद पेट भर खाना भी नसीब नहीं होता था। बरसात में खेतों में बुआई होती है, इसलिये मवेशियों के चरने के लिये मैदान नहीं बचता। अतः बदरू मवेशियों को लेकर कर्रेगुट्टलू नामक घने जंगल में जाता था और महीनों वहीं गुजाराना पड़ता था। धान कटाई होते तक वहीं रहना पड़ता था। बचपन में तीज-त्योहार, खेलकूद का आनन्द नहीं उठा सका था कॉमरेड बदरू। इस बीच बहन की शादी के लायक उम्र हो गयी। बड़े भाई की जिम्मेदारी निभाते हुये बदरू ने बहन की शादी करायी। वह अकेला हो गया। तकलीफों के सिवाय उसका और कोई सहारा न था।

पार्टी का परिचय

मद्देड़ इलाके में पार्टी का कामकाज बहुत दिनों से जारी है। मुखियाओं-साहूकारों के खिलाफ संघर्षों के दौरान उन्हें झुकाकर उनकी जमीनों पर कब्जा करके भूमिहीनों में बांटा गया। जब तक शोषणमूलक व्यवस्था कायम रहेगी, गरीबों की जिंदगियों में बदलाव संभव नहीं, कहते हुये शोषक व्यवस्था को खत्म करने हथियारबंद संघर्ष को अपनाने की सीख देती आ रही है पार्टी। पार्टी के इस आव्हान से प्रभावित होकर कॉमरेड चापा लक्ष्मय्या, का. बाबू, का. राममूर्ति, का. मोहन (डीवीसीएम) का. कमला (सभी बंडारूपल्ली गांव के थे) आदि कई कॉमरेडों ने पार्टी में शामिल होकर जनता के लिये अपनी जानें कुरबान की हैं। पार्टी की लड़ाइयों एवं राजनीति से आकर्षित होकर का. बदरू पार्टी के नेतृत्व में कार्यरत जन संगठन में शामिल हुआ। का. बदरू चूंकि शोषित-पीड़ित परिवार से आया था, इसलिये वह पार्टी की ओर इस तरह आकर्षित हुआ जैसा लोहा चुंबक की ओर होता है। डीएकेएमएस में शामिल होकर वह पार्टी द्वारा सौंपे गये कार्यों को लगन के साथ पूरा करने लगा था।

छापामार दस्ते में योद्धा के रूप में

शोषकों के शोषण एवं जुल्म को संघर्ष के जरिये ही मिटाना संभव है, यह सोचकर कॉमरेड बदरू ने छापामार दस्ते में शामिल हाने का निर्णय लिया और पार्टी के सामने अपना प्रस्ताव रखा। कॉमरेड सीताराम की संघर्षशीलता एवं दृढ़ संकल्प को देखकर उसे 1997 में दस्ते में शामिल किया गया था। कुछ समय तक वह उसूर इलाके में संगठक के साथ काम किया। आनन्द के नाम पर वह इलाके की जनता के बीच लोकप्रिय हुआ था। नया होने के बावजूद उसकी सक्रियता एवं जुझारूपन को ध्यान में रखकर पार्टी ने उसे 1998 में पलटन-1 में तबादला किया था। 2001 तक दण्डकारण्य में सिर्फ दो ही पलटनें काम कर रही थीं। जन मुक्ति छापामार सेना की इकाइयों को बढ़ाने के पार्टी निर्णय के मुताबिक हर डिविजन में एक पलटन गठित करने का प्रस्ताव पारित हुआ था। इसके तहत उत्तर बस्तर में गठित पलटन-5 में उन्हें भेज दिया गया। कुछ समय तक वहां काम करने के बाद जुलाई 2004 में दण्डकारण्य में गठित पहली कंपनी में बदरू सेक्शन कमांडर बना दिया गया। अपनी सैनिक एवं राजनीतिक क्षमताओं को विकसित करते हुये का. बदरू कंपनी-1 की पार्टी कमेटी का सदस्य बन गया।

पार्टी द्वारा गठित पहली कंपनी में 2007 तक काम करने वाले बदरू ने कंपनी सदस्य एवं कंपनी पार्टी कमेटी सदस्य के रूप में पूरी पार्टी को एक नया अनुभव प्रदान किया था। 15 मार्च 2007 को आयोजित रानीबोदली साहिसक रेड को सफल बनाने में कंपनी-2 के नेतृत्वकारी कॉमरेडों में से कुछ ने अपनी बलि चढ़ाई। उस नुकसान की भरपाई के लिये एसजेडसी ने सितंबर 2007 में कॉमरेड बदरू का कंपनी-1 से कंपनी-2 में तबादला किया। कॉमरेड बदरू बिना किसी हिचकाचाहट के एसजेडसी के निर्णय पर अमल किया। कंपनी-2 में शामिल होने से लेकर ताड़केल एंबुश में अपनी शहादत तक के 5 महीनों में कॉमरेड बदरू ने तीन हमलों में भाग लिया।

कॉमरेड बदरू पीएलजीए द्वारा किये गये तारलागूडेम, गीदम, बांदे, कोरापुट, डौला रेडों में लिया था, जबकि छोटे, मंझोले व बड़े कुल मिलाकर 20 से ज्यादा एंबुशों में भाग लिया। एंबुशों में देवगांव, आलूर, आलेनार, बोदिली (डौला), मूंडपाल, झाराघाटी, कुदूर घाटी, पामुलवाया-2, ताडकेल आदि प्रमुख हैं।

देवगांव एंबुश में एसजेडसी सदस्य कॉमरेड सुखदेव की शहादत के बावजूद कॉमरेड बदरू दुश्मन का मुकाबला करते हुये हथियारों की जब्ती में शामिल हुआ था। झाराघाटी एबुंश में वह एक असाल्ट टीम का कमांडर था। फायर एंड मूवमेंट का बढ़िया इस्तेमाल करके दुश्मन पर एडवांस होकर उसका खात्मा करके हथियार जब्त करने वालों में बदरू भी एक था। कुदूर एंबुश में मोटर साइकलों पर आने वाले दुश्मन पर एकदम नजदीक जाकर पहला राउंड फायर करके बदरू ने ही एंबुश की शुरूआत की थी। फायर एंड मूवमेंट में एडवांस होकर दुश्मन का सफाया करके हथियार जब्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस तरह झाराघाटी एवं कुदूर घाटी में फायर एंड मूवमेंट ड्रिल्स का इस्तेमाल करके पीएलजीए को नये अनुभव से लैस करने वालों में बदरू भी एक था। कॉमरेड बदरू 20 एंबुशों, 5 रेडस में ही नहीं बल्कि कई जन दुश्मनों (मुखियाओं एवं जमींदारों) को दण्डित करने में एवं मुखबिरों-जासूसों को खत्म करने की घटनाओं में भी शामिल था।

जबसे बदरू पार्टी में शामिल हुआ था तब से वह फौजी मोर्चे में ही काम करता रहा। इसलिये उसने सैन्य कार्यों में काफी अनुभव हासिल किया। अपने छापामार जीवन में हमलों के दौरान जब एकाध बार आगे-पीछे हुआ था तब पार्टी की ओर से चिन्हित कराया गया था। उस वक्त उसने यह कहते हुये कि वह दुश्मन से घबरा कर नहीं बल्कि घटनास्थल की परिस्थितियों को समझने में गड़बड़ी के कारण आगे-पीछे हुआ था, बदरू ने पार्टी को हामी भरी थी कि वह अपने आगे के व्यवहार में इसे साबित कर दिखायेगा। कॉमरेड बदरू अपनी हामी पर खरा उतरा है और हमारे सामने उच्च आदर्श प्रस्तुत किया है।

कॉमरेड बदरू से हमें सीखना है...

छापामार दस्ते में भर्ती होने के साल भर के अंदर ही तारलागुडेम रेड में शामिल हुआ था। इस रेड में बड़े पैमाने पर नेतृत्वकारी कॉमरेडों की शहादत हुई थी। फिर भी कॉमरेड बदरू ने हिम्मत नहीं हारी। उसी तरह देवगांव एंबुश में एसजेडसी के सदस्य कॉमरेड सुखदेव की शहादत के बावजूद हथियारों की जब्ती में शामिल हुआ। डौला रेड के दौरान एसजेडसी कॉमरेड मंगतू सहित कई कॉमरेडों के शहीद होने एवं घायल हो जाने के बावजूद वह घबराया नहीं। आखिरी एंबुश जिसमें वह खुद भी शहीद हो गया, के दौरान भी कम्पनी कमांडर कॉमरेड मधु की शहादत के बावजूद दृढ़ संकल्प के साथ छापामार बलों का समन्वय करते हुये ज्यादा हथियार जब्त करने के उद्देश्य से दुश्मन का सामना करते हुये घायल होकर बाद में शहीद हो गया। कॉमरेड बदरू उपरोक्त सभी घटनाओं में नेतृत्वकारी कॉमरेडों के शहीद हो

जाने के बावजूद हिम्मत न हारते हुये अपनी जिम्मेदारी को दृढ़तापूर्वक निभाया। कठिन परिस्थितियों में, विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत न हारना, दृढ़तापूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को निभाना आखिरी सांस तक लड़ते रहना - यही बदरू से सीखना है।

पार्टी की जरूरतों, युद्ध के महत्व के मद्देनजर पार्टी के द्वारा जहां भी भेजा जाता है, बिना किसी हिचकिचाहट के वहां जाने के लिये तैयार रहना। अपने व्यवहार के द्वारा बदरू ने यह बात हमें सिखाई है।

कॉमरेड बदरू हमेशा दुश्मन के खिलाफ सैनिक कार्रवाइयों को अंजाम देने के बारे में ही सोचता था। विभिन्न इलाकों में घटित होने वाली कार्यवाहियों के बारे में सुनकर उत्साहित होता था और अपने साथी कॉमरेडों को प्रेरित करता था। रानीबोदली रेइड और उरपलमेट्टा एंबुश के बारे में जानकर बहुत खुश हुआ था। और दिलोदिमाग में उन्हीं हमलों के बारे में सोचता था और वैसे हमले करने के बारे में आतुर रहता था।

कॉमरेड बदरू का हाथ एक बढ़िया सिलाई मशीन जैसा था। पिट्ठू बैग, रेडियो एवं वाकीटाकी कव्हर्स, सही नाप के साथ सुन्दर ढंग से सीलता था। जिन्हें सिलाई नहीं आती थी, उन्हें सिखाता था। वह अच्छा नाचता था। ढोल की थाप सुनते ही थिरकने लगता था। वह स्वयं नाचता था और जिन्हें नहीं आता था उन्हें सिखाते हुये सामूहिक नाच-गाने में सभी को शामिल करता था।

जब कंपनी-1 से उसका तबादला हुआ था, उस अवसर पर कॉमरेड बदरू ने कहा था कि "जहां भी पार्टी भेजेगी (बिहार-झारखण्ड ही क्यों न हो) मैं जाने के लिये तैयार हूं। लेकिन मुझे मेन फोर्स में ही भेजा जाये। जिस दिन बटालियन का निर्माण होगा, उस दिन मुझे जरूर उसी में भेजा जाये। हां! यदि मुझ में कमजोरियां नजर आती हैं तो तुरंत मेरी नजर में लाइये। मुझे सुधारिये और विकसित कीजिये लेकिन बटालियन में काम करने का मुझे अवसर जरूर दिया जाये।" कंपनी-1 से विदाई लेते वक्त कही गयी उसकी बातें हमारे लिये सदा याद रखने वाली हैं।

दुखद बात यह है कि अपनी आकांक्षा पूरी होने के पहले ही कॉमरेड बदरू हम से हमेशा के लिये विदा ले गया। पीड़ित-शोषित जनता की मुक्ति के जिस महान लक्ष्य के लिये कॉमरेड बदरू सहित तड़िकेल अमर शहीदों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी, वह लक्ष्य और उनके सपने अधूरे हैं। आखिर तक और दृढ़ संकल्प से लड़कर छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में विकसित करने की दिशा में कॉमरेड बदरू ने जो हमले किये थे ऐसे हमलों में तेजी लाने की शपथ लेते हैं ताकि उनके सपनों को साकार बनाया जा सके।

क्रांतिकारी वीरयोद्धा ताति आयतू

आज दण्डकारण्य में जारी क्रांतिकारी संघर्ष देश की उत्पीड़ित जनता के लिए आशा का केन्द्र बना हुआ है। यहां के कई नव युवक-युवतियां इस संघर्ष की रीढ़ बनकर तेजी से उभर रहे हैं। अब तक खेतों में काम करने वाले और भोले-भाले लगने वाले किसान युवक-युवतियों को सलवा जुडूम-विरोधी प्रतिरोधी संघर्ष ने बहादुर योद्धाओं में तब्दील किया। वे अपनी वीरता और कुरबानियों से नए इतिहास की रचना कर रहे हैं। इसी नई पीढ़ी के प्रतिनिधि थे कॉमरेड आयतू। पश्चिम बस्तर का गंगलूर क्षेत्र ऐसा क्षेत्र है जिसने अब तक कई वीर योद्धा पैदा किए हैं। उसी गंगलूर से मात्र दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित ग्राम परालनार के ताति परिवार में करीब 21 साल पहले कॉमरेड आयतू का जन्म हुआ था।

बचपन से ही क्रांतिकारी संघर्षों से प्रेरित कॉमरेड आयतू खेतों में काम करते और बैल-बकरी चराते क्रांतिकारी गीतों को ही गुनगुनाया करते थे। सहज रूप से वह क्रांतिकारी बाल संगठन का सदस्य बने थे। आज दण्डकारण्य में जारी क्रांतिकारी जनयुद्ध के बीचोबीच पल-बढ़ रहे बच्चों के खेल भी बदल गए हैं। बच्चे अब ऐम्बुश का खेल खेलते हैं। ऐसे खेल खेलते-खेलते बड़े हुए आयतू हमेशा जल्दी बड़ा होने और गुरिल्ला बनने के सपने देखा करते थे। जवान होते ही उसे गांव की 'कोया भूमकाल मिलिशिया' यूनिट में शामिल किया गया। घर का बड़ा बेटा कॉमरेड आयतू अपने भाई-बहनों को भी क्रांतिकारी आंदोलन में भागीदार बनने को प्रोत्साहित किया करते थे।

परालनार गांव में 250 से ज्यादा परिवार रहते हैं (या थे, क्योंकि सलवा जुडूम द्वारा मचाई गई तबाही के बाद यह बताना मुश्किल है कि फिलहाल वास्तव में वहां कितने परिवार रह गए हैं और कितने घर मौजूद हैं)। परालनार में कोया आदिवासियों के साथ-साथ हल्बी, मराठी, आदि भाषाएं बोलने वाले अन्य आदिवासी और गैर-आदिवासी मिलजुलकर रहते थे। इस गांव की जनता ने पार्टी के नेतृत्व में चलाए गए कई राजनीतिक, आर्थिक संघर्षों में भाग लिया। सामाजिक और सांस्कृतिक तौर पर उठने वाले कई आपसी विवादों को मिल-बैठकर सुलझा लिया। तेंदुपत्ता संघर्ष, सरपंच-सचिवों के भ्रष्ट आचरण के खिलाफ संघर्ष, जमीन कब्जा संघर्ष, आदि में जनता की खासी भागीदारी रहती थी। इस गांव में ईसाई धर्म ने घुसपैठ की जो कि साम्राज्यवादी संस्कृति का वाहक है। कॉमरेड आयतू के परिवार जनों ने भी ईसाई धर्म को अपनाया था। लेकिन गांव के क्रांतिकारी जन संगठनों ने इसके खिलाफ आवाज उठाई। कॉमरेड आयतू ने भी समझ लिया कि धर्म एक नशा क्यों है। वह गांव के क्रांतिकारी खेमे में मजबूती से डटे रहे और दिसम्बर 2003 में वह पीएलजीए में भर्ती हो गए। तब से गंगलूर एलजीएस में सदस्य के रूप में उनकी गुरिल्ला जिन्दगी शुरू हुई।

2004 में गंगलूर रोड पर किए गए ऐम्बुश में कॉमरेड आयतू ने भाग लिया। मई 2005 में ग्राम कर्रेमरका के निकट राष्ट्रीय राजमार्ग पर किए गए ऐम्बुश में भी भाग लिया जिसमें सीआरपीएफ के छह जवान मारे गए थे। जबसे सलवा जुडूम शुरू हुआ भैरमगढ़, गंगलूर और बीजापुर इलाकों में जनता का जीवन अस्तव्यस्त हो गया। सामूहिक हत्या, बलात्कार और गांव जलाने की घटनाओं का भीभत्सपूर्ण दौर चल पड़ा। ऐसे कठिन समय में कॉमरेड आयतू एक सुदृढ़ गुरिल्ला योद्धा के रूप में मजबूती से खड़े हो गए। पुलिस और अर्द्ध-सैनिक बलों के साथ हुई कई

लड़ाइयों में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया। कोतरापाल, केशकुतुल, आदि गांवों पर सलवा जुडूम के गुण्डों और पुलिस बलों द्वारा किए गए पाशविक हमलों का मुकाबला करने में वह अग्रणी रहे। बोदेली, तुर्रेम, पिण्डुम और हिर्रम गांवों में सलवा जुडूम के सरगनाओं और गुण्डों को सजा देने और एलजीएस में सदस्य के रूप में रहकर सक्रिय भाग लिया।

सलवा जुडूम के गुण्डों और पुलिस बलों ने उनका घर जलाया, गांव जलाया, तमाम जनता के जीवन को ही अस्तव्यस्त बना डाला। इसके बावजूद भी कॉमरेड आयतू क्रांति के पथ से टस से मस नहीं हुए। उन्होंने अपनी राजनीतिक चेतना बढ़ाने की हरदम कोशिश की। 2006 में एलजीएस से उन्हें विशेष दस्ते के कमाण्डर के रूप में स्थानांतरित किया गया। हालांकि उस समय वो कुछ हिचकिचाते रहे लेकिन नेतृत्वकारी कॉमरेडों द्वारा दिए गए प्रोत्साहन से वो जिम्मेदारी लेने के लिए आगे आए थे।

आग उगलने वाले जुडूमी हमलों के बीचोबीच नेतृत्वकारी कॉमरेडों की रक्षा करने और सौंपी गई हर जिम्मेदारी को पूरा करने में उन्होंने पूरी लगन के साथ काम किया। घर में पढ़ने के अवसर से वंचित कॉमरेड आयतू पार्टी में भर्ती होने के बाद बहुत जल्द ही पढ़ना-लिखना सीख लिया। 'प्रभात', 'पड़ियोरा पोल्लो', 'मिडंगूर', आदि पत्रिकाओं को खुद पढ़ने के साथ-साथ साथियों को पढ़कर सुनाया भी करते थे।

मार्च 2007 में रानिबोदली पुलिस चौकी पर किए गए ऐतिहासिक हमले में उन्होंने अपनी वीरता का बढ़िया प्रदर्शन किया। उस हमले में उन्हें जो लक्ष्य दिया गया था उसे तेजी से पूरा किया। फौजी कार्रवाइयों में उनकी सक्रियता और दुश्मन से बेखौफ होकर जूझने के उनके लड़ाकू तेवर को देख पार्टी ने उन्हें कम्पनी-2 में स्थानांतरित करते हुए पीपीसी सदस्य के रूप में तरक्की भी दी। कम्पनी-2 में उन्होंने सेक्शन कमाण्डर के रूप में कई हमलों में वीरता के साथ भाग लिया। अक्टूबर 2007 में पामुलवाय के पास किए गए ऐम्बुशों में उन्होंने भाग लिया और दुश्मन के हथियार छीनने में पहलकदमी दिखाई।

18 फरवरी 2008 को मिरतुल इलाके के तड़िकेल के पास कम्पनी-2 द्वारा की गई शौर्यपूर्ण हमले में उन्होंने अपने सेक्शन का कुशल नेतृत्व करते हुए लड़ाई का जोरदार नमूना पेश किया। अपने पलटन कमाण्डर का आदेश मिलते ही दुश्मन पर ताबड़तोड़ गोलीबारी करते हुए तेजी से दौड़ पड़े। दुश्मन द्वारा फेंके गए हथगोले से वह बुरी तरह घायल होकर भी लड़ाई के मोर्चे से पीछे नहीं हटे। खुद के घायल होने की सूचना कमाण्डर को देकर मरे हुए दुश्मनों के छह हथियार छीनने के काम को जारी रखा। हमला शुरू होने के बाद 5-10 मिनटों के अंदर ही कम्पनी कमाण्डर कॉमरेड मधु शहीद हुए थे, इसके बावजूद भी विचलित न होकर पीएलजीए के हमारे इन बहादुर लाल योद्धाओं ने ऐम्बुश को सफल बनाने के लिए अपनी जान लगा दी। जनता की मुक्ति की खातिर अपना खून बहाया। आइए, बस्तर माटी के इस वीर सपूत के उन्नत आदर्शों को दिल में संजोकर रखें और उनके नक्शेकदम पर आगे बढ़ने का प्रण करें।

bjekxk.Mk dk ohj lir dkejM un

पश्चिम बस्तर जिले में पुलिसिया दमन का मुकाबला कर संघर्ष के रास्ते में मजबूती से खड़े होने वाले अनेक गांवों में से इरमागोण्डा एक है जोकि गंगलूर इलाके में स्थित है। सलवा जुडूम को शुरू हुए तीन साल बीत जाने के बावजूद, इन तीन सालों में 'सब कुछ तबाह करो' की सरकारी नीति के तहत व्यापक आतंक मचाए जाने के बावजूद इस गांव ने अभी तक अपने घुटने नहीं टेके। इस गांव के बहादुर लोग जंगल में शरण लेते हुए हिम्मत के साथ गुरिल्ला युद्ध को जारी रखते हुए जनयुद्ध के लिए अपने कई बेटे दिए। इसी गांव में मडकाम कोम्मे और लिंगाल दम्पत्ति की पहली संतान के रूप में कॉमरेड नंदू का जन्म हुआ था। कॉमरेड नंदू के बाद एक भाई और एक बहन हैं। गरीब आदिवासी किसान परिवार में जन्मे कॉमरेड नंदू को पढ़ाई नसीब नहीं हो सकी। चूंकि परिवार का बड़ा बेटा था इसलिए जैसे ही वह बड़े हुए मां-बाप ने उन्हें खेती के काम में लगा दिया।

बचपन से ही कॉमरेड नंदू नाच-गीतों से खासा लगाव रखा करते थे। इसे देखकर गांव के संघ नेतृत्व ने उन्हें सीएनएम में सदस्य बनाया। सीएनएम का प्रशिक्षण हासिल कर गांव में कई बार सांस्कृतिक कार्यक्रमों में शिरकत की। प्रचार दलों के साथ जाकर आसपास के गांवों में क्रांति का प्रचार किया। 16 साल के होते-होते उन्होंने पार्टी के सामने प्रस्ताव रखा कि वह पीएलजीए में भर्ती होना चाहता है। बचपन से ही कॉमरेड नंदू की दिलचस्पियों और पार्टी के प्रति उनकी वफादारी आदि से कायल स्थानीय पार्टी नेतृत्व ने उन्हें पीएलजीए में शामिल करवाने की सिफारिश की। इस तरह वह 2005 में पीएलजीए का सदस्य बन गए। भर्ती होने के कुछ ही महीनों बाद पश्चिम बस्तर डिवीजन पार्टी ने उन्हें कम्पनी-2 में भेजने का प्रस्ताव किया। नए-नए होने के बावजूद कॉमरेड नंदू ने इस फैसले का खुशी से स्वागत किया। देखने पर भोले-भाले लगने वाले और कम बोलने वाले कॉमरेड नंदू सीखने के मामले में गजब की इच्छा शक्ति रखते थे।

पार्टी में आने के बाद ही ककहरा सीखने वाले नंदू धीरे-धीरे पार्टी के पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने-समझने लायक बन गए। अपनी मातृभाषा में साथी कॉमरेडों को चिट्ठियां लिखने लायक बने थे। शुरू में थोड़ा भोलेभाले लगने वाले नंदू ने अनुभव हासिल करते-करते फौजी तौर पर अपनी क्षमताओं में काफी इजाफा किया। इसे पहचानकर पार्टी ने नवंबर 2007 में सेक्शन उप कमाण्डर बनाने का फैसला लिया तो उसके सेक्शन के सभी सदस्यों ने एकमत से स्वीकार किया। उप कमाण्डर बनने के 4 महीने बाद ही वह शहीद हुए। तड़िकेल शहीदों की स्मारक-सभा

में वक्ताओं ने उन्हें याद करते हुए कहा कि वह कुछ ही समय में सेक्शन कमाण्डर बन सकते थे।

कम्पनी-2 में जन सैनिक के रूप में कॉमरेड नंदू की क्रांतिकारी जिंदगी शुरू होने के बाद उन्होंने कुल 10 हमलों में भाग लिया। गंगलूर स्थित सलवा जुडूमी गुण्डों के डेरे पर किया गया हमला कॉमरेड नंदू के लिए पहला अनुभव था। उस हमले में 8 गुण्डों को मार गिराया गया था। सलवा जुडूम के नाम से जारी पाशविक दमनचक्र को देख कॉमरेड नंदू के दिल में नफरत की आग दहक उठती थी। जनता की तकलीफों को देख इसके लिए जिम्मेदार व्यवस्था और उसकी रखवाली करने वाले पुलिस बलों का मुकाबला करने के लिए वह हर दम तत्पर रहा करते थे।

गंगलूर यातना शिविर पर हमले के बाद विंजरम, एर्राबोर, बासागूडेम और पातुरपारा के तथाकथित राहत शिविरों पर किए गए प्रतिरोधी हमलों में कॉमरेड नंदू ने भाग लिया जिनमें जुडूम के कट्टर गुण्डों को चुन-चुनकर मार डाला गया था। बस्तर की सम्पदाओं का मनमाने ढंग से दोहन करते हुए यहां पर जारी क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलने के लिए दमन अभियानों में करोड़ों रुपए बहा रही कम्पनियों लुटेरी एस्सार और दलाल एनएमडीसी पर हमले कर उनकी सम्पत्तियों को तबाह करने में कॉमरेड नन्दू ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

15 मार्च 2007 को संपन्न ऐतिहासिक रानिबोदली रेड में कॉमरेड नन्दू ने स्टॉप ग्रुप के सदस्य के रूप में भाग लिया। नवम्बर और दिसम्बर में बीजापुर जिले के पामुलवाय के पास पुलिस बलों पर घात लगाकर किए गए दो अलग-अलग ऐम्बुशों में भी कॉमरेड नंदू ने भाग लिया जिसमें 11 हथियार छीन लिए गए।

18 फरवरी 2008 को मिरतुल के निकट गांवों पर कातिलाना हमले करने की मंशा से आ रहे सीआरपीएफ, डीएफ और एसपीओ के संयुक्त पुलिस दल पर पीएलजीए द्वारा किए गए हमले में कॉमरेड नंदू ने बहादुरी के साथ भाग लिया। कुंजामपारा में दाखिल हो रहे पुलिस बलों पर पीछे से जाकर नजदीक से हमला करने वाली टीम में कॉमरेड नंदू भी शामिल थे। पीएलजीए के इस शौर्यपूर्ण हमले में सीआरपीएफ के छह भाड़े के जवान मौके पर ही मारे गए थे। मारे गए पुलिस बलों से हथियार छीन लेने में भी कॉमरेड नंदू ने बढ़िया पहलकदमी दिखाई। पूरे मैदान में होने के बावजूद और बचे हुए पुलिस बलों की तरफ से जमकर गोलियां बरसाए जाने के बावजूद मरे हुए पुलिस वालों से हथियार छीन लेने के एक मात्र संकल्प से जान की परवाह न करते हुए वह दुश्मन की तरफ आगे बढ़े थे। साथी कॉमरेड उन्हें सावधान कर भी रहे थे कि मकानों के पास ओट लिए हुए दुश्मनों की तरफ से गोलियों की बरसात हो रही है। फिर भी कॉमरेड नंदू का आगे बढ़ना नहीं रुका और आखिरकार वह गोलियों का शिकार हो गए। कॉमरेड नंदू के धराशायी होने पर भी बाकी साथियों पर इसका कोई असर नहीं रहा, बल्कि उन्होंने दुगुने संकल्प के साथ मारे गए पुलिस वालों के सारे हथियार छीन लाए।

गरीब परिवार से आकर जनयुद्ध के दरमियान ही तेजी से उभर रहे इस नौजवान कॉमरेड की शहादत हमारी पीएलजीए के लिए एक नुकसान है। दुश्मन के प्रति बेअंत नफरत, लड़ाई के दौरान साहस के साथ आगे बढ़ने का दमखम, दुश्मन से हथियार छीनकर पीएलजीए को मजबूत बनाने की उनकी दृढ़ इच्छा, दिए गए कार्यभार की जान की बाजी लगाकर पूर्ति करने का फौलादी संकल्प, अनजाने विषयों को दूसरों से पूछकर सीखने में तत्परता, आदि उनके गुण हमारी पीएलजीए के हर लाल सैनिक के लिए उनुसरणीय होंगे। आइए, हम कॉमरेड नंदू समेत तड़िकेल के तमाम शहीद साथियों की कुरबानी से प्रेरणा लेने और वर्तमान जनयुद्ध को नई बुलंदियों तक पहुंचाने की कसम खाएं।

लाल चिनगारी
कॉमरेड वेको शांति

कॉमरेड वेको शांति का जन्म बीजापुर जिले के भैरमगढ़ ब्लॉक केन्द्र से 4 कि.मी. दूर स्थित ग्राम केशामोंडी में हुआ था। मध्यम किसान वेको मंगू की दूसरी संतान थी वह। घर पर शांति की तीन बहनें और एक भाई हैं। बीमारी के चलते बचपन में ही उनकी मां चल बसी थी। पिता ने ही बच्चों को बड़ा किया।

16 साल की उम्र में कॉमरेड शांति केएएमएस की सदस्या बन गई। इस तरह उन्होंने महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव, सामाजिक, पितृसत्तात्मक व सांस्कृतिक उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाना सीख लिया। केएएमएस द्वारा लिए गए कई प्रचार अभियानों में कॉमरेड शांति ने उत्साह के साथ भाग लिया।

2005 में सरकार प्रायोजित सलवा जुडूम का कहर टूट पड़ा। सैकड़ों गांवों को जलाकर राख कर देना, लोगों की क्रूरतापूर्वक हत्या, महिलाओं के साथ बलात्कार की अनगिनत घटनाएं, आदि देखकर शांति जैसे सैकड़ों नव युवक-युवतियों ने अपने परम्परागत हथियारों से 'पितूरी' (लड़ाई) के लिए तैयार हुए ताकि वे अपने गांवों और अपनी संपत्तियों को बचा सके। कॉमरेड शांति ने भी एक साल तक जन मिलिशिया में सक्रिय रूप से काम किया। बाद में, 2007 में कॉमरेड शांति को कम्पनी-2 में स्थानांतरित किया गया जहां उन्होंने बड़े ध्यान से पढ़ाई और लड़ाई के कौशल सीख लिए। कम्पनी में रहकर ही उन्होंने पार्टी सदस्यता हासिल की। वह खुद को दी गई हर जिम्मेदारी को अनुशासनबद्ध ढंग से निभाया करती थीं। दैनिक गुरिल्ला जीवन में बोझा उठाने में वह हर दम आगे रहा करती थीं।

शांति के पीएलजीए में भर्ती होने की खबर पाकर पुलिस, एसपीओ और जुडूम के गुण्डों ने केशामोंडी गांव पर हमला कर उनके पिता को यह पूछते हुए कि 'तेरी बेटी कहां गई? कहां भेजा? नक्सलवादियों के साथ भेजा? लाकर सरेंडर करवा दो' बुरी तरह से पीटा। उनका एक हाथ तोड़कर जबरन ले जाकर

भैरमगढ़ के तथाकथित राहत शिविर में रखा। कुछ समय शिविर में रहने के बाद उन्होंने अपनी बेटी को लाकर सरेंडर करवाने की शर्त पर घर जाने की इजाजत ली और घर वापस आए। लेकिन वह अच्छी तरह समझते थे कि उनकी बेटी जो काम करने गई उसमें कोई बुराई नहीं है। वह यह भी जानते थे कि जुडूम के गुण्डों ने ही उनकी जिन्दगियों को तबाह कर रख दिया। बीजापुर और दन्तेवाड़ा जिलों में ऐसे सैकड़ों माता-पिता हैं जो बूढ़ी उम्र में भी शिविरों में गुण्डों और पुलिस द्वारा दी जाने वाली बर्बर यातनाएं सह रहे हैं और अपने बेटों व बेटियों के जायज संघर्ष का दिल की गहराइयों से समर्थन कर रहे हैं।

एक तरफ जुडूम-पुलिस के हमले जारी हैं तो दूसरी तरफ जनता और पीएलजीए के प्रतिरोधी हमलों का शानदार सिलसिला भी जारी है। 18 फरवरी को पीएलजीए के लाल योद्धओं को यह खबर मिली थी कि तड़िकेल गांव में सीआरपीएफ और एसपीओ का संयुक्त हमला होने वाला है। इस हमले से वहां की जनता को बचाने की नीयत से ही पीएलजीए के कॉमरेडों ने जवाबी हमले की रणनीति तैयार की। उस ऐम्बुश में कॉमरेड शांति के हाथों में कोई हथियार नहीं था। इसके बावजूद भी, जैसे कि माओ ने बताया, 'दुश्मन के हथियार ही हमारे हथियार हैं' - इस समझ के साथ कमाण्डर के आदेश का पालन करते हुए हमले में हताहत हुए पुलिस वालों के हथियार छीनने के लिए वह बेझिझक आगे बढ़ रही थीं। बचे हुए दुश्मनों की तरफ से तेज गोलीबारी हो रही थी। लेकिन जनता की मुक्ति के लिए मर-मिटने हेतु सदा तत्पर रहने वाले इन जांबाज़ों को इसकी परवाह ही कहां थी? जब हथियार छीनकर वापस आ रही थी तब उन्हें दुश्मन की गोली लगी थी जिससे वह वहीं गिर पड़ीं।

18 साल की नौजवान उम्र में हमारी कॉमरेड शांति पूरी दुनिया में युद्धों को हमेशा के लिए खत्म कर स्थाई शांति कायम करने के अंतिम लक्ष्य से जारी माओवादी जनयुद्ध की एक और लाल सितारा बन गई। जैसा कि कॉमरेड माओ ने ही बताया, 'जनता की सेवा में जान देना हिमालयों से भी ऊंचा है'। कॉमरेड शांति भले ही हमारे बीच नहीं रहीं पर उनका अधूरा काम अब हमारे कंधों पर है। आइए, इस जांबाज़ वीरांगना ने लड़ाई जो मिसालें हमारे सामने पेश कीं उन्हें आत्मसात करें और उनके अरमानों को पूरा करने की शपथ लें।

सच्चा जन सेवक
कॉमरेड लेकाम सुदार (पवन)

कॉमरेड पवन 18 फरवरी को तड़िकेल के पास पुलिस बलों पर किए गए हमले में कम्पनी कमाण्डर कॉमरेड मधु के साथ आगे बढ़ते हुए दुश्मन की गोलियों का शिकार बनकर कमाण्डर के साथ ही शहीद हुए। कॉमरेड पवन (सुदार) का जन्म बीजापुर जिले के भैरमगढ़ विकासखण्ड के कोतरापाल गांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में हुआ था। पांच भाइयों में वह मंझले थे। बचपन में ही इन भाइयों पर से माता-पिता का साया उठ चुका था। चूंकि आदिवासी इलाकों में छोटी-छोटी बीमारियों से लोगों का मरना आम बात है। बचपन से ही मां-बाप के प्यार से वंचित कॉमरेड पवन गरीबी के कारण ज्यादा पढ़-लिख भी नहीं पाया था। मात्र दूसरी पढ़ने के बाद पढ़ाई छोड़नी पड़ी।

पवन का गांव कोतरापाल एक ऐसा गांव है जहां लम्बे अरसे से क्रांतिकारी जन संगठनों की अगुवाई में जन संघर्ष जारी थे। बचपन से ही कॉमरेड पवन उन संघर्षों से प्रभावित थे। किशोर उम्र में ही वह सीएनएम में शामिल हुए थे और अपनी नाच, गीत आदि कलाओं से सामंती और साम्राज्यवादी संस्कृति की खिलाफत करते हुए समाजवादी संस्कृति के फैलाव की कोशिश की। जल्द ही कॉमरेड पवन को एक अच्छा जन कलाकार माना जाने लगा था। एक तरफ एक अच्छा कलाकार होने के साथ-साथ वह दूसरी तरफ एक बढ़िया लड़ाकू भी थे। वर्ग दुश्मनों के प्रति उसके दिल में असीम नफरत रहती थी। इसलिए पार्टी ने उसे जन मिलिशिया में शामिल करने का फैसला लिया क्योंकि 2005 से जनयुद्ध की कार्रवाइयों में तेजी आई थी।

जून 2005 में फासीवादी सामंती नेता महेन्द्र कर्मा की अगुवाई में सलवा जुडूम के नाम से एक पाशविक व बर्बर जुल्मी अभियान शुरू किया गया। जनता की तरफ से इस अभियान के खिलाफ सबसे पहला जवाबी हमला 18 जून 2005 को कोतरापाल गांव में ही किया गया। गांव पर कहर बरपाने की मंशा से आ रहे गुण्डों, उनके सरदारों और पुलिस बलों को पहले ही देखकर कोतरापाल की जन मिलिशिया ने तीर-धनुष और भरमार बन्दूकों से लैस होकर नजदीक तक आने के बाद एक साथ ताबड़तोड़ पलटा हमला बोल दिया। जन मिलिशिया की पहलकदमी पर की गई इस अत्यंत शौर्यपूर्ण प्रतिरोधी कार्रवाई में कॉमरेड पवन भी शामिल थे। बल्कि उन्होंने उसमें सक्रिय भूमिका भी निभाई थी। उस हमले में तीन गुण्डे मौके पर ही मारे गए जबकि 12 लोग घायल हो गए। बाकी गुण्डे और उनके सरदार दुम दबाकर भाग गए थे। उत्पीड़ित जनता के हाथों मिली इस शर्मनाक पराजय के बाद दुश्मन ने कई गुना ज्यादा सशस्त्र बलों के साथ कोतरापाल पर दोबारा हमला कर गांव में आतंक का नंगा नाच किया। दो बुजुर्ग किसानों की हत्या की और कई घरों में आग लगा दी। इस हमले के बाद जनता को दिग्भ्रमित करने के लिए मीठी-मीठी बातों से जनता को सरेंडर करवाने की कोशिश की। सरेंडर करने से नहीं मारेंगे, केस भी नहीं लगाएंगे, सारी सुविधाएं देंगे, आदि बातें कहकर जनता को रिझाने की भरसक कोशिश की। दुश्मन के कातिलाना और बर्बरतापूर्ण हमलों और तबाही से सहमी हुई कोतरापाल की जनता दुश्मन के झांसे में आ गई। कई लोगों ने जन संगठनों और जन मिलिशिया में काम कर रहे अपने बेटों और बेटियों को पुलिस के सामने सरेंडर करवाया। ऐसे बेटों में कॉमरेड पवन भी एक थे।

सरेंडर करने के कुछ ही दिनों बाद कॉमरेड पवन ने दुश्मन के असली चेहरे को पहचान लिया। सरकारी 'राहत' शिविरों में हर सप्ताह दो या तीन लोगों की चुपचाप हत्या की जाती थी। महिलाओं और युवतियों के साथ सामूहिक बलात्कार व यौन शोषण आम बात थी। ऐसे कई जुल्मों और अत्याचारों को प्रत्यक्ष देखने के बाद कॉमरेड पवन ने कैसे भी हो उस यातना शिविर

से भागने का मन बनाया था। दुश्मन के उस बंदी शिविर की कमजोर कड़ियों का पता लगा लिया। मौका देखते ही दिसम्बर 2005 में वहां से भाग निकले और सीधा अपने घर आ गए।

लेकिन घर आने के बाद कॉमरेड पवन के बड़े पिताजी ने इसका विरोध किया। पवन को दोबारा पुलिस के पास ले जाकर सरेंडर करवाया। इससे वो काफी आहत हो गए। फिर भी वहां से भाग निकलने के उपाय सोचते रहे। एक महीने के अन्दर ही, जनवरी 2006 में फिर एक बार तथाकथित राहत शिविर से भाग निकले और सीधा पार्टी के संपर्क में आ गए। कॉमरेड पवन के दृढ़ संकल्प और क्रांति के प्रति समर्पण की भावना को देख पार्टी ने उन्हें फिर से जन मिलिशिया में रखकर काम करवाया।

सितम्बर 2006 में कॉमरेड पवन पेशेवर क्रांतिकारी के तौर पर पार्टी में भर्ती हुए और दो महिनों तक स्थानीय सांगठनिक दस्ते में काम किया। नवम्बर में उन्हें कम्पनी-2 में भेजने का प्रस्ताव हुआ तो उन्होंने इसका खुशी से स्वागत किया। इस प्रकार वह कम्पनी-2 का लाल योद्धा बन गए।

कम्पनी-2 में उन्होंने खूब मेहनत किया। सामूहिक कामों के लिए वह तत्परता के साथ तैयार रहते थे। फौजी कौशल और कम्युनिकेशन के बारे में सीखने में उन्होंने काफी दिलचस्पी दिखाई। ऐतिहासिक रानिबोदली हमले में कॉमरेड पवन ने रिजर्व ग्रुप के सदस्य के रूप में भाग लिया। उस हमले में बड़ी संख्या में दुश्मन को मार गिराने के दौरान हमारे कई कॉमरेड हताहत हुए थे। शहीदों और घायल कॉमरेडों को उठा लाने में उन्होंने काफी मेहनत की। दुश्मन की गोलीबारी के बीच ही यह काम करना पड़ा था फिर भी कॉमरेड पवन ने अदम्य साहस का परिचय दिया।

सितम्बर 2007 में उन्हें कम्पनी-2 के बहादुर कमाण्डर कॉमरेड मधु के गार्ड के रूप में चुन लिया गया। कम्पनी कमाण्डर के गार्ड के रूप में चुना जाना अपने आप दर्शाता है कि वो कॉमरेड कितने लड़ाकू और अनुशासित थे। साहस, जुझारूपन, मेहनती, काडरों और जनता के साथ विनम्र व्यवहार आदि अच्छे गुणों से उन्होंने कम्पनी के पार्टी नेतृत्व को प्रभावित किया था। 2007 में पामुलवाय के पास दो बार किए गए हमलों में उन्होंने कमाण्डर के गार्ड की भूमिका बखूबी से निभाई थी। कमाण्डर के साथ-साथ रहकर उनके आदेशों का सही ढंग से पालन किया। तड़िकेल ऐम्बुश में कमाण्डर कॉमरेड मधु जब ऐम्बुश पार्टी में तालमेल बिठाने के लिए एक पेड़ के पास जा रहे थे तब कॉमरेड पवन भी उनके साथ ही जा रहे थे। उसी समय छुपे हुए पुलिस बलों द्वारा की गई गोलीबारी में कॉमरेड मधु और कॉमरेड पवन दोनों ने ही वीरगति को प्राप्त किया। कॉमरेड पवन की मौत से पीएलजीए ने एक नौजवान और उभरते हुए लाल योद्धा को खो दिया। आइए, इस शहीद के अधूरे सपनों को पूरा करने का संकल्प लें।

'गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में बदल देंगे', 'पीएलजीए को पीएलए में बदल देंगे' और 'दण्डकारण्य को आधार इलाके में तब्दील करेंगे' - पार्टी की एकता कांग्रेस-नौवीं कांग्रेस द्वारा अपनाए गए इस केन्द्रीय कार्यभार को मूर्त रूप देने के सिलसिले में ही पीएलजीए के इन तमाम बलिदानी वीरों ने अपने अनमोल प्राणों को न्यौछावर किया। उनके दिलों में डर नाम की चीज नहीं थी। जनता की सेवा में जान देने के आदर्श को हमारे इन प्यारे साथियों ने आत्मसात कर दिखाया। कम्पनी के कई कॉमरेडों की शहादत, वह भी नेतृत्वकारी कॉमरेडों की शहादत होने के बाद भी कम्पनी-2 और पलटन-13 के हमारे बहादुर लड़ाकुओं ने पीछे हटने का नाम ही नहीं लिया। जब तक दुश्मन का बड़ी संख्या में उन्मूलन नहीं होता और उनके हथियार छीने नहीं जाते तब तक वे शहादतें देते हुए ही लड़ते रहे। आखिरकार छह दुश्मनों का सफाया कर उनके सारे हथियार छीनकर, हमारे तीन शहीद साथियों की लाशें लेकर, सभी शहीदों के हथियार लेकर पीछे हट गए। काफी संख्या में कॉमरेडों के शहीद होने और कुछ अन्य कॉमरेडों के घायल होने के कारण तीन शहीदों की लाशें नहीं ला सके। अंतिम संस्कार के बाद शहीद साथियों की यादगार में एक शोक सभा आयोजित की गई जिसमें शहीदों के महान आदर्शों को ऊंचा उठाया गया। ★

महामाया खदानों पर पीएलजीए का हमला

पौने दो टन बारूद पर कब्जा

पार्टी द्वारा अपनाए गए टीसीओसी (कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान) के तहत 27 मार्च 2008 को दुर्ग जिले के दल्ली-राजहरा के पास स्थित महामाया खदानों पर पीएलजीए ने धावा बोला और वहां बारूद गाड़ी को अपने कब्जे में ले लिया। इस गाड़ी में कुल करीब 18 क्विन्टल विस्फोटक पदार्थ था। फौजी तौर पर इस हमले का मकसद था संघर्षशील जनता और पीएलजीए की युद्ध की जरूरतों की पूर्ति करना। इस मौके पर भिलाई स्टील प्लान्ट (बीएसपी) के कुछ अधिकारियों और कुछ वन अधिकारियों को भी पीएलजीए ने कुछ देर के लिए अपने कब्जे में ले लिया जिसे अपहरण का नाम देकर मीडिया में खूब प्रचारित किया गया। गौरतलब है कि बीएसपी के लिए महामाया खदानों से लौह अयस्क की आपूर्ति होती है। हर दिन विस्फोट कर हजारों टन लोहा निकाल लिया जाता है। इन खदानों के चलते यहां के आसपास के दर्जनों गांवों में पिछले करीब 40 सालों से काफी विनाश हुआ है। 'रोजगार' का वादा खोखला साबित हुआ और बेरोजगारी यहां स्थाई समस्या के रूप में सामने आई है। लोग अपनी खेति-किसानी से वंचित हो गए है। अब इस विनाशलीला का विस्तार करने के लिए दल्ली राजहरा से रावघाट तक रेल लाइन बिछाने का काम चल रहा है। इस पूरे इलाके की आदिवासी जनता इस परियोजना से सहमी हुई है। राजनीतिक रूप से सरकार की विस्थापन-परस्त नीतियों के प्रति विरोध जताना इस हमले का राजनीतिक लक्ष्यों में एक था, जिसके बारे में पर्चों और पोस्टरों से खासा प्रचार किया गया। हमले के बाद बौखलाई छत्तीसगढ़ सरकार ने बारूद बरामद करने के लिए सैकड़ों सशस्त्र बलों को उतारकर काफी खोजबीन की पर जनता की सक्रिय मदद से पीएलजीए ने उन्हें निराश ही किया। ★

rfMdy 'kghnk dk yky lyke

बेमिसाल बहादुरी और बलिदानी जज़्बा का बढ़िया नमूना पेश कर अपने खून से सर्वहारा के झण्डे की लालिमा बढ़ाने वाले हमारे प्रियतम कॉमरेड्स मधु (केशराजू अंजन्ना), बदरू (कुरसम सीताराम), ताति आयतू, मड़काम नंदू, वेको शांति और पवन (लेकम सुदार) शोषित अवाम के दिलों में सदा जिंदा रहेंगे !

18 फरवरी 2008 को पश्चिम बस्तर (बीजापुर) जिला मिरतुल पुलिस थाना क्षेत्र के तड़िकेल गांव पर हमला करने आए हत्यारे सीआरपीएफ, जिला पुलिस और एसपीओ के संयुक्त दल पर पीएलजीए की कम्पनी-2, पलटन-13 और एलजीएस के लाल योद्धाओं ने जबर्दस्त ऐम्बुश किया। इस हमले में हमारे जन योद्धाओं ने सीआरपीएफ के छह जवानों को मौत के घाट उतारकर तीन अन्य को घायल कर दिया तथा उनसे 6 अत्याधुनिक हथियार जब्त कर लिए। जब्त हथियारों में तीन एके-47, एक इंसास, एक एसएलआर और एक दो इंची मोर्टार शामिल हैं। इस दौरान इस बहादुराना कार्रवाई का नेतृत्व करने वाले कम्पनी कमाण्डर कॉमरेड मधु (केशराजू अंजन्ना) और उप कमाण्डर कॉमरेड बदरू समेत छह कॉमरेडों ने वीरगति को प्राप्त किया। हमले को शुरू हुए 10 मिनट ही हुए थे, कॉमरेड मधु पीएलजीए की उस पलटन को जो उस समय दुश्मन से जमकर लड़ रही थी, नजदीक जाकर मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए अपने गॉर्ड कॉमरेड पवन के साथ मैदान में एक पेड़ की तरफ बढ़ रहे थे तभी दोनों कॉमरेड दुश्मन की गोलियों का शिकार बन गए। गांव में मकानों के पीछे ओट लिए हुए पुलिस वालों ने उन पर गोलियां बरसाईं। बाकी कॉमरेड दुश्मन के साथ लड़ने के दौरान और दुश्मन के हथियार छीनने के दौरान शहीद हुए। इस शौर्यपूर्ण कार्रवाई में कॉमरेड मधु (कम्पनी-2 का कमाण्डर), कॉमरेड बदरू (कम्पनी-2 का उप कमाण्डर), कॉमरेड आयतू (सेक्शन कमाण्डर), कॉमरेड नंदू (सेक्शन उप कमाण्डर), कॉमरेड शांति (पीएलजीए सदस्या) और कॉमरेड पवन (कमाण्डर का गॉर्ड) शहीद हुए। आइए, इन तमाम कॉमरेडों को विनम्रतापूर्वक श्रद्धांजली पेश करें और उनके अधूरे लक्ष्य को कामयाबी की मंजिल तक पहुंचाने की कसम खाएं।

कामरेड मधु

कामरेड बदरू

अदम्य साहस का दूसरा नाम कॉमरेड मधु

28 वर्षीय कॉमरेड मधु का जन्म उत्तर तेलंगाना में वरंगल जिले के घनपुर मण्डल के ग्राम मीदिकोंडा में हुआ था। गरीब धोबी परिवार में पैदा होने वाले कॉमरेड मधु को सामंती शोषण की समझ बचपन से ही थी। उनके माता-पिता अपने जातिगत पेशे पर ही परिवार को चलाया करते थे। लेकिन ज्यों-ज्यों बच्चे बड़े होने लगे थे सिर्फ इसी पेशे से पेट नहीं भरेगा, यह सोचकर उन्होंने अपने दो बेटों को गांव के जमींदारों के पास नौकरी पर रखा था। इस तरह कॉमरेड मधु ने बचपन से ही मुश्किलों का बोझ उठाना सीख लिया था। वह अपने मां-बाप के साथ घर-घर जाकर मैले-कुचैले कपड़े इकट्ठे करके तालाब में धोकर फिर शाम को उन्हें घर-घर बांटते थे और खाना मांग लाकर पेट भर लिया करते थे। मीदिकोंडा गांव सामंती शोषण का गढ़ था। जमींदारों के खेतों में दिन भर हाड़ तोड़ मेहनत करने के बावजूद पेट भर खाना क्यों नहीं मिल पा रहा है? इसका कारण क्या है? ऐसे सवालों पर कॉमरेड मधु ने किशोर उम्र से ही विचार करना शुरू किया। गरीबी ने उसे पढ़ाई-लिखाई के अवसरों से दूर ही धकेल रखा। 1990 में वरंगल शहर में आयोजित किसान-मजदूर संघ के

(शेष पृष्ठ 46 में...)